अवर्णनीय प्रेम बाइबल अध्ययन

प्रत्यालिपिधिकार (c) 2017 रेवलेशनस
विश्वभर में सर्वाधिकार सुरक्षित
वितरण की अनुमति शर्तानुसार

हमारी प्रतीति है कि यदि आप इसे दूसरों के साथ नहीं बांटते या इसकी प्रतिलिपि नहीं बनाते तो आप परमेश्वर के प्रति जवाबदेही होंगे, इसलिए हम बिना किसी शुल्क और निम्नलिखित परिस्थितयों के आधार पर इसे आगे बांटने के लिए प्रोत्साहित करते हैं और अनुमति देते हैं। आप इस सामग्री को पीडीएफ प्रारूप में इसे रख सकते हैं या इसकी फोटोकॉपी करके या छापकर बांट सकते हैं। इसे

किसी भी प्रकार से बेचा या बदलाव नहीं किया जा सकता और यह प्रतिलिप्याधिकार प्रत्येक छपाई या फोटोकॉपी की गई सामग्री में ऐसा ही रहना चाहिये।

www.RevelationPublications.com
PublisherForGod@gmail.com

प्रश्न और संकलन मर्लिन बीरमान के द्वारा
टीका अनुच्छेदों का संकलन ई.जी. वाइट पबलिकेशन के
सार्वजनिक उपक्रमों से द्वारा लिया गया
कवर इलुसट्रेशन (c) बिग्टोकफोटो.कोम
इनसाइड इलुसट्रेशन मर्लिन बीरमान
ISBN- 978-1-934924-14-3

प्रश्नों के उत्तर बाईबल के उद्धरण www.wordproject.org से
लिए गए

पाठ 1

प्रेम क्या है

(1) केवल सच्चे और भरोसेमंद प्रेम की परिभाषा क्या है और जिसका प्रकटीकरण उसके पुत्र के वरदान के द्वारा हुआ?

और जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, उस को हम जान गए, और हमें उस की प्रतीति है; परमेश्वर प्रेम हैजो प्रेम में बना : रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है; और परमेश्वर उस में बना रहता है। (1 यूहन्ना 4:16)

बाइबल में परमेश्वर का व्याख्यान कैसे किया गया है? "परमेश्वर प्रेम है"। इस संसार को यीशु मसीह को देने के द्वारा, परमेश्वर ने मानवजाति के प्रति अपना प्रेम प्रगट किया। "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो वरन अनन्त जीवन

प्राप्त करे"। जी हाँ, अन्नत जीवन"। यह प्रेम जो व्यवस्था की परिपूर्णता हैं। केवल वही, जिसका हृदय पतन से प्रभावित मानव जाति के लिए दया से भरा हुआ है, जो एक उद्देश्य से कार्य

करता है, और मसीह के समान कार्यों के द्वारा अपने प्रेम का प्रकटीकरण करता है, उस अदृश्य के प्रति धीरज धरेगा। जो अपने साथियों से उद्देश्य से प्रेम करता है, परमेश्वर को जान सकता है। यदि वह उन से प्रेम नहीं करता जिनके लिए परमेश्वर ने इतना कुछ किया, वह परमेश्वर को नहीं जानता। इसी कारण हमारी कलीसियाओं में इतनी कम मार्मिकता है। धर्मविज्ञान का कोई मूल्य नहीं यदि वह यीशु के प्रेम से भरपूर न हो।

(2) जब हम परमेश्वर और उसके सिद्ध प्रेम के विषय में जानते हैं, हमारे मनों से उसके विषय में क्या बाहर आता है?

प्रेम में भय नहीं होता, वरन सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है, क्योंकि भय से कष्ट होता है, और जो भय करता है, वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ। (1 यूहन्ना 4:18)

परमेश्वर प्रेम है यह एक प्रकाशन है, मनुष्य इस सत्य को अपने लिए कभी भी नहीं खोज सकता था। यह प्रकाशन मनुष्य की भलाई के लिए बहुत विशेष महत्वपूर्ण है। कि परमेश्वर आत्मा है (यूहन्ना 4:24) यह महत्वपूर्ण है, परन्तु यह उस महान मनुष्य के साथ एक खुशहाल सबंध का आनन्द मनाने की सम्भावना के विषय में कुछ भी नहीं बताता। कि "परमेश्वर ज्योति है" (1 यूहन्ना 1:5) यह बौद्धिक रूप से संतुष्टि प्रदान करता है, परन्तु सम्पूर्ण शुद्ध, सब कुछ देखने वाले परमेश्वर का विचार शान्ति की अपेक्षा डर पैदा कर सकता है, इन सब के प्रकाश में जो हम हैं, परमेश्वर हम में कौन-सी भलाई पा सकता है? परन्तु जब हम इस बात को सीखते हैं कि परमेश्वर प्रेम है, भय भरोसे में बदल जाता है, और हम सम्पूर्ण भरोसे के साथ स्वंय को स्वर्गीय पिता के हाथों में दे देते हैं, यह जानते हुए कि वह हमारी चिंता करता है (1 पतरस 5:7)।

(3) कब तक परमेश्वर का निरंतर प्रेम और उसकी दया हम पर बनी रहेगी?

यहोवा ने मुझे दूर से दर्शन देकर कहा है। मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूँ; इस कारण मैं ने तुझ पर अपनी करुणा बनाए रखी है। (यिर्मियाह 31:3)

परमेश्वर प्रेम है इसका तात्पर्य यह भी है कि कोई ऐसा समय नहीं जब वह प्रेम नहीं करेगा या प्रेम नहीं होगा। उसका स्वभाव कभी नहीं बदलता; अतीत में प्रेम उसका प्रमुख गुण था और भविष्य में भी निरंतर होगा।हम स्वंय के लिए इसका प्रमाण दे सकते हैं, जैसे कि चार्ल्स वेस्ली ने कहा, जब हम परमेश्वर के साथ उसके सबंध के विषय में देखते हैं: "सम्पूर्ण अनन्तता यह प्रमाण देती हैं तेरा स्वभाव और तेरा नाम प्रेम है"।

(4) प्रेम में, परमेश्वर ने हमें बुद्धिमता और स्वंय-ईच्छा के चुनाव के साथ अपने स्वरूप में रचा। क्योंकी इसी कारण वह क्या चाहता है कि हम उसके साथ मिलकर करें?

यहोवा कहता है, आओ, हम आपस में वादविवाद करें : तुम्हारे पाप चाहे लाल रंग के हों, तौभी वे हिम की नाईं उजले हो जाएंगे; और चाहे अर्गवानी रंग के हों, तौभी वे ऊन के समान श्वेत हो जाएंगे।(यशायाह 1:18)

परमेश्वर प्रेम है यह वाक्यांश उद्धार की योजना को समझने में असीमित मूल्य रखता है। केवल प्रेम उन मनुष्योंको स्वंय-ईच्छा देगा और उस पीड़ा को लाने का जोखिम उठाएगा जो पाप सम्पूर्ण ईश्वरत्व, और स्वर्गदूतों और पतन से प्रभावित मनुष्यों पर लेकर आया। केवल प्रेम उनके प्रसन्नतापूवर्क स्वंय-ईच्छा से की गई सेवा में रोचक होगा जो अपने अनुसार चलना चाहते थे। और जब पाप आया, केवल प्रेम में वह धीरज और ईच्छा होगी एक योजना को बनाने के लिए कि जो सम्पूर्ण संसार को भले और बुरे के बीच के विवाद के मूलभूत तथ्यों को समझाने के योग्य हो, और उसके आगे उठने वाले लोभी और घृणा के विरोध के प्रति सुनिश्चित करे।

पाप के विरुद्ध मलयुद्ध में, केवल, परमेश्वर जो सत्य में प्रेम है, केवल सत्य और प्रेम का प्रयोग कर सकता है, जबकि शैतान चतुर झूठी बातों और क्रूर ताकतों का प्रयोग करता है। केवल प्रेम ही उस योजना की प्रेरणा था जो पुत्र को इस मानव जाति की दोष और पाप की सामर्थ के बचाने की अनुमति देगा उसके शारीरिक जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा, और फिर उस नयी और पापरहित पीड़ी का स्वामी बनना (पद 9 को देखें)। परमेश्वर अपने स्वभाव के कारण अपनी अदभुत योजना को पूरा करने के लिए कार्यबद्ध है (यूहन्ना 3:16)।

(5) क्योंकी परमेश्वर प्रेम है, हमारे मसीह अनुभव का सबसे महान और मूलभूत तत्व क्या है?

पर अब विश्वास, आशा, प्रेम थे तीनों स्थाई है, पर इन में सब से बड़ा प्रेम है। (1 कुरन्थियों 13:13)

जब हम चरित्र के सभी गुणों के विषय में सोचते हैं, केवल प्रेम है ही वह प्रेरणा है जो परमेश्वर के स्वभाव को प्रकट करता है, यह कहना आसान होगा कि क्यों प्रेरित पौलुस कहता है कि पवित्र आत्मा से सभी वरदानों में, यह सबसे बड़ा है (देखें 1 यूहन्ना 4:7, 8, 16)। जीवन जीने के मायने से, वरदानों की गिनती में अध्याय 12 (देखें 1 कुरन्थियों 12:31) में प्रेम अन्य वरदानों के प्राप्त करने और अभ्यास करने की अपेक्षा, प्रभावशाली , बहुत विजयी, बहुत संतुष्ट है। परमेश्वर से प्रेम और मनुष्यों से प्रेम करना परमेश्वर के साथ शांति का सर्वोच्च प्रकटीकरण है (देखें मति 22:37-40; 8 टी 139)। प्रेम से जिया गया जीवन एक मसीही की ईमानदारी की परख का प्रमाण है।

मसीही बनने के अर्थ है मसीह के समान बनना, जो "भले कार्यों में व्यस्त था" (प्रेरितों 10:38)। मसीही, वे हैं जो, यीशु की आत्मा से भरकर, भले कार्यों को करते हैं उन सभी के लिए जिनको उनकी सहायता की आवश्यकता है। वे ऐसा बिना किसी स्वार्थ के करते हैं, परन्तु क्योंकी उनके हृदयों में परमेश्वर का प्रेम इस को छोड़ कुछ और करना असंभव बना देता है।

प्रेम सर्वोच्च मार्ग है, क्योंकी इसकी व्यवहारिक प्रकटीकरण की परख सभी मनुष्यों की मंजिल का निर्णय करना है। जिनका धर्म केवल बाहरी नियमों और कानूनों की पालना है वे पायेंगें कि यह परमेश्वर की दृष्टि में ग्रहणयोग्य नहीं है।

स्वंय को इन्कारकरने वाला प्रेम, विश्वासियों के बीच एकता पैदा करने वाला, संसार के लोगों को यह पहचानने में सहायता करेगा कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को मानवजाति के उद्धार के लिए इस संसार में भेजा। उस सत्य के सुसमाचार की गवाही देना परमेश्वर का चुना हुआ माध्यम है (देखें 17:21, 23)। ऐसा प्रेम, जिसमे स्वंय को ऊँचा उठाना, धर्मी दिखाना, या स्वंय की अभिलाषा को पूरा करना नहीं है, वरन जरुरतमंदों की निस्वार्थ सेवा के लिए समर्पित है, ऐसा विवाद है जिसे बिना बदले हुए लोग नहीं समझ सकते। वे इसमें जीवन के न समझे जाने वाले दर्शनशास्त्रों को देखते हैं।

(6) यह पद प्रेम की महत्वपूर्णता और प्राथमिकता का कैसे विवरण देता है?

और इन सब के ऊपर प्रेम को जो सिद्धता का कटिबन्ध है बान्ध लो। (कुलुस्सियों 3:14)

परमेश्वर से और मनुष्य से प्रेम मनुष्य का परम कर्तव्य है। भाईचारे दया के बिना हम परमेश्वर और मनुष्यों के साथ परमेश्वर का अनुग्रह नहीं दिखा सकते।

मसीह हमे ऐसा प्रेम देता है जो ज्ञान से बाहर है। यह प्रेम ऐसा नहीं है जो हमारे जीवन से बाहर है, परन्तु यह सम्पूर्ण जीवन पर अधिकार लेता है। जिस स्वर्ग की और मसीही दौड़ रहा है वह सिर्फ उन्हें ही मिलेगा जिनके पास परमेश्वर का शिरोमणि अनुग्रह है। यही नया स्नेह है जो प्राण में व्याप्त होता है। पुराना पीछे रह गया। प्रेम सबसे नियन्त्रण करने वाली महान सामर्थ है। जब प्रेम अगुवाई करता है, मन की सारी ईकाइयाँ सूचित होती हैं। परमेश्वर से प्रेम और मनुष्य से प्रेम स्वर्ग का सही शीर्षक है।

(7) यद्यपि भविष्यवाणियां, अन्य भाषा, और ज्ञान मिट जाएंगें, सो क्या हम किसकी गिनती कर सकते हैं जो कभी नहीं मिटेगी?

प्रेम कभी टलता नहीं; भविष्यद्वाणियां हों, तो समाप्त हो जाएंगी, भाषाएं हो तो जाती रहेंगी; ज्ञान हो, तो मिट जाएगा। (1 कुरन्थियो 13:8)

सच्चा प्रेम पत्ते और फूल के समान नहीं झड़ता (देखें याकूब 1;11; 1 पतरस 1:24)। जब एक फूल केवल धूप के समय गंध और सुन्दरता दिखाये, तो उसका उद्देश्य पूरा हो चुका, और ठंडी हवाएं उसे सुखा देती हैं और वह वह पौधे से गिर जाता है। परन्तु प्रेम के साथ ऐसा नहीं है। चिंता और तनाव के दिनों में, और साथ ही साथ जब सब ठीक हो, प्रेम सर्वदा एक-सा रहता है, उसके भरोसे और विश्वास की चारो और गंध फैलाते हुए। ऐसा होने चाहिये, क्योंकी प्रेम व्यवस्था की नीव है, और परमेश्वर की व्यवस्था अन्नत है (देखें भजनसहिता 119:160; मत्ती 5:17, 18; लूका 16:17)।

प्रत्येक विश्वासी पवित्र आत्मा के इस फल को काटने के लिए जुड़ जाता है, और प्रत्येक विश्वासी इस बात को निश्चित कर सकता है कि जीवन में कोई ऐसा अनुभव नहीं जहाँ प्रेम प्रयोजन नहीं बनाता; जीवन में सभी समस्याओं के समाधान के लिए प्रेम पर निर्भर हुआ जा सकता है।

(8) क्योंकी परमेश्वर का चरित्र प्रेम है, उसकी सरकार की कौन-सी चार विशेषताएं हैं?

तेरे सिंहासन का मूल, धर्म और न्याय है; करूणा और सच्चाई तेरे आगे आगे चलती है। (भजनसहिता 89:14

परमेश्वर का प्रेम उसके न्याय में प्रकट हुआ उसकी दया से कम नहीं। न्याय उसके सिंहासन की नीव है, और उसके प्रेम का फल। शैतान का उद्देश्य दया को सच्चाई और न्याय से अलग करना था। उसने यह साबित करने का प्रयत्न किया कि परमेश्वर की व्यवस्था की धार्मिकता उसकी शान्ति की शत्रु है। परन्तु यीशु ने हमें दिखाया कि परमेश्वर की योजना में वे आपस में जुड़े हुए हैं; एक का दूसरे के बिना अस्तित्व नहीं है। "दया और सत्य आपस में मिलते हैं; धार्मिकता और शांति आपस में चुम्बन करते हैं" (भजनसहिता 85:10)।
उसके जीवन और मृत्यु के द्वारा, यीशु ने प्रमाणित किया कि परमेश्वर के न्याय ने उसकी दया को नाश नहीं किया, वरन पाप को क्षमा किया जा सकता है, और व्यवस्था धर्मी है, और सिद्ध रूप से उसका आज्ञापालन किया जा सकता है। शैतान के दावों को हराया गया। मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर की व्यवस्था एक दूसरे से अलग नहीं हैं। मसीह में दया और सच्चाई एक- दूसरे से मिलते हैं।

(9) क्योंकि परमेश्वर प्रेम है और उसकी सरकार प्रेम पर आधारित है, कैसे यह अनुच्छेद प्रेम और उसकी व्यवस्था के बराबर हो सकता है?

प्रेम पड़ोसी की कुछ बुराई नहीं करता, इसलिये प्रेम रखना व्यवस्था को पूरा करना है॥ (रोमियो 13:10)

परमेश्वर की व्यवस्था, उसके स्वभाव से ही, अपरिवर्तनीय है। यह ईच्छा और चरित्र का प्रकाशन और उसके लेखक का चरित्र। परमेश्वर प्रेम है, और उसकी व्यवस्था प्रेम है। उसके दो महान सिद्धांत हैं परमेश्वर के प्रति प्रेम और मनुष्य के प्रति प्रेम। " "प्रेम व्यवस्था की परिपूर्णता है"। (रोमियो 13:10)। परमेश्वर का चरित्र उसकी धार्मिकता और सत्य है; यही उसकी व्यवस्था का स्वभाव है। भजनकार कहता है: "तेरी व्यवस्था सत्य है:" तेरी आज्ञाएँ धर्मी है"। (भजनसहिता 119:142, 172। और प्रेरित पौलुस कहता है: "व्यवस्था पवित्र है, और आज्ञाएँ पवित्र, और खरी, और भली हैं"। रोमियों 7:12। ऐसी व्यवस्था, उसकी मन और परमेश्वर की ईच्छा का प्रकटीकरण है, वह उतनी ही स्थायी होनी चाहियें जितना की उनका लेखक। (ज सी 467)

(10) यह पद मसीह के हम पर क्रूस पर दिखाए गए प्रेम का कैसे वर्णन करता है?

इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे। (यूहन्ना 15:13)

यूनानी में, प्रेम। अगापेओ, जिसका अग्रेजी शब्द, सही ढंग से "प्रेम" शब्द को प्रदर्शित नहीं करता। हमारा शब्द "प्रेम" बहुत सारी बातों के अर्थ को बताता है, और भिन्न विचारों को, जो अगापे का वास्तविक अर्थ इस अनुवाद के द्वारा स्पष्ट नहीं होता। यूनानियों के पास इस शब्द का अर्थ बताने के लिए तीन अलग विचार थे जो हम अग्रेजी के एक शब्द "प्रेम" के द्वारा इसका अर्थ बताना चाहते हैं "प्रेम"-अगापन, फिलेंन, और एरान।

सामान्य रूप से फिले स्नेह, भावुक प्रेम का वर्णन करता है जो भावनाओं और भावुकता पर आधारित है। जहाँ तक यह भावनाओं पर आधारित है- इसका बदलना भी स्वाभाविक है जैसे भावनायें बदलती हैं। एरान जोश पूर्ण और कामुक "प्रेम" की ओर संकेत है जो शारीरिक सबंध से जुड़ा है। एरान का प्रयोग नये नियम में नहीं किया गया। सम्मोह के कुछ रूपों को "प्रेम" की इस श्रेणी में रखा गया है। एरान का प्रयोग नए नियम में नहीं किया गया। नये नियम में अगापन, की जब फिलेंन से तुलना की जाती है, तब इस प्रेम को एक आदर और वैभव के दृष्टिकोण से देखा जाता है। यह भावना में ऐसे सिद्धांतों को जोड़ देता है कि सिद्धांत भावनाओं पर नियंत्रण करने लगते हैं। इसमें मन और बुद्धिमता की ताकतें बड़ी भुमिका अदा करती हैं। उसके विपरीत फिले केवल हमे उन्हें ही "प्रेम" करने को प्रेरित करता है जिनसे हम "प्रेम" करते हैं। अगापन निस्वार्थ है, जबकि एरान बिलकुल स्वार्थपूर्ण है, और कई बार फिले भी स्वार्थ से जुड़ा हो सकता है।

संज्ञा का यह रूप, अगापे, केवल बाइबल तक ही सीमित है। नये नियम का अगापे प्रेम का ऊच्च और शुद्ध रूप है, ऐसा प्रेम जिसके समान कोई दूसरा प्रेम नहीं- ऐसा प्रेम जो मनुष्य को स्वंय को दूसरों के लिए न्योच्छावर करने के लिए प्रेरित करता है (1 यूहन्ना 15:13)। इसमें परमेश्वर के लिए भययोग्य आदर और दूसरों के लिए आदर जुड़ा है। यह सोच और क्रिया का एक दिव्य सिद्धांत है जो चरित्र को निखरता है, सोंचों को जांचता है, ईच्छाओं को नियंत्रित करता है, और स्नेहों उदात्त बनाता है।

(11) जब सुसमाचार के द्वारा परमेश्वर का छुड़ानेवाला प्रेम और यीशु का बलिदानपूर्ण प्रेम प्रकट होता है, तो किसकी रूचि को उकसाया जाता है?

उन पर यह प्रगट किया गया, कि वे अपनी नहीं वरन तुम्हारी सेवा के लिये ये बातें कहा करते थे, जिन का समाचार अब तुम्हें उन के द्वारा मिला जिन्हों ने पवित्र आत्मा के द्वारा जो स्वर्ग से भेजा गयातुम्हें सुसमाचार सुनाया :, और इन बातों को स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की लालसा रखते हैं॥ (1 पतरस 1:12)

हमारे साथ रहने अर्थात देहधारी होने के द्वारा, यीशु परमेश्वर को मनुष्यों और स्वर्गदूतों पर प्रकट करना चाहता था। वही परमेश्वर का वचन था,--परमेश्वर का विचार श्रव्य बना। अपने चेलों के लिए अपनी प्रार्थना में वह कहता है, "मैंने उन पर तेरे नाम को प्रगट किया,"—दयालु और अनुग्रहकारी, धीरजवन्त, और भलाई और सत्य से परिपूर्ण,"—ताकि जिस प्रेम से तूने मुझ से प्रेम किया मैं उनमें और वे मुझ में"।

परन्तु यह प्रकाशन केवल इस पृथ्वी पर पैदा होने वाले बच्चों के लिए नहीं था। हमारा छोटा सा संसार इस विश्व के लिए पाठ पुस्तिका है। परमेश्वर के अनुग्रह का अदभुत उद्देश्य, छुड़ानेवाले प्रेम का रहस्य, वह संदेश है जिसमें "स्वर्गदूत देखना चाहते हैं," और यह सम्पूर्ण काल में उनका अध्ययन होगा। दोनों छुड़ाए गए और पाप में गिरे मसीह के क्रूस को अपना विज्ञान और गीत पायेंगें। ऐसा दिखेगा कि यीशु के चेहरे की चमक की महिमा है वही निस्वार्थ प्रेम की महिमा है। कलवरी के प्रकाश में ऐसा दिखेगा कि जो त्यागपूर्ण प्रेम की व्यवस्था है वही स्वर्ग और पृथ्वी के लिए जीवन की व्यवस्था है; जो प्रेम "जिसमे मैं और स्वार्थ नही" वह परमेश्वर के हृदय का स्त्रोत है; और उसकी नम्रता में जब उसका उसका चरित्र दिखता है जो उस प्रकाश में है जहाँ कोई मनुष्य नहीं पहुंच सकता।

(12) जब एक बार हम मसीह से पीते हैं, "जो जीवन जल है" और उसके प्रेम को अनुभव करते हैं तो कौन-सी दो बातें होंगीं?

परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगावरन जो जल मैं उसे : दूंगा, वह उस में एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के

लिये उमड़ता रहेगा। (यूहन्ना 4:14)

"दो, तो तुम्हे भी दिया जाएगा" (लूका 6:38); क्योंकी परमेश्वर का वचन "बगीचों का सोता है, जीवन जल का सोता, और लाबानोंन की नदियाँ" (श्रेष्ठगीत 4:15)। जिस हृदय ने एक बार मसीह का प्रेम चखा है, निरंतर गहरे अनुभव के लिए तरसता रहता है, और जैसे आप बाटते हैं आप और बहुतायत और बड़े माप में पायेंगें। मन के लिए परमेश्वर का हर एक प्रकाशन उसे जानने और प्रेम करने की क्षमता को बढ़ाता है। हृदय की निरंतर पुकार "परमेश्वर आपसे और चाहिये," और हमेशा आत्मा का उत्तर, "और ज्यादा"। रोमियों 5:9-10। क्योंकी हमारा परमेश्वर "हमारे मांगने और सोचने से बढ़कर करने में प्रसन्न होता है"।(इफिसियों 3:20)

यीशु, जिसने अपने आपको मानव जाति के उद्धार के लिए शून्य कर दिया, उसे पवित्र आत्मा बिना किसी माप के दिया गया था। यह मसीह के हर एक अनुसरण करने वाले को दिया जाएगा जो उसमे वास करने के लिए अपने आप को सर्मपित करेगा।हमारे परमेश्वर ने स्वंय यह आज्ञा दी की "पवित्र आत्मा से भर जाओ" (इफिसियों 5:18) और यह आज्ञा उसकी परिपूर्णता का वायदा भी है। और परमेश्वर की यह ईच्छा थी कि परमेश्वर की सारी परिपूर्णता "सदेह उसमें वास करे," "और तुम उसमे परिपूर्ण हो"।

(13) मसीह ने पिता को हमारे भीतर क्या डालने को कहा की हम पिता के प्रेम के सभी आयाम का अनुभव कर सकें और चरित्र में बदलाव जो वह लाता है?

और मैं ने तेरा नाम उन को बताया और बताता रहूंगा कि जो प्रेम तुझ को मुझ से था, वह उन में रहे और मैं उन में रहूं॥ (यूहन्ना 17:26)

वाह! कैसा आश्वासन है, कि परमेश्वर का प्रेम उन सभी में बना रहेगा जो उस पर विश्वास करेंगें! वाह! क्या उद्धार दिया है; वह उन सभी को बचाने के लिए तैयार है जो परमेश्वर के पास उसके द्वारा आते हैं। हम विस्मित होकर चिल्लाते हैं, ये कैसे हो सकता है? परन्तु यीशु इसमें कम किसी और चीज से संतुष्ट नहीं होगा।

जो यहाँ उसकी पीड़ा में सहभागी हैं, उसके लिए अनादर सहते हैं, परमेश्वर का प्रेम उन पर ऐसे उंडेला जाएगा, जैसे पुत्र पर उंडेला गया था। जो जानता है, उसने कहा, "परमेश्वर स्वंय तुमसे प्रेम करता है" जिसको उस प्रेम की लंबाई, ऊंचाई, चौड़ाई, गहराई का ज्ञान है उसने हम पर यह आश्चर्यचकित सत्य का एलान किया।

परमेश्वर के पुत्र में विश्वास करने के द्वारा यह प्रेम हमारा है, इसलिए मसीह के साथ जुड़ना हमारे लिए सब कुछ है। हमें उसके साथ एक होना है जैसे वह पिता के साथ एक है, और हम असीमित परमेश्वर के प्रिय हैं मसीह की देह के अंग, उस जीवित दाखलता की डालियाँ। हमें उसके साथ जुड़कर रहना है, और दाखलता से अपना पोषण पाना है। मसीह हमारा महिमामय सिर है, और आलौकिक प्रेम उसके हृदय से निकलता है, मसीह में रहता है, और उन सब में उसका प्रवाह होता है जो उससे जुड़े हुए हैं। यह आलौकिक प्रेम जो हमारे मनों में प्रवेश करता हैं धन्यवाद के साथ, हमें उसकी आत्मिक दुर्बलता, घमंड, स्वार्थ से स्वतंत्र करता है, और उन सभी बातों से को मसीह चरित्र को खराब कर सकती हैं।

(14) कैसे मसीह का प्रेम पहले हमारे हृदयों में आता और फिर दूसरों के साथ बाटा जाता है?

और आशा से लज्ज़ा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है। (रोमियो 5:5)

हमारा प्राण शुद्ध प्रेम की नदी से भर जाता है जो मसीह के हृदय से बहता है, ऐसा सोता जो कभी चूकता नहीं। वाह! कैसे हमारा हृदय सजीव हो जाता है, और इसकी मनसाए सलंग्न है, इसका स्नेह गहरा, इस वार्तालाप के द्वारा। पवित्र आत्मा की शिक्षा और अनुशासन के आधीन, परमेश्वर की संतान एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, सत्य, सच्चाई से, प्रभावशाली तरीके से-"बिना पक्षपात और बिना पाखंड के"। और यह इसलिए क्योंकी हृदय मसीह के प्रेम में लिप्त है। एक-दूसरे के लिए हमारा स्नेह परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते से निकलता है।

इस संसार को परमेश्वर का प्रेम उसके इकलौते पुत्र के उपहार के रूप में, पर्याप्त है सभी मनुष्योंको प्रेरित करने के लिए, हर एक हृदय को पिघलाने के लिए, और गैर-प्रेमी हृदयों को नम्र बनाने और पिघलाने के लिए; और फिर भी स्वर्गीय बुद्धिमता उनमें दिखती है जिनके लिए मसीह क्रूस पर मरा, उसके प्रेम के प्रति असंवेदनशीलता, मन की कठोरता, और धन्यवादिता का प्रतिउत्तर नहीं और सारीभली चीजों को देने वाले के प्रति कोई स्नेह नहीं? क्या कम महत्वपूर्णता रखने वाली बातें सम्पूर्ण प्राण की सामर्थ को सोख सकती है, और परमेश्वर का प्रेम वापिस नहीं लौटता? क्या धार्मिकता का सूर्य व्यर्थ में उदय होगा? जो परमेश्वर ने किया उसके

प्रकाश में , क्या उसके दावे आपके ऊपर कर होंगें? क्या हमारे पास वो ह्रदय हैं जो स्पर्श किये जायेंगें, जो अलौकिक प्रेम से भरे जायेंगें? क्या हम चुने हुए पात्र बनने के लिए तैयार हैं? क्या परमेश्वर की दृष्टि हम पर नहीं, और उसने हमें अपने प्रकाश के दूत को भेजने का बुलावा नहीं दिया?

हमें विश्वास में बढ़ने की आवश्यकता है। हमें प्रतीक्षा करनी है, हमें प्रार्थना करनी है, हमें कार्य करना है, हमें मांगना है कि उसका पवित्र आत्मा बहुतायत से हम पर उंडेला जाए, कि हम इस संसार में ज्योति बन पाएं।

अब मैं समझता हूँ कि सच्चे प्रेम की परिभाषा और स्त्रोत परमेश्वर है और उसका प्रेम अनन्त है।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं आश्चर्यचकित और धन्यवादी हूँ कि परमेश्वर मुझसे बहुत प्रेम करता है उसने मुझे चुनाव करने की स्वतंत्रता दी है और मेरा चुनाव उसे आपने पुरे ह्रदय से वापस प्रेम करना है!

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं इस बात को समझता हूँ कि एक मसीही बनना असंभव है और परमेश्वर को उसके प्रेम से न भरने देना और मेरे द्वारा दूसरों में बहना ताकि वह मुझ में वास करे और मेरे द्वारा दूसरों को स्पर्श करे।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं इस सच्चाई को ग्रहण करता हूँ और उस आशीष को कि परमेश्वर और उसकी व्यवस्था प्रेम है।। मै उससे अपने सम्पूर्ण ह्रदय से प्रेम करने का चुनाव करूंगा और दूसरों से अपने से बढ़कर प्रेम करूँगा पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा जो मुझमे कार्यरत है।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

अब मैं इस बात को समझता हूँ परमेश्वर की सरकार धार्मिकता, न्याय, दया और सत्य पर आधारित है। सभी स्वर्गदूतों के साथ, मैं उस दिन की और ताकता हूँ जब इस दुनिया की सभी भ्रष्ट सरकारें नाश हो जाएँगी और परमेश्वर की सरकार पुरे संसार में राज्य करगी।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं धन्यवादित हूँ कि मसीह ने पिता को अपना प्रेम हमारे भीतर डालने के लिए कहा। मेरी दिली प्रार्थना है कि मैं अपने हृदय में परमेश्वर के प्रेम के आयामों को प्राप्त करूँ और चरित्र में बदलाव जो उसके के द्वारा आता है।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

पाठ 2

परमेश्वर का प्रेम उसके प्रयोजनों के द्वारा प्रकट होना

(1) जिससे सारी आशीषें आती हैं जिनका हम अनुभव करते हैं, अदभुत उपहार यीशु मसीह को मिलाकर?

क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिस में न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, ओर न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है।(याकूब 1:17)

रचनात्मक सामर्थ का प्रत्येक प्रकटीकरण असीमित प्रेम की अभिव्यक्ति है। परमेश्वर के प्रताप में सभी सृजे हुओं के लिए आशीष की परिपूर्णता शामिल है।

मसीह यीशु के उपहार के द्वारा हमें सभी आशीषें प्राप्त होती हैं। उस उपहार के द्वारा यहोवा की प्रतिदिन अचूक बहने वाली भलाईयां हम पर आती हैं। हर एक फूल उपहार के रूप में, उसकी सुगंध के द्वारा, हमारे आनदं के लिए हमे दिया जाता है। चाँद और सूर्य उसके द्वारा बनाये गए। कोई भी ऐसा तारा नहीं जो आकाश की सुन्दरता का बढ़ाता हो, उसके द्वारा न बनाया गया हो। वर्षा की हर एक बूंद जो पड़ती है, प्रत्येक रोशनी की किरण जो इस अकृतज्ञ संसार पर पड़ती है, मसीह में परमेश्वर के प्रेम की गवाही देती है। हमें हर चीज मिलती है उस अकथनीय वरदान के द्वारा, परमेश्वर का इकलौता पुत्र। उसे क्रूस पर चढ़ाया गया ताकि सारी बहुतायत परमेश्वर की कारीगरी में बह सके।

(2) अपने महान प्रेम के कारण परमेश्वर हम पर बहुतायत से क्या प्रदान करता है?

परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है; अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिस से उस ने हम से प्रेम किया। (इफिसियों 2:4)

परमेश्वर न केवल दयालु है; वह दया में धनी है उन सभी के लिए जो उसके नाम को पुकारते हैं, इसलिए नहीं के वे योग्य हैं, परन्तु क्योंकी परमेश्वर अपनी प्रसन्नता से अपनी दया प्रदान करता है (तीतुस 3:5; 1 पतरस 1:3)।

परमेश्वर का प्रेम उसकी दया से अधिक है; यह लाभ पहुचाने वाला और अपरिवर्तनीय है। परमेश्वर ने हमसे प्रेम किया “जब हम पाप ही थे” (देखें रोमियो 5:8), और उसके प्रेम का अंत न होगा। यही प्रेम था जिसने हमारे उद्धार के कार्य को प्रेरित किया (यूहन्ना 3:16)। प्रेम उसके चरित्र का मुख्य गुण है (1 यूहन्ना 4:8), मसीह के व्यक्तित्व में उसका ऊच्च प्रकटीकरण पाना। परमेश्वर हम पर इसलिए दया करता है क्योंकी हम पापी हैं, और वह हम से प्रेम करता है क्योंकी हम उसकी सृष्टि हैं। मनुष्य के लिए उसका महान

काम केवल कोई परोपकारिता या दानपुण नहीं; बल्कि यह स्नेह की क्रिया, प्रेम था।

(3) हम कहाँ पर परमेश्वर की महिमा , सिद्ध कार्य देख सकते हैं, और हमारे सृष्टिकर्ता की महान करुणा-महान स्वामी कलाकार?

आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है; और आकशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है। (भजनसहिता 19:1)

कितना अदभुत, कितनी अदभुत सुन्दरता के साथ, प्रक्रति में सब कुछ सजाया हुआ है। प्रत्येक जगह हम उस महान प्रभु-कलाकार के सिद्ध कार्यों को देखते हैं। आकाश उसकी महिमा का वर्णन करता है; और पृथ्वी जो मनुष्य के आनंद के लिए बनाई गई थी, हमें उसके अतुल्य प्रेम के बारे में बताती है। उसकी सतह एक लय समतल नहीं है; परन्तु भव्य पुराने पहाड़ प्राकृतिक छटा की विविधता की वृद्धि को बढ़ाते हैं। चकमकाती नदियाँ और समतल वादियाँ, सुन्दर झीलें, चौड़ी नदियाँ, और असीम समुंद्र। परमेश्वर सुखी भूमि पर ओस और बारिश की बूंदे भेजता है। ठंडी हवाएं, जो वातावरण को शुद्ध करने के द्वारा हमारे स्वास्थ्य हो अच्छा बनाती हैं, वे उसके बुद्धि के द्वारा नियंत्रित है। उसने सूर्य को आकाश में दिन और रात के बीच अंतर बताने के लिए रखा, और जननांग क्षेत्र के द्वारा हमें रोशनी और गर्मी सेने के लिए, ताकि वनस्पति बढ़ने पाए।

मै आपका ध्यान परमेश्वर के हाथों की बहुतायत से इन आशीषों की ओर लगाना चाहता हूँ। हर सुबह की ताज़ी महिमा आपके हृदयों में उसकी दया के प्रति धन्यवाद के रूप में उसकी स्तुति जगाने पाए। परन्तु जबकि हमारे दयालु स्वर्गीय पिता ने हमारे आनन्द को बढ़ाने के लिए बहुत सारी चीजें दी हैं, उसने भेष में आशीषें दी हैं। वह पाप में गिरे मनुष्य की बाध्यताओं को अच्छे से जानता है; और जबकि एक और उसने हमें लाभ दिए हैं, वही दूसरी ओर प्रोत्साहित करने के लिए असुविधाएं उन योग्यताओं को इस्तेमाल करने के लिए जो उसने हमे दी हैं। ये धीरज, सब्र और प्रोत्साहन के कारोबार का विकास करती हैं।

(4) बहुतों में से कौन-से पांच उपकार हैं जिन्हें हमें भूलना नहीं है, वह अपने प्रेम में, यूँ ही प्रदान करता है?

हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूलना। वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता, और तेरे सब रोगों को चंगा करता है, वही तो तेरे प्राण को नाश होने से बचा लेता है, और तेरे सिर पर करूणा और दया का मुकुट बान्धता है,वही तो तेरी लालसा को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है, जिस से तेरी जवानी उकाब की नाईं नई हो जाती है॥ (भजनसहिता 103:2-5)

परमेश्वर की सामर्थ हृदय के धड़कने से प्रकट होती है, फेफड़ों को क्रिया से, और और सजीव प्रवाह जो कि हमारे शरीर के हजारों भिन्न भागों में प्रवाहित होती है। हम हमारे अस्तित्व के हर एक क्षण के लिए धन्यवादी हैं, और हमारे जीवन के सभी सुखों के लिए। जो ताकतें और योग्यताएं जो मनुष्य छोटी सृष्टि से ऊपर उठाती हैं, सृष्टिकर्ता की दें हैं।

जो भोजन हम खाते हैं उसके लिए हम उसके प्रति धन्यवादी हैं, जो पानी हम पीते हैं, जो वस्त्र हम पहनते हैं, हवा जिसके कारण हम साँस लेते हैं। उसके विशेष प्रयोजन के बिना, हवा महामारी और जहर से भर जाएगी। वह बहुतायत में परोपकारी और बचाने वाला है। सूर्य जो पृथ्वी पर चमकता है, और पूरी प्रकृति को महिमान्वित करता है, अजीब, चाँद की धीमी रोशनी, आकाशमंडल की महिमा, आकर्षक तारों के साथ बिखरे हुए, बूंदे जो भूमि को निखर देती हैं, और वनस्पति को बढ़ाती हैं, प्रकृति की कीमती चीजें उनकी अलग-अलग किस्मों की बहुतायत में, ऊँचे पेड़, झड़ियाँ और पौधे, लहलहाते अन्न-कण, नीला आसमान, हरी-धरती, दिन और रात में बदलाव, बदलती ऋतुएं, सब मनुष्य को सृष्टिकर्ता के प्रेम के विषय में बताती हैं।

उसने स्वंय को स्वर्ग और पृथ्वी के उपहार में जोड़ा है। वह हमारा एक माँ के द्वारा बच्चे का बिमारी में परवाह रखने से भी ज्यादा परवाह रखता है। "जैसे पिता अपने बच्चों पर दया करता है, वैसे ही परमेश्वर अपने डरव्यों पर दया करता है"।

(5) अपने प्रेम के कारण, कौन-से पांच विशेष कार्य परमेश्वर ने अभिषेक किये और यीशु को पृथ्वी पर भेजा?

कि प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिये कि उस ने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिये भेजा है, कि बन्धुओं को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूं और कुचले

हुओं को छुड़ाऊं। (लूका 4:18)

यह उसका कार्य था। वह भले कार्य करते हुए और जो दुष्टात्माओं से ग्रसित थे उन्हें चंगा करता गया। ऐसे गावं थे जहाँ किसी घर में बिमारी का विलाप न हो, क्योकिं वह उनके पास से गुजरा और उनके सभी बीमारों को चंगा किया। उसके काम उसके आलौकिक अभिषेक का प्रमाण थे। प्रेम, दया, और करुणा उसके जीवन के प्रत्येक कार्य में प्रकट थे; उसका हृदय मनुष्यों की संतान के लिए सहानुभूति के लिए तैयार रहता था। उसने मनुष्य का स्वभाव धारण किया, ताकि वह मनुष्य की जरूरतों तक पंहुच सके। सबसे दरिद्रऔर नम्र लोग भी उससे मिलने से डरते नहीं थे। यहाँ तक कि छोटे बच्चे भी उसकी और आकर्षित होते थे। वे उसके घुटनों पर चढ़कर उसके चिंताग्रस्त चेहरे की ओर ताकते रहते थे, प्रेम से महरबान।

मनुष्य का पुत्र इस संसार में पुन:स्थापित करने के लिए आया था। वही मार्ग, सत्य और जीवन था। उसके मुह से निकलने वाला हर एक शब्द आत्मा और जीवन था। वह अधिकार के साथ बोलता था, अपनी सामर्थ को जानते हुए मानवता को आशीषित करने के लिए, और शैतान के द्वारा जकड़े हुए बंदियों को छुड़ाने के लिए; इस बात को जानते हुए कि अपनी उपस्थिति के द्वारा वह इस संसार में आनन्द की भरपूरी ला सकता था। वह स्वंय पर अपनी निर्भरता की अपेक्षा करता है, और यह की उसके उपकारों के लिए हम धन्यवादी हों? उसके विपरीत, प्राय: हम भूल जाते हैं "क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है"। वह इस मानवीय परिवार के दबे हुओं और पीड़ित जन की सहायता करना चाहता था, और वह ये दर्शाना चाहता था कि लोगों को आशीषित करना उसका सौभाग्य था, न की उन पर दंड की सजा सुनाना।

(6) परमेश्वर की संतान, परमेश्वर के हाथ से क्या अपेक्षा कर सकते, और निर्भर हो सकते, यह उसके प्रेम की गवाही है?

सभों की आंखें तेरी ओर लगी रहती हैं, और तू उन को आहार समय पर देता है।तू अपनी मुट्ठी खोल कर, सब मनुष्योंको आहार से तृप्त करता है। (भजनसहिता 145:15-16)

"परमेश्वर प्रेम है" यह हर एक खिली हुई कली के ऊपर लिखा होता है, बसंत में हर घास के आवर्त पर लिखा होता है। सुन्दर

पक्षी अपने सुन्दर गीतों के द्वारा वायु को मौखिक करते हैं, रंगें हुए नाजुक फूल अपनी सिद्धता में वायु को खुश्बू से भरते है, जगंल में ऊँचे वृक्ष प्रनावली को हरा-भरा रखते हैं- हर एक परमेश्वर की नाजुक, हमारे परमेश्वर पिता का परवाह और अपने बच्चों को खुश रखने की ईच्छा को दर्शाता है।

उद्धार की आशीष, अस्थायी या आत्मिक, सम्पूर्ण मानवजाति के लिए है। बहुत से लोग परमेश्वर से शिकायत करते हैं क्योंकी यह संसार पूरी घटी और पीड़ा से भरा हुआ है; परन्तु परमेश्वर नहीं चाहता था कि यह पीड़ा हो। वह कभी नहीं चाहता था कि एक मनुष्य के पास जीवन की सारी सुख-सुविधाएं हों, जबकि दूसरे के बच्चे रोटी के लिए रोयें। परमेश्वर परोपकारी परमेश्वर है। उसने सभी को जरूरतों के लिए पर्याप्त प्रयोजन बनाये हैं, और उसके प्रतिनिधित्वों के द्वारा, जिनकों उसने सभी भली-वस्तुएं सौपी हैं, वह चाहता है उसके बनाएं हुए सभी मनुष्योंकी आवश्यकताएं पूरी हों।

(7) उसके महान प्रेम और वायदों के कारण हमे सुरक्षित रखने और बचाने के लिए, परमेश्वर ने हमारे भविष्य के लिए कौन-सी दो बात्तें करने के लिए कहा?

इसलिये पहिले तुम उसे राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी। सो कल के लिये चिन्ता न करो, क्योंकि कल का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा; आज के लिये आज ही का दुख बहुत है॥ (मत्ती 6:33-34)

हम भविष्य को देखने में अयोग्य हैं, जो हमारे भीतर घबराहट और अप्रसन्नता पैदा कर देता है। परन्तु परमेश्वर की महान करुणा का सबसे बड़ा प्रमाण जो हमारे पास है वो है आगामी दिनों में उसका आश्रय। हमारा कल का अज्ञान हमें आज के लिए और संयमी और जोशीला बना देता है। हमारे भविष्य में क्या है हम उसे देख नहीं सकते। हमारे सबसे बेहतर बनाई हुई योजनायें मूर्ख और त्रुटिपूर्ण दिखती हैं। हम सोचते हैं, "यदि हम केवल भविष्य जानते!"परन्तु परमेश्वर अपने बच्चों को चाहता है की वे उस पर भरोसा रखें और वहां जाने के लिए तैयार हों जहाँ वह उनकी अगुवाई करता है।

हम यह नहीं जानते कि कब हमारा परमेश्वर स्वर्ग में बादलों पर कब प्रकट होगा-परन्तु उसने हमें बताया है की हमारी सम्पूर्ण सुरक्षा हमेशा तैयार रहने में है-हमेशा जागते रहने और प्रार्थना करने की दशा। चाहे हमारे पास एक साल है, या फिर पांच या दस हमे

हमारे भरोसे में विश्वाश्योग्य रहना है। हमें प्रत्येक दिन हमारी जिम्मेदारियों को ऐसे निभाना है जैसे यह हमारा अंतिम दिन हो।

(8) उसके चरित्र के कौन-से दो लक्षण हैं जो परमेश्वर हर सुबह विश्वासयोग्यता से नवींन करता है जो हमें नाश होने से बचाता है?

हम मिट नहीं गए; यह यहोवा की महाकरुणा का फल है, क्योंकि उसकी दया अमर है। प्रति भोर वह नई होती रहती है; तेरी सच्चाई महान है।(विलापगीत 3:22-23)

हममें से कितने लोग इस बात को समझते हैं कि हमें परमेश्वर के प्रति कितना धन्यवादी होंना चाहिये? क्या हम स्मरण करते हैं कि परमेश्वर की करुणा प्रति भोर नई होती है, और उसकी विश्वासयोग्यता कभी विफल नहीं होती? क्या हम हमारी निर्भरता को उस पर दिखाते हैं, और उसके उपकारों के लिए धन्यवाद देते हैं? उसके विपरीत, हम प्राय: भूल जाते हैं कि "हर एक भला और सिद्ध वरदान केवल ऊपर से आता है, और "ज्योतियों के पिता" की ओर से होता है।

अधिकतर, भले चंगे लोग कितनी बार परमेश्वर की दया के विषय भूल जाते हैं जो दिन-प्रतिदिन उन पर होती है, वर्ष पर वर्ष तक। वे परमेश्वर के सभी उपकारों के बदले उसको धन्यवाद की भेंट भी नहीं चढ़ाते। परन्तु जब बीमारी आती है, परमेश्वर को याद किया जाता है। चंगाई पाने या दुरुस्त होने की दृढ़ ईच्छा जोशीली प्रार्थना की ओर अगुवाई करती है; और यह ठीक है। परन्तु बहुत से अपने मुद्दों को उसके सामने नहीं रखते; वे अपने बार में चिंतित होकर कमजोरी और बीमारी को बढ़ावा देते हैं।यदि वे विलाप करना छोड़कर, निराशा और उदासी से बढ़कर सोचें, उनकी चंगाई अवश्य होगी। उन्हें धन्यवाद के साथ यह याद रखना चाहिये कि उन्होंने कितने समय तक अच्छे स्वास्थ्य का आनंद उठाया है; और क्या ये कीमती वरदान उन्हें फिर से मिलना चाहिये, उन्हें यह नहीं भूलना चाहिये कि वे अपने सृष्टिकर्ता के प्रति नवीनीकरण बाध्यताओं के आधीन हैं।

जब दस कोढ़ियों ने चंगाई प्राप्त की, उन में से केवल एक ही यीशु को ढूंढने और महिमा देने आया। आइये हम भी उनके समान न सोचने वाले, जिनके हृदय परमेश्वर की दया के कारण नहीं छुए गए थे न बनें। (बी.एको, जनवरी 1, 1988)

(9) पौलुस की सभी सम्मिलित सूची में ऐसी कौन-सी दस बाते हैं जो हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकती?

क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई, न गहिराई और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी॥ (रोमियो 8:38-39)

जीवित मसीह के सम्पर्क में रहें और वह दृढ़ता से आपके हाथ को थामेगा और कभी न छोड़ेगा। जाने और विश्वास करें जो परमेश्वर का प्रेम हमारे लिए है, और आप सुरक्षित हैं; वह प्रेम शैतान के सारे भ्रम और आक्रमणों के विरुद्ध एक शरणस्थान है। "यहोवा का नाम दृढ़ गढ़ है: धर्मी उसमे भाग कर शरण ले सकता है, और सुरक्षित है"।

पौलुस दस बातों की सूची देता है जो हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकती। दस विस्तृत है कुछ भी जोड़ने के लिए जो शायद मिटा दिया गया हो। सभी शब्दावलियाँ उनके समान्य रूप में ही ली जानी चाहिये। उनकी अनिश्चतता पौलुस के उस बिंदु पर जोर देने के लिए कार्य करती है कि इस सम्पूर्ण विश्व भर में कुछ भी ऐसा नहीं जो एक मसीही और उसके प्रेमी उद्धारकर्ता के बीच दूरी पैदा कर सके। (6 ई.पू. 580)

(10) उसके पुत्र के महान वरदान के साथ-साथ, हम कौन-से वायदे का भरोसे के साथ दावा कर सकते हैं यदि हम उसकी ईच्छा के अनुसार मांगें?

जिस ने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिये दे दियावह उसके साथ : हमें और सब कुछ क्योंकर न देगा?(रोमियो 8:32)

मसीह की योग्यता के कारण हमें असीमित सामर्थ के सिंहासन का साहस है..."जिसने अपने इकलौते पुत्र को नहीं रख छोड़ा, परन्तु हमारे लिए दे दिया, वह उसके साथ हमें अधिकता से सभी चीजे न देगा?" रोमियो 8:32। पिता ने बिना माप के हमें अपने पुत्र को अपना आत्मा दिया, और हम भी उसकी परिपूर्णता में सहभागी हैं। यीशु ने कहा, "यदि तुम बुरे होकर भी अपने बच्चों को भली वस्तुएं देना जानते हो: तो तुम्हारे स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को पवित्रआत्मा क्योंकर न देगा?" लूका 11:13। "यदि तुम मेरे नाम में कुछ भी मांगो, मै तुम्हे दूंगा"। मांगो, तो तुम्हे दिया जाएगा,

ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए"। यूहन्ना 14:14, 16:24 (जी सी 477)

(11) इस पद में कौन-सा अदभुत सौभाग्य जो में वर्णित हैं परमेश्वर ने उन्हें दिया जो उसे जानने और ग्रहण करने के चुनाव करते हैं?

देखो पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं, और हम हैं भीइस कारण संसार हमें नहीं : जानता, क्योंकि उस ने उसे भी नहीं जाना। (1 यूहन्ना 3:1)

हमारे छुटकारे के लिए जो दाम चुकाया गया, हमारे स्वर्गीय पिता का प्रेम अपने पुत्र को हमारे लिए मरने के द्वारा, हमें उत्तम विचारधारा देना चाहिये की हम मसीह के द्वारा क्या बन पायें। एक प्रेरित, प्रेरित के रूप में यूहन्ना ने परमेश्वर के प्रेम की ऊचाई, गहराई, ऊंचाई देखना इस नाशवान पीड़ी की ओर, वह प्रशंसा और आदर से भरा हुआ था; और, और इस प्रेम की महानता और कोमलता के प्रकटीकरण की उपयुक्त भाषा की अयोग्यता से उसने इस संसार को इसे देखने का आमन्त्रण दिया। "देखो पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं, और हम हैं भीइस कारण संसार हमें नहीं जाना :, क्योंकि उस ने उसे भी नहीं जाना"। 1 यूहन्ना 3:1

ये मनुष्य को कैसा मूल्यवान बना देता है! व्यवस्था का उल्लंघन करने के कारण परमेश्वर के पुत्र शैतान के आधीन हो गए। यीशु के प्रायश्चित वाले बलिदान में विश्वास करने के द्वारा आदम के पुत्र परमेश्वर के पुत्र बन सकते हैं। मानवीय स्वभाव को समझने के द्वारा मसीह मानवता को ऊँचा उठाता है। पतन से प्रभावित मनुष्य हर जगह हैं, मसीह में जुड़ने के द्वारा, वे सचमुच "परमेश्वर की संतान" के नाम के योग्य बन सकते हैं"। ऐसे प्रेम की तुलना नहीं की जा सकती। स्वर्गीय राजा के बच्चे! कीमती वायदा! सबसे गहन मनन का विषय! इस संसार के लिए उसका अतुल्य प्रेम जिसने उसे प्रेम नहीं किया। यह प्राण को नियंत्रित करने वाला एक विचार है और मन को परमेश्वर की ईच्छा के नियन्त्रण में लेकर आता है।

जितना हम क्रूस के प्रकाश में आलौकिक चरित्र का अध्ययन करते हैं, उतना हम दया, कोमलता, और क्षमा में समानता और न्याय का मिश्रण, और जितना हम प्रेम के असंख्यों प्रमाणों को पहचानते हैं जो कि असीमित और दया जैसे एक माँ की अपने हठीले बच्चे के प्रति सहानूभूति।

मै परमेश्वर के प्रति उन अनगिनित आशीषों के लिए धन्यवादी हूँ जो उसकी ओर से आती हैं और उसके महान प्रेम की गवाही है!

गोला लगायें: *हाँ अनिर्णीत*

मैं विश्वास और बुद्धि के लिए प्रार्थना करता हूँ कि मैं पहले उसके राज्य की खोज करूँ और फिर अपनी जरूरतों के पुरे होने के लिए उस पर निर्भर रहूँ।

गोला लगायें: *हाँ* *अनिर्णीत*

अब मेरी परमेश्वर के प्रेम को बेहतर सराहता हूँ जो स्वर्ग और पृथ्वी में प्रकट हुआ।

गोला लगायें: *हाँ* *अनिर्णीत*

मैं धन्यवाद करता हूँ कि यीशु हमें चंगा करने और हमें पाप के बंधन और उसके प्रभावों से जो मुझे नाश कर सकते थे उनसे स्वतंत्र करने आये। मैं एक पात्र बनना चाहता हूँ जिसे वह अपने कार्य को आगे बढ़ाने के लिए इस्तेमाल कर सकता है उसके दूसरे आगमन तक।

गोला लगायें: *हाँ* *अनिर्णीत*

मैं उसके प्रेम से अभिभूत हूँ जैसे मैं अपने प्रति उसकी अदभुत दया, कृपा और विश्वासयोग्यता के विषय में सोचता हूँ जो प्रति भोर नई बनती जाती है और यह कि कोई भी हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकता।

गोला लगायें: *हाँ* *अनिर्णीत*

जैसे मैं परमेश्वर मुझे उसकी संतान बुलाने में उसके महान प्रेम को प्रगट करता है। मैं प्रार्थना करता हूँ की उसकी आत्मा मुझमें वास करे ताकि मैं परमेश्वर के नाम को महिमा दे सकूं।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

पाठ 3

खोये हुओं को ढूंढने में परमेश्वर का प्रेम

(1) परमेश्वर के महान प्रेम और लेपालक की आत्मा के द्वारा, हम उसे प्रेम से क्या बुला सकते हैं?

क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली, कि फिर भयभीत हो परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिस से हम हे अब्बा, हे पिता कह कर पुकारते हैं।(रोमियो 8:15)

असीमित परमेश्वर, यीशु ने कहा, उसे परमेश्वर कहकर उसके पास जाना हमारा सौभाग्य है। वह सब जो उसमें लागू होता है उसे समझें। किसी भी सांसारिक माता-पिता ने ऐसी आग्रहपूर्वक प्रार्थना नहीं की जैसे हमारा बनाने वाला अपराधियों से आग्रह करता है। कोई भी मानवीय, प्रेम-रूचि इतने प्रेम-पूर्वक निमंत्रण पश्चाताप न करने वालों को अनुगमन नहीं की।

परमेश्वर प्रत्येक घर में वास करता है; वह हर बोला गया शब्द सुनता है, और हर की गई प्रार्थना को सुनता है, हर मन के दुख

और निराशा को चखता है, वह ध्यान करता है हम कैसे अपने पिता, माता, बहन, मित्र और पड़ोसी के साथ व्यवहार करते हैं। वह हमारी जरूरतों का ध्यान रखता है, और उसका प्रेम और दया और अनुग्रह हमेशा हमारी जरूरतों को पूर्ण करने के लिए बहता रहता है।

यदि आप परमेश्वर को अपना पिता मानते हैं तो आप स्वंय को उसके बच्चे मानते हैं, प्रत्येक चीज में उसकी बुद्धि और हर चीज में उसके प्रति आज्ञाकारिता में उसके द्वारा मार्गदर्शन पाने के लिए, यह जानते हुए कि उसका प्रेम कभी नहीं बदलता। आप अपने जीवन के लिए उसकी योजनाओं को ग्रहण करेगें। परमेश्वर के बच्चे होने के नाते, उसका आदर, सम्मान, उसका चरित्र, उसका परिवार, उसका कार्य, आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण रूचि की बात होगी। यह पहचानना आपके लिए आनन्द की बात होगी और अपने पिता और अपने परिवार के प्रति सम्बन्धो का आदर करना। आप कोई भी कार्य करने के लिए आनंदित होगें, परन्तु नम्र, जो उसके नाम की महिमा का कारण होगा या भाई-चारे की भलाई के लिए।

(2) कौन-सी चार बातें परमेश्वर को आनंदित करती है जब एक पापी बलवा छोड़ उसके प्रेम की ओर मुड़ता है?

तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच में है, वह उद्धार करने में पराक्रमी है; वह तेरे कारण आनन्द से मगन होगा, वह अपने प्रेम के मारे चुपका रहेगा; फिर ऊंचे स्वर से गाता हुआ तेरे कारण मगन होगा॥(सपन्याह 3:17)

हमें अपने मन में वह महान आनंद पर ध्यान करना है जो चरवाहे के द्वारा प्रगट किया जाता है जब एक खोया हुआ लौट आता है। "मेरे साथ आनन्द मनाओं; क्योंकी मेरी खोई हुई भेड़ वापस मिल गई है"। और पूरा स्वर्ग आनदं से गूँज उठता है। पिता स्वंय छुड़ाये हुओं के कारण गीत गाकर आनन्द मनाता है। कितना पवित्र आनंद इस दृष्टांत में दिखाया गया है! यह आनन्द बांटना हमारा सौभाग्य है।

(3) कौन बलवा करने वाले पापी को प्रेम से खोजता है, जैसे एक भटका हुआ मेमना खो जाता है?

क्योंकि परमेश्वर यहोवा यों कहता है, देखो, मैं आप ही अपनी भेड़बकरियों की सुधि लूंगा-, और उन्हें ढूंढ़ूंगा... मैं

खोई हुई को ढूंढूंगा, और निकाली हुई को फेर लाऊंगा, और घायल के घाव बान्धूंगा, और बीमार को बलवान् करूंगा, और जो मोटी और बलवन्त हैं उन्हें मैं नाश करूंगा; मैं उनकी चरवाही न्याय से करूंगा..”(यहेजकेल 34:11, 16)

निराशाजनक मन, उत्साहित हो, यद्यपि, तूने दुष्ट काम किये हैं। यह मत सोचना परमेश्वर तुम्हारे अधर्मों को शायद क्षमा करेगा और उसकी उपस्थिति में आने की अनुमति देगा। परमेश्वर ने पहले से प्रयोजन कर दिया है। जब तुम उसके विरद्ध बलवा करते थे, वह तुम्हे ढूंढ रहा था। चरवाहे के समान कोमल हृदय को लेकर वह निन्यानवे को छोड़ उस एक भटकी हुई को ढूंढने के लिए गया। टूटे और घायल मन के साथ और नाश होने के लिए, वह उसको अपने बाहों में प्रेम से लेकर और आनदं से सुरक्षित अपनी भेड़शाला में लेकर जाता है।

यहूदियों ने यह शिक्षा दी थी कि इससे पहले की परमेश्वर का प्रेम पापी तक पहुंचे, उसे पहले पश्चाताप करना था। इस विचारधारा के अनुसार, पश्चाताप वह क्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य स्वर्ग से कृपा कमाता है। और यही विचार फरीसियों को भौचक्का करके रख दिया और वे गुस्से में चिल्लाने लगे। “यह मनुष्य पापियों को ग्रहण करता है”। उनके विचार के अनुसार उसे केवल उन तक ही पहुचना चाहिये था जिन्होंने पश्चाताप किया था। परन्तु खोई हुई भेड़ के दृष्टांत में, मसीह सिखाता है उद्धार हमारे खोजने से नहीं मिलता वरन परमेश्वर के खोजने से। “कोई भी इस बात को समझता नहीं, कोई भी परमेश्वर की खोज नहीं करता। वे सब मार्ग से भटक गए हैं”। रोमियो 3:11,12। हम इसलिए पश्चाताप नहीं करते ताकि परमेश्वर हम से प्रेम करे, परन्तु अपने प्रेम को हम हम पर इसलिए प्रकट करता है ताकि हम पश्चाताप करें।

जब भटकी हुई भेड़ वापस घर लौटती है, तब चरवाहे का धन्यवाद आनन्द के गीतों में फूट पड़ता है। वह अपने मित्रों और पड़ोसियों को, बुलाकर कहता है, “मेरे संग आनंद मनाओ; क्योंकी मेरी खोई हुई भेड़ मिल गई है”। इसलिए जब एक भटकने वाला भेड़ों के महान चरवाहे के द्वारा मिल जाता है, स्वर्ग और पृथ्वी धन्यवाद और आंनद मनाने के लिए आपस में मिल जाते हैं। “एक पापी के मन फिराने पर स्वर्ग में आनंद मनाया जाता है, निन्यानवे से ज्यादा, जिन्हें पश्चाताप की आवश्यकता नहीं”।

(4) इस पद में कौन-सा शब्द हमारे स्वर्गीय पिता के द्वारा एक पापी को घर लौटने के दिए गए निमन्त्रण का वर्णन करता है?

स्वामी ने दास से कहा, सड़कों पर और बाड़ों की ओर जाकर लोगों को बरबस ले ही आ ताकि मेरा घर भर जाए। (लूका 14:23)

हम ऐसे समय में जी रहे हैं जब दया का अंतिम सन्देश, अंतिम निमन्त्रण, मनुष्य की संतानों को ध्वनी सुना रहा है। यह आज्ञा, "राजमार्गों और चौंकों," पर अंतिम पूर्णता की ओर पहुंच रही है। हर एक मनुष्य को मसीह का निमंत्रण दिया जाएगा। राजदूत कह रहे हैं, "आओ; अब सभी चीजें तैयार हैं"। स्वर्गीय दूत मानवीय संस्थाओं के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं। पवित्र आत्मा प्रत्येक उत्प्रेरणा आपको आने के लिए विवश करता है। मसीह ऐसे चिह्नों को देख रहा है जो सारी कुण्डियों को हटाकर आपके दिल के द्वारा दरवाजे में प्रवेश करे। स्वर्गदूत स्वर्ग में ख़ुशी की खबर भेजने की प्रतीक्षा में हैं कि एक और खोया हुआ पापी मिल चुका है। स्वर्गीय मनुष्य प्रतीक्षा कर रहे हैं; अपनी बासुरियों को लेकर और आनंद का गीत गाने के लिए कि एक और व्यक्ति ने सुसमाचार के भोज का निमन्त्रण ग्रहण किया है। {सीओएल 237}

(5) जैसा उड़ाऊ पुत्र के दृष्टांत में दिखाया गया है, कैसे हमारा स्वर्गीय पिता अपने हठीले बच्चों का वापस अपने घर में स्वागत करता है?

तब वह उठकर, अपने पिता के पास चलावह अभी दूर ही : था, कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले *लगाया, और बहुत चूमा। (लूका 15:20)*

उड़ाऊ पुत्र का पिता उसका प्रकार है जिसका मसीह परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने का चुनाव करता है। यह पिता एक बार फिर उस पुत्र को देखने और ग्रहण करने की आशा करता है। वह उसकी प्रतीक्षा करता है, उसको देखने की अभिलाषा, और यह आशा करते हुए कि वह आएगा। जब वह एक अजनबी को आते देखता, दरिद्रऔर मैले-कुचैले कपड़ों से लिपटा हुआ, वह उससे मिलने जाता है, यह देखने के लिए की शायद वह उसका बेटा हो। और वह उसे खिलाता और कपड़े पहनाता जैसे की सचमुच वह उसका अपना बेटा हो। बाद में उसका प्रतिफल है, क्योंकी उसका बेटा घर वापस लौटता है, उसके होठों पर दयापूर्ण अंगीकार, "पिता, मेरे स्वर्ग के विरुद्ध पाप किया, और तेरी दृष्टि में, और मैं तेरा बेटा

कहलाने के योग्य नहीं"।और पिता दासों से कहता है, *"पुत्र ने उस से कहा; पिता जी, मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है; और अब इस योग्य नहीं रहा, कि तेरा पुत् कहलाऊं। परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा; फट अच्छे से अच्छा वस्त्र निकालकर उसे पहिनाओ, और उसके हाथ में अंगूठी, और पांवों में जूतियां पहिनाओ। और पला हुआ बछड़ा लाकर मारो ताकि हम खांए और आनन्द मनावें। (लूका 15:21-23)*

यहाँ कोई ताना नहीं कसा गया या, या उड़ाऊ पुत्र की बुराइयों का बखान नहीं किया गया। पुत्र इस बात को जानता है कि उसका अतीत क्षमा कर दिया गया है और भुला दिया गया है, हमेशा के लिए मिटा दिया गया है। इसलिए परमेश्वर पापी से कहता है, "मैं ने तेरे अपराधों को काली घटा के समान और तेरे पापों को बादल के समान मिटा दिया है; मेरी ओर फिर लौट आ, क्योंकि मैं ने तुझे छुड़ा लिया है" (यशायाह 44:22)। उनका अधर्म क्षमा करूंगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा"।(यिर्मियाह 31:34)। स्वर्ग उन उड़ाऊओं की प्रतीक्षा में है और चाहता है जो उसके भेड़शाला से भटक गए हैं।

कल्पना करके देखें पिता के विषय में जिसने स्वंय को पीड़ा के आधीन कर दिया, अपने इकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा, परन्तु मुफ्त में हम सभी के लिए दे दिया...ओ काश हमें उसके प्रेम की बेहतर समझ होती।

(6) "उड़ाऊ" पुत्र को वापस घर बुलाने के लिए, पिता की क्या मनसा है?
हम "उड़ाऊ" बच्चों, को घर बुलाने में परमेश्वर की क्या मनसा है?

..."यहोवा ने मुझे दूर से दर्शन देकर कहा है। मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूँ; इस कारण मैं ने तुझ पर अपनी करुणा बनाए रखी है। (यिर्मियाह 31:3)

न सोचने वाला जवान, जैसे वह अपने पिता के द्वार से बाहर गया, पिता के हृदय में वह दर्द का विचार और मिलने की आभिलाषा। जब वह अपने जंगली दोस्तों के साथ नाचा और खान-पान किया, उसने उस छाया के बारे में जरा भी नहीं सोचा जो उसके पिता पर पड़ने वाली थी। और अब जब बह थके और दर्द से भरे कदमों के साथ जब वह घर की और आगे बढ़ता है, वह नहीं जानता कि कोई उसके लौटने का इन्तजार कर रहा है। परन्तु जब वह "रास्ते में बुत दूर है "पिता उसकी आहट को पहचान सकता है। प्रेम बहुत

तीव्र है। इतने सालों पाप में डूबे रहना भी पुत्र को पिता की आंखो से छिपा नहीं सकता। उसने "उस पर दया की, और दौड़ा, और उसकी गर्दन पर गिर पड़ा" लम्बे, चिपकते हुए, कोमल आलिंगन के साथ।

पिता कोई अपमानजनक दृष्टि को उसके बेटे के बुरे चिथड़ों पर हसने की अनुमति नहीं देगा। वह अपने खुद के कन्धों से चौड़ा, बड़ा चौगा लेता है और उसके बेटे की फटी हुई अवस्था को ढक देता है, और जवान पश्चाताप के कारण रोने लगता है, कहते हुए , "पिता मैंने स्वर्ग के विरुद्ध पाप किया है, और तेरी दृष्टि में, और मै तेरा पुत्र कहलाने के योग्य नहीं हूँ"। पिता उसे अपनी तरह पकड़ता है, और उसे घर लाता है। उसे दास के स्थान के बारे में पूछने के लिए कोई मौका नहीं मिला। वह पुत्र है, जिसका घर की सभी उत्तम चीजों से आदर किया जाएगा, और जिसका प्रतीक्षा करने वाले आदर और सेवा करेंगे।

पिता ने अपने दासों से कहा, "फटाफट अच्छे से अच्छा वस्त्र निकालकर उसे पहिनाओ, और उसके हाथ में अंगूठी, और पांवों में जूतियां पहिनाओ। और पला हुआ बछड़ा लाकर मारो ताकि हम खांए और आनन्द मनावें"।

(7) उड़ाऊ बच्चे के वापिस घर लौटने पर स्वर्ग की क्या प्रतिक्रिया थी?

मैं तुम से कहता हूं; कि इसी रीति से एक मन फिराने वाले पापी के विषय में परमेश्वर के स्वर्गदूतों के साम्हने आनन्द होता है"(लूका 15:10)
उसके पिता ने उसे देखा। यीशु के कहने का तात्पर्य था कि पिता अपने पुत्र के लौटने की तलाश में था, और उसकी आशा में था। पिता में अपने बच्चे का चरित्र बड़े अच्छे से पहचान लिया होगा जब बेटे ने अपने हिस्से की मांग की और जब विदाई दी- कि उसके चरित्र में उन विशेषताओं की कमी थी जो उसके इस कार्य को सफल बना सकती थी। परन्तु अंत में उसने यह तर्क दिया कि आज नहीं तो कल उसका बेटा उसके पास आ जाएगा। उसने फटे हुए कपड़ों में भी इतनी दूर से अपने बेटे को पहचान लिया।

20-24 आयतों में यीशु अपने श्रोताओं को परमेश्वर का हृदय प्रकट करते हैं, 11-19 आयतों में भी वह छोटे बेटे के विषय में बतात्ता है। उसकी अपेक्षा, उसने स्वंय के हृदय की उत्सुकता और आनन्द का प्रमाण दिया उस से जाकर मिलने में। उसके गर्दन पर गिर गया। यही, आलिंगन है। पुत्र ने अभी कुछ नहीं कहा था, परन्तु

उसके वापिस लौटने ने बड़े साफ़ तौर पर वह सब कह दिया था उन शब्दों से भी बढ़कर जो उसने बोलकर कहा होता। और न ही इस बात को कोई लेखा है कि पिता ने बेटे को क्या कहा होगा, परन्तु उसका अपने दासों को आज्ञा देकर कहना, अपने पितृत्व प्रेम में, वह ज्यादा साफ़ था उन शब्दों की तुलना में जो उसने मुह से कहे होते।

(8) इस पद में हमारे पाप को दूर करने के कौन-से प्रतीकों का प्रयोग किया गया है और परमेश्वर की धार्मिकता का उसके स्थान पर स्थगित होना?

तब दूत ने उन से जो साम्हने खड़े थे कहा, इसके ये मैले वस्त्र उतारो। फिर उसने उस से कहा, देख, मैं ने तेरा अधर्म दूर किया है, और मैं तुझे सुन्दर वस्त्र पहिना देता हूं"। (जकर्याह 3:4)

तुम्हारा स्वर्गीय पिता तुम्हारे पापमय वस्त्रों को तुमसे ले लेगा। जकर्याह की इस सुन्दर प्रतिकात्मक भविष्यवाणी में, महायाजक यहोशु, गंदे वस्त्रों में यहोवा के स्वर्गदूत के सामने खड़ा है, पापी का प्रतिनिधित्व करता है। और यहोवा के द्वारा वचन बोला गया, "उस से मैले वस्त्र ले ले। और उसने कहा उससे, देख *फिर उसने उस से कहा, देख, मैं ने तेरा अधर्म दूर किया है, और मैं तुझे सुन्दर वस्त्र पहिना देता हूं"। जकर्याह 3:4, 5*

मैं यहोवा के कारण अति आनन्दित होऊंगा, मेरा प्राण परमेश्वर के कारण मगन रहेगा; क्योंकि उसने मुझे उद्धार के वस्त्र पहिनाए, और धर्म की चद्दर ऐसे ओढ़ा दी है"। यशायाह 61:10। क्या तुम भेड़शालों के बीच लेट जाओगे? और ऐसी कबूतरी के समान होगे जिसके पंख चान्दी से और जिसके पर पीले सोने से मढ़े हुए हों"। भजनसहिता 68:13

वह मुझे भोज के घर में ले आया, और उसका जो झन्डा मेरे ऊपर फहराता था वह प्रेम था। (श्रेष्ठगीत 2:4) "सेनाओं का यहोवा तुझ से यों कहता हैयदि तू मेरे मार्गों पर चले :, और जो कुछ मैं ने तुझे सौंप दिया है उसकी रक्षा करे, तो तू मेरे भवन का न्यायी, और मेरे आंगनों का रक्षक होगा; और मैं तुझ को इनके बीच में आने जाने दूंगा जो पास खड़े हैं। (जकर्याह 3:7)

(9) उसके चरित्र की कौन-सी तीन विशेषताएं हैं की पिता हमें लगातार वापिस घर लौटने के लिए आग्रह करता है?

क्या तू उस की कृपा, और सहनशीलता, और धीरज रूपी धन को तुच्छ जानता है और कया यह नहीं समझता, कि परमेश्वर की कृपा तुझे मन फिराव को सिखाती है? (रोमियो 2:4)

परमेश्वर का प्रेम अभी भी उन्हें ढूंढ़ता है जिन्होंने उससे अलग होने का चुनाव किया, और वह उन प्रभावों को क्रियाशील करता है उन्हें पिता के घर वापिस लाने के लिए। उड़ाऊ पुत्र अपनी बदहाली में "अपने आपे में आया"। जो धोखा देने वाली ताकतें जिनका शैतान उनके ऊपर इस्तेमाल कर रहा था वह अब टूट चुकी हैं। वह पहचान पाया कि उसकी पीड़ा उसकी स्वंय की मूर्खता का परिणाम है, तब कहने लगा, "कि मेरे पिता के कितने ही मजदूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती है, और मैं यहां भूखा मर रहा हूं"।

अपने दुख में, उड़ाऊ पुत्र ने अपने पिता के प्रेम के विश्वास में आशा पाई। यही प्रेम था जो उसे घर की ओर वापस खींच रहा था। इसलिए यह परमेश्वर के प्रेम का आश्वासन था जो एक पापी को घर लौटने पर विवश करता है। "परमेश्वर के भलाई हमें पश्चाताप की ओर अगुवाई करती है"। (रोमियो 2:4) एक सोने की जंजीर, आलौकिक प्रेम की दया और कृपा, हर एक नाश होते मनुष्य से होकर गुजरती है।

(10) उसके महान प्रेम में, कौन-से महान सौभाग्य परमेश्वर पिता ने हमें बुलाने की अनुमति दी है?

देखो पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं, और हम हैं भीइस कारण संसार हमें नहीं : जानता, क्योंकि उस ने उसे भी नहीं जाना। (यूहन्ना 3:1)

स्वर्ग और पृथ्वी की सारी बुद्धिमता को यह देखने बुलाहट दी गई है कि परमेश्वर ने हम से कैसा प्रेम किया है, ताकि हम परमेश्वर के पुत्र कहलायें। प्रत्येक पापी देखे और जी सके।

न सोचने वाला मन,कलवरी के दृश्य को लापरवाही से सर्वेक्षण न करें। क्या ऐसा हो सकता है कि स्वर्गदूत हमें कम आकेंगें, हम परमेश्वर के प्रेम को पाने वाले, और हमारा ठंडापन देखते हैं, उदासीन, प्रभाव न डालने वाला, जब स्वर्ग विस्मित होकर परमेश्वर के अति विशाल छुटकारे के कार्य को देखते हैं इस पतन से प्रभावित संसार के लिए, और कलवरी के प्रेम और शोक की पीड़ा को देखने की ईच्छा रखते हैं? स्वर्गदूत आश्चर्य से और विस्मित

होकर उन की ओर देखते हैं जिनको इतना महान उद्धार प्रदान किया गया है, और अचम्भित होते हैं कि परमेश्वर का प्रेम उन्हे जगाता नही, और धन्यवाद देने और उसको सराहने के लिए सुरीले स्वरों में अगुवाई नहीं करता।

परन्तु जो परिणाम स्वर्ग देखता है वे उनमें नहीं दिखते जो यीशु के पीछे चलने का दावा करते हैं। हम कितनी जल्दी अपने रिश्तेदारों और मित्रों से प्रेमभरे शब्दों में बोलते हैं, परन्तु उसके प्रेम के विषय में बात करने में कितना धीमा होते हैं जिसके प्रेम की तुलना भी नहीं की जा सकती, मसीह जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया तुम्हारे बीच में हैं।

(11) हमें क्या नहीं करने के लिए सावधान रहना चाहिये जब पिता का प्रेम, पवित्र आत्मा के द्वारा, हमें घर लौटने के लिए विवश करता है?

और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिस से तुम पर छुटकारे के दिन के लिये छाप दी गई है। (इफिसियों 4:30)

सावधान रहो, और उस कहने वाले से मुंह न फेरो"। (इब्रानियों 12:25) यीशु ने कहा, "उनमें से कोई भी मनुष्य जिनको बिदाई दे दी गई मेरे भोज में न खा सकेंगे"। उन्होंने इस निमन्त्रण को ग्रहण नहीं किया, और उन में से किसी की भो दोबारा निमंत्रित नहीं किया जाएगा। मसीह को ग्रहण न करने के कारण, यहूदी अपने हृदयों को कठोर कर रहे थे, और स्वंय को शैतान की ताकत का होने अधिकार में दे रहे थे ताकि उनके लिए अनुग्रह पाना असंभव हो। तो यह अभी है। यदि परमेश्वर के प्रेम को सराहा न जाये और हमारे मनों में अधिकार करने वाला सिद्धांत न बने, तो हम पूरी तरह से खोये हुए हैं। परमेश्वर उससे बढ़कर अपने प्रेम का प्रकटीकरण नहीं दे सकता जो उसने पहले से दिया है। यदि मसीह का प्रेम हमारे हृदयों पर नियन्त्रण न करे तो वह हमारे तो और कोई तरीके नहीं जिनके द्वारा हम उस तक पहुंच सकें।

हर बार जब आप दया का सन्देश सुनने से इन्कार करते हैं, आप स्वंय को अविश्वास में मजबूत बनाते हैं। हर बार जब आप मसीह के लिए अपने दिल का द्वार खोलने से चूक जाते हैं, आप और ज्यादा उसकी आवाज को सुनने के लिए अनिच्छुक बन जाते हैं जो आपसे बात करता है। आप दया के आग्रह के प्रति प्रतिउत्तर देने के लिए अपने मौके को कम कर देते हैं। यह आपके विषय में न लिखा जाए, जैसे पुराने इस्राएल के विषय में लिखा हुआ था,

एप्रैम मूरतों का संगी हो गया है; इसलिये उसको रहने दे"। होशे 4:7। मसीह आपके लिए ऐसे न रोये जैसे वह यरूशलेम के ऊपर रोया, यह कहकर, "हे यरूशलेम तू जो ! हे यरूशलेम ! भविष्यद्वक्ताओं को मार डालती है, और जो तेरे पास भेजे गए उन्हें पत्थरवाह करती है; कितनी बार मैं ने यह चाहा, कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखो के नीचे इकट्ठे करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठे करूं, पर तुम ने यह न चाहा। देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है, और मैं तुम से कहता हूं; जब तक तुम न कहोगे, कि धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है, तब तक तुम मुझे फिर कभी न देखोगे"। लूका 13:34-35

(12) जब एक पापी पश्चाताप करता है तब स्वर्ग में क्या होता है?

मैं तुम से कहता हूं; कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में भी स्वर्ग में इतना ही आनन्द होगा, जितना कि निन्नानवे ऐसे धमिर्यों के विषय नहीं होता, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं॥ (लूका 15:7)

पीड़ितों, परखे गयों और परीक्षा किये गयों के घनिष्टता में आना स्वर्गदूतों का कार्य है। वे दिन-रात उन सभी के लिए परिश्रम करते हैं जिनके लिए मसीह मरा। जब पापियों को स्वंय को उद्धारकर्ता को देने की अगुवाई की जाती है तो, स्वर्गदूत स्वर्ग में आनदं का समाचार लेकर जाते हैं, और तब स्वर्गीय मनुष्योंके बीच आनन्द मनाया जाता है। "मैं तुम से कहता हूं; कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में भी स्वर्ग में इतना ही आनन्द होगा, जितना कि निन्नानवे ऐसे धमिर्यों के विषय नहीं होता, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं॥लूका 15:7

हमारे द्वारा किये गए सफलतापूर्वक कार्यों का लेखा रखा जाता है कैसे अन्धकार को छोड़कर मसीह के ज्ञान को फैलाया। जैसे हमारे कार्य को परमेश्वर के सामने गिना जाता है, स्वर्गदूतों के बीच आनन्द उमड़ पड़ता है।

(13) उस समझ से बाहर प्रेम जिससे पिता ने हमें क्षमा किया और छुटकारा दिया, उसका क्या निमन्त्रण है और हमारी उसमे क्या भूमिका है?

मैं ने तेरे अपराधों को काली घटा के समान और तेरे पापों को बादल के समान मिटा दिया है; मेरी ओर फिर लौट आ,

क्योंकि मैं ने तुझे छुड़ा लिया है"। (यशायाह 44:22)

क्या आप, पाठकों ने अपना मार्ग ले लिया है? क्या आप परमेश्वर से अलग हो गए हैं? क्या आप अधर्म के फल से दावत कर रहे हैं, केवल इसलिए वह राख में बदलकर आपके ओठो में लग जाये? और अब, आपकी योजनायें विफल और आशाएं मृतक, क्या आप अकेले बैठे हैं और सुनसान? वह आवाज जो आपके हृदय से लम्बे समय से बातचीत कर रही है, परन्तु तुम सुनते नहीं, वह विशिष्ट और साफ़ आती है, "उठो, चले जाओक्योंकि यह ! तुम्हारा विश्राम स्थान नहीं है; इसका कारण वह अशुद्धता है जो कठिन दुख के साथ तुम्हारा नाश करेगी:"। मीका 2:10

अपने पिता के घर वापिस लौट जाओ। वह तुमसे कहता है, "क्योंकि मैं ने तुझे छुड़ा लिया है" कान लगाओ, और मेरे पास आओ; सुनो, तब तुम जीवित रहोगे; और मैं तुम्हारे साथ सदा की वाचा बान्धूंगा अर्थात दाऊद पर की अटल करूणा की वाचा"। (यशायाह 44:22; 55:3)

मसीह से दूर रहने के लिए शत्रु की सलाह को न सुनें जब तक आप स्वंय को बेहतर न बना लें, जब तक आप परमेश्वर के पास आने के लिए बेहतर नहीं हैं। यदि आप तब तक इन्तजार करें तब तक आप नहीं आएंगें। जब शैतान आपके गंदे वस्त्रों को दिखाता है, उद्धारकर्ता के वायदे को याद करें, "जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा, उसे मैं कभी न निकालूंगा। यूहन्ना 6:37 शत्रु से कहें यीशु मसीह का लहू सब पापों से शुद्ध करता है। दाऊद की प्रार्थना को अपनी प्रार्थना बनायें। "जूफा से मुझे शुद्ध कर, तो मैं पवित्र हो जाऊंगा; मुझे धो, और मैं हिम से भी अधिक श्वेत बनूंगा"। भजनसहिता 51:7

सृष्टिकर्ता जो संसार का रचयिता है उसके पास अब्बा पिता के नाम से जाना मेरा सौभाग्य है और उसकी योजना को ग्रहण करना।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मेरा हृदय छुआ गया तब जैसे मैं उड़ाऊ पुत्र के दृष्टांत के बारे में सीखता हूँ और प्रेम पिता जो मेरे पिता परमेश्वर को दिखाता है। कैसे, पुत्र जब बलवा कर रहा था, पिता उसे लगातार खोजता रहा कैसे वह आपको और मुझे।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं अपने विद्रोह से मुड़ता हूँ और मैं धन्यवादित हूँ कि उसमे कोई ताना कसा जाना या मेरी दुष्टता को दिखाया जाना शामिल नहीं है। वह मेरी बुराई को क्षमा करता है और पवित्रशास्त्र के अनुसार मेरे पाप को स्मरण नहीं करता।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

यह अदभुत है कैसे पूरा स्वर्ग एक पापी के पिता के प्रेम की ओर लौटने पर आनंदित होता है। मैं आश्चर्यचकित हूँ कि उन्होंने मेरे लिए ऐसा किया

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं सर्वदा धन्यवादी हूँ जब मैं वापिस पाप में पड़ता हूँ पिता मुझे नहीं छोड़ता वरन अपने पास बुलाता है।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

यह मेरे हृदय की प्रार्थना है कि मैं पवित्र आत्मा को शोकित नहीं करता और उससे मुह न मोडूंगा जिसने मेरे लिए सब कुछ किया। मै अपने जीवन को जीना चाहता हूँ ताकि मैं परमेश्वर के नाम को महिमा दे सकूं और निरंतर उसकी संतान कहला सकूं।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

पाठ 4

हमारे चरित्रों के पवित्रीकरण में

परमेश्वर के प्रेम का प्रगटीकरण

(1) परमेश्वर के चरित्र की कौन-सी चार विशेषताएं है जो वह हम में भरना चाहता है, और उसके प्रेम के वायदे जिनका हम दावा कर सकते हैं?

और यहोवा उसके साम्हने हो कर यों प्रचार करता हुआ चला, कि यहोवा, यहोवा, ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करूणामय और सत्य, (निर्गमन 34:6)

अपने प्राण को उसके हाथों में सौंप दें जैसे कि एक विश्वासयोग्य सृष्टिकर्ता। उसकी दया निश्चित है, उसकी वाचा अनन्त है। धन्य है वह मनुष्य जिसकी आशा उसका उसके यहोवा परमेश्वर में है, जिसका सत्य सर्वदा बना रहता है। तुम्हारा मन उसके वायदों को ग्रहण करे और उनको पकड़े रहों। यदि आप अपने मन में उस महान आशा को याद नहीं कर करते जो उन कीमती वायदों में दी गई है, उन्हें दूसरों के होठों से सुनें। क्या परिपूर्णता, क्या प्रेम और क्या आश्वासन मिलता है उन शब्दों में जो स्वंय परमेश्वर के होठों से निकलते हैं, उसके प्रेम की घोषणा, उसकी दया और रूचि उसके बच्चों के परवाह में।

परमेश्वर उसके पीड़ितों के लिए दया से भरा हुआ है। कौन-से पाप बहुत बड़े हैं उसके क्षमा करने के लिए? वह दयालु है, और वह असीमित रूप से ज्यादा तैयार और ज्यादा खुश है क्षमा करने के लिए दंडित करने के बजाय। वह दयालु है, और हम में गलतियां नहीं ढूढ़ता; वह हमारी रचना को जानता है; वह स्मरण करता हैं कि हम मिट्टी ही हैं। उसकी हमान दया और कृपा में वह हमारे विश्वास से भटकने को चंगा करता है, हमें प्रेम करता है जब हम पापी ही हैं, उसकी ज्योति को हम से दूर नहीं करता, परन्तु मसीह के कारण हम पर प्रकाशमान होता है।

(2) पिता से इस प्रार्थना में, यीशु कैसे पिता के प्रेम को हम पर प्रगट करता है?

मैं उन में और तू मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएं, और जगत जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही उन से प्रेम रखा। (यूहन्ना 17:23)

यहाँ उस अदभुत सत्य की घोषणा है, उस प्रोत्साहन और शांति से भरा हुआ, कि परमेश्वर हम से वैसे प्रेम करता है जैसे वह अपने पुत्र से। यही यीशु ने अपनी अंतिम प्रार्थना में अपने चेलों को बताया, "तूने उनसे प्रेम किया, जैसे मुझसे प्रेम किया"। (यूहन्ना 17:23)

परमेश्वर के निकट आने का सबसे पहला कदम यह जानना और विश्वास करना है जो प्रेम उसका हमारे लिए है (1 यूहन्ना 4:16); यह उसके प्रेम के प्रेम के कारण ही हम उसके पास आते हैं।

ऐसा विश्वास करना अच्छा लगता है कि पिता मानवीय परिवार के किसी भी सदस्य से प्रेम कर सकता है और करता भी है। परन्तु हमें आश्वासन है की वह करता है, और यह आश्वासन प्रत्येक हृदय में आनन्द लेकर आना चाहिये, सबसे ऊच्च सम्मान को जगाना और न कहे गए धन्यवाद को बुलाना। परमेश्वर प्रेम है यह निश्चित नहीं है और अवास्तविक है परन्तु एक जीवित सत्य है। {एचपी 58}

(3) किसी भी पिता की तरह जो अपने बच्चों से प्रेम करता है, परमेश्वर हमें प्रतिष्ठित करने के लिए या हमारे चरित्र को सुधारने के लिए क्या करता है?

क्योंकि प्रभु, जिस से प्रेम करता है, उस की ताड़ना भी करता है; और जिसे पुत्र बना लेता है, उस को कोड़े भी लगाता है। (इब्रानियों 12:6)

धीरज, निरंतर अनुशासन चिंताशील स्नेह का प्रकटीकरण है। अनुभव जो हमारे चरित्र को सिद्ध और प्रतिष्ठित बनाते हैं उनमें उत्तम प्रमाण सम्मिलित है कि परमेश्वर हमसे प्रेम करता है। चाहे यह बच्चा, या युवा मसीही, अनुशासन चरित्र के लिए महत्वपूर्ण है।

परमेश्वर जो हमारे चरित्र को अच्छे बनाने में जिस भी प्रकार का अनुशासन शामिल है उसका प्रयोग करता है, या उन अनुभवों को अनुभवों को अनुमति देता है जो उस उद्देश्य को पूरा कर सकें। परन्तु, इस वाक्यांश को ज्यादा शाब्दिक रूप से जोर देकर न देखा जाये, जैसे परमेश्वर ने व्यक्तिगत या सीधे रूप से पीड़ा और दुःख को अनुमति दी जिनमें अनुशासन से जुड़े जीवन के अनुभव शामिल हैं।

(4) परमेश्वर अपने प्रेम के कारण, और जो हमारे जीवन में भलाई उत्पन्न करता है, वह उसके साथ क्या करता है जो शैतान श्राप में बदलना चाहता है?

परन्तु तेरे परमेश्वर यहोवा ने बिलाम की ना सुनी; किन्तु तेरे परमेश्वर यहोवा ने तेरे निमित्त उसके शाप को आशीष से पलट दिया, इसलिये कि तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ से प्रेम रखता था। (व्यवस्थाविवरण 23:5)

जो हमे बेचैनी और पराजय जैसा दिखता है परमेश्वर हमें वहां से विजय दे सकता है। हम परमेश्वर को भूलने के खतरे में है, उन चीजों को देखकर जो दिखती हैं, विश्वास की आखों से उन चीजों को देखने की बजाय जो चीजें अदृश्य हैं। जब अभाग्य या विपत्ति आती है, हम परमेश्वर को निर्दयता और अनादर के साथ शिकायत करते हैं।यदि वह हमारी उपयोगिता को किसी तरीके से दूर कर दे, हम दुखी हो जाते हैं, और सोचना बंद कर देते हैं इस प्रकार परमेश्वर हमारे लिए कुछ भला करना चाहता है। हमें यह सीखना है की ताड़ना उसकी महान योजना का भाग है और यह कि उसकी ताड़ना की लाठी के नीचे मसीही उस स्वामी की सेवा में ज्यादा कर सकते हैं इसकी अपेक्षा जब सक्रिय सेवा में करते हैं।

पौलुस इस विचार को आगे ले जाते हुए कहता है (इब्रानियों 12:5-11) कि हमने अपने शारीरिक पिताओं का सम्मान किया जब उन्होंने हमें अनुशासित किया। शायद बच्चे होते हुए हमने इस बात को अच्छे हीं समझा कि वह इसलिए ऐसा करते थे क्योंकी वे हमसे प्रेम करते थे। परमेश्वर के बच्चों को ये विश्वास होना चाहिये कि सभी चीजें परमेश्वर के नियन्त्रण में हैं जो उनमें आन्दित होता है

और जो उन परिस्थितियों को हमारी भलाई के लिए इस्तेमाल करेगा यदि वे प्रसन्नतापूर्वक उसके अनुशासन के प्रति स्वंय को आधीन करें और उन बातों को सीखें जो वह सिखाना चाहता है।

(5) परमेश्वर किसको डांटता और ताड़ना करता है?
मैं जिन जिन से प्रीति रखता हूं, उन सब को उलाहना और ताड़ना देता हूं, इसलिये सरगर्म हो, और मन फिरा।(प्रकाशितवाक्य 3:19)

यीशु ने कहा "पिता स्वंय तुमसे प्रेम करता है"। यदि हमारा विश्वास परमेश्वर पर केन्द्रित है, मसीह के द्वारा, यह साबित होगा "हमारे प्राण का लंगर, दोनों निश्चित और दृढ़, और जो पर्दे के भीतर से प्रवेश करता है; जहाँ हमारे लिए मार्ग बनाने वाला पहले से प्रवेश कर चुका है"। यह सत्य है कि निराशाएं आएंगी; हमेशा क्लेशों की आशा रखनी है; परन्तु हमें सब कुछ परमेश्वर के हाथों में सौपना है, बड़ा हो या छोटा। वह हमारे दुखों के बढने से हैरान नहीं होता और न ही उस पर हमारे बोझों का भार विजयी हो सकता।

उसकी परवाह प्रत्येक घराने पर होता है और प्रत्येक व्यक्ति को घेरे रहता है; वह हमारे सारे व्यापार में और सारे दुखों में ध्यान रखता है। हर एक आंसू का लेखा रखता है; वह हमारी कमजोरियों की भावनाओं से स्पर्श होता है। साड़ी विपत्तियां और क्लेश जो हमारे जीवन में आते हैं वह अनुमति के साथ आते हैं, ताकि उसके प्रेमपूर्ण उद्देश्य हमारे जीवन में सम्पूर्ण हो जाएं, "ताकि हम उसकी पवित्रता में सहभागी हो सकें" और उस प्रकार उसके आनन्द की परिपूर्णता में भागी हो सकें जो उसकी उपस्थिति में है।

पीड़ित और परीक्षा किये गए मनुष्य इस बात को स्मरण करें कि जब ताड़ना उन पर आती है, यह परमेश्वर है जो उन्हें मृत्यु से बचाएगा। जिन मनुष्यों पर ताड़ना आती है, याद रखें "मैं जिन जिन से प्रीति रखता हूं, उन सब को उलाहना और ताड़ना देता हूं, इसलिये सरगर्म हो, और मन फिरा"। (प्रकाशितवाक्य 3:19)

(6) हमारी क्या भूमिका है जब परमेश्वर हमें उलाहना देता या ताड़ना करता है?

मैं जिन जिन से प्रीति रखता हूं, उन सब को उलाहना और ताड़ना देता हूं, इसलिये सरगर्म हो, और मन फिरा"। (प्रकाशितवाक्य 3:19)

परमेश्वर कहता है, "जिन-जिन से मैं प्रीति रखता हूँ, उनकी मैं ताड़ना करता हूँ: इसलिए जोशीले बने, और पश्चाताप करें"...मसीह कुचले हुओं को उठाता है और दुखी मन को उभारता है जब तक वह उसका घर न बन जाए।

परन्तु जब क्लेश आते हैं, हम में से कितने लोग याकूब के समान होते हैं! हम सोचते हैं शत्रु का हाथ; और हम अन्धकार में बिना देखे लड़ते हैं जब तक हमारा बल नहीं खत्म हो जाता, और हमें कोई शांति या छुटकारा नहीं मिलता। याकूब के लिए यह आलौकिक स्पर्श भोर में उसका प्रगट होना था जिसके साथ वह संघर्ष कर रहा था- वाचा का स्वर्गदूत; और, विलाप करना और असहाय, वह असीमित प्रेम की छाती पर गिरा, उस आशीष को प्राप्त करने के लिए जो उसका मन चाहता था। हमें यह भी सीखना है कि पीड़ा का अर्थ है उपकार, और परमेश्वर की ताड़ना को न तजना न उसकी डांट पर मुर्छित होना।

सभी सच्चे उपचार का लक्ष्य गलत व्यक्ति में सही धारणा को लाना है और एक नई क्रिया को उत्साहित करना। ताड़ना शब्द पैदयूओ, "बच्चों को प्रशिक्षित करना," "दंड देना," विशेषकर जैसे माता या पिता बच्चे को सिखाने या सुधारने के उद्देश्य से ताड़ना करते हैं। एक मसीही पर ताड़ना तब आती है जब मसीही की डांट को ग्रहण नहीं किया जाता। न तो उसकी डांट और न ही उसकी ताड़ना उसके क्रोध का प्रकटीकरण है- जब मनुष्य अपना सयंम खो बैठता है- परन्तु जब उसका जोरदार प्रेम जिसका उद्देश्य पापी को पश्चाताप तक अगुवाई करना है।

(7) अपनी डांट और ताड़ना के साथ परमेश्वर अपने लोगों से अपनी करुणा के विषय क्या वायदा करता है?

परन्तु मैं अपनी करूणा उस पर से न हटाऊंगा, और न सच्चाई त्याग कर झूठा ठहरूंगा। (भजनसहिता 89:33)

परमेश्वर का वचन शपथबद्ध है। मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूँ; इस कारण मैं ने तुझ पर अपनी करुणा बनाए रखी है"। (यिर्मियाह 31:3) क्रोध के झकोरे में आकर मैं ने पल भर के लिये तुझ से मुंह छिपाया था, परन्तु अब अनन्त करूणा से मैं तुझ पर दया करूंगा, तेरे छुड़ाने वाले यहोवा का यही वचन है"। (यशायाह 54:8)

कितना अदभुत प्रेम है, कि परमेश्वर संदेह और मानवीय डर, कमजोरी पर सवाल उठाने वाले कारणों को दूर करता है और उस कापते हुए हाथ को थामता है जो विश्वास से उसकी ओर बढ़ते हैं;

और वह गुणवंत आश्वासनों और सुरक्षाओं के साथ सहायता करता है। उसने हमसे हमारी आज्ञाकारिता के कारण हमसे हमारे साथ वाचा बांधी है, और वह हमारी चीजों की अपनी समझ के कारण भेँट करता है।

हम सोचते हैं हमारे भाइयों से एक शपथ या वायदा, यदि लेखा रखा जाए, तब भी एक आश्वासन की जरूरत होती है। यीशु ने ये सारे डरों को दूर किया है, और उसने आने वायदे को शपथ के साथ पुष्टि किया है: "जबकि परमेश्वर, बहुतायत से यह चाहता है कि उसके वायदे के वारिसों को उसका अपरिवर्तनीय वचन, शपथ के साथ पुष्टि...." हमारा परमेश्वर अपने वायदों में हमारे विश्वास को मजबूत करके इससे बढ़कर और क्या कर सकता है?

तुम्हारा मन परमेश्वर की भलाईयों पर लगने पाए, उस महान प्रेम पर जिससे उसने हमसे प्रेम किया, जिसका प्रमाण छुटकारे के कार्य में दिया गया। यदि उसने हमसे प्रेम नहीं किया और हमें मूल्यवान नहीं समझा, तब यह महान बलिदान नहीं होता। वह अपनी दया और अनुग्रह में भला है। तुम्हारा हृदय और मन ऐसा होने पाए जैसे एक थका हुआ बच्चा अपनी माँ के बाहों में।

(8) वे कौन-सी विपत्तियां हैं जो परमेश्वर कई बार हमारे जीवन में आने देता है?

क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है। और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं। (2 कुरन्थियों 4:17-18)

यदि पौलुस, हर तरीके से समस्या में, विकल में, सताव में, अपनी पीडाओं को क्षणभंगुर कह सकता था, तो आज मसीही किस बात की शिकायत करते हैं? हमारी पीड़ा पौलुस की बहुत सी पीडाओं की तुलना में कितनी तुच्छ हैं! वे उस विजय पाने वाले की महान महिमा की तुलना के योग्य नहीं हैं। वे परमेश्वर की कलाकृति, चरित्र की सिद्धता के लिए नियुक्त हैं। परन्तु चाहे एक मसीही की पीड़ा और दर्द कितना भी महान क्यों न हो, चाहे मसीही की हानि या पीड़ा कितनी भी बड़ी क्यों न हो, उसे परमेश्वर में आनंदित होना चाहिये, यह ध्यान रखते हुए कि सब चीजें मिलकर भलाई को उत्पन्न करती हैं। {एलएचयू 248}

(9) कौन-सा वरदान चरित्र के विकास के लिए आवश्यक है, परमेश्वर उन्हें देता है जो उसे ग्रहण करेंगें?

उसी को परमेश्वर ने प्रभु और उद्धारक ठहराकर, अपने दाहिने हाथ से सर्वोच्च कर दिया, कि वह इस्त्राएलियों को मन फिराव की शक्ति और पापों की क्षमा प्रदान करे। (प्रेरितों 5:31)

पापी को खोई हुई भेड़ के रूप में दिखाया गया है, और एक खोई हुई भेड़ तब तक भेड़शाला में वापिस नहीं आती जब तक चरवाहा उसके पीछे न जाये या उसको खोज कर न लेकर आये। कोई भी मनुष्य स्वंय पश्चाताप नहीं कर सकता, और धार्मिकता की आशीष के योग्य नहो बना सकता। परमेश्वर यीशु मसीह निरंतर पापी को अपनी ओर खींचने का प्रयत्न करता है ताकि वह उसे देख सके, परमेश्वर का मेमना, जो इस संसार के पापों को अपने ऊपर ले लेता है। हम अपने आत्मिक जीवन में आगे नहीं बढ़ सकते जब तक यीशु अपनी और आकर्षित न करे और मन को छुए, और उस अनुभव की ओर अगुवाई करे कि पश्चाताप जिसमे गहरा पश्चाताप शामिल हो।

जब महायाजकों और सदूकियों के सामने, पतरस ने स्पष्टता से इस बात को प्रस्तुत किया कि पश्चाताप परमेश्वर का वरदान है। मसीह के विषय में बताते हुए, उसने कहा, " उसी को परमेश्वर ने प्रभु और उद्धारक ठहराकर, अपने दाहिने हाथ से सर्वोच्च कर दिया, कि वह इस्त्राएलियों को मन फिराव की शक्ति और पापों की क्षमा प्रदान करे"। (प्रेरितों के काम 5:31) । पश्चाताप क्षमा और मेलमिलाप से कम बढ़कर वरदान नहीं है, यह उसकी सामर्थ और वरदान के कारण है। पिसे हुए मन का अनुग्रह उसके द्वारा ही आता है, और उसी के द्वारा मेलमिलाप आता है।

आपके सामने बाइबल के महान वायदे होने के बावजूद भी, आप संदेह को स्थान दे सकते हैं? क्या आप विश्वास कर सकते हैं कि जब पापी वापिस लौटने की चाह रखता है, अपने पापों को छोड़ने की ईच्छा, परमेश्वर कठोरता से उसे आपने चरणों में पश्चाताप में आने से रोकता है? ऐसे विचारों से दूर! इन विचारों से ज्यादा कुछ और अपमानजनक नहीं हो सकता। आपके मन को और कोई विचार इतनी ज्यादा ठेस नहीं पहुचायेंगें जितना कि स्वर्गीय पिता के विषय में सोचे गए ये विचार। हमारा सारा आत्मिक जीवन परमेश्वर के प्रति ऐसी विचारधारा को आशाहीनता को पकड़ लेगा। ऐसे विचार परमेश्वर को खोजने या उसकी सेवा करने से निरुत्साहित करते हैं। हमें परमेश्वर के विषय में एक न्यायधीश के

रुप में नहीं चाहिये जो हर वक्त सजा सुनाने के लिए तैयार रहता है। वह पाप से घृणा करता है; परन्तु पापियों से प्रेम करने से उसने स्वंय को दे दिया, मसीह के व्यक्तित्व के में, ताकि जो विश्वास करें वे उद्धार पाएं, और महिमा के राज्य में अनंत आशीषें पाएं।

(10) क्योंकी परमेश्वर दयालु, प्रेमी है, और दयावान है, उसने हर एक पश्चाताप करने वाले पापी के लिए क्या किया?

पर जब हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की कृपा, और मनुष्यों पर उसकी प्रीति प्रगट हुई। तो उस ने हमारा उद्धार कियाऔर : यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार, नए जन्म, (तीतुस 3:4-5)

उसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर के पास आ सकता है। "उन धार्मिकता के कामों के द्वारा नहीं जो हमने किये हैं, परन्तु उसकी दया के कारण जिसके द्वारा उसने हमें बचाया है"। तीतुस 3:5। क्या आप ऐसा सोचते हैं क्योंकी आप पापी हैं आप परमेश्वर से आशीषें पाने की आशा नहीं रख सकते? याद रखें मसीह इस संसार में पापियों को बचाने के लिए आया। हमारे पास परमेश्वर को सिफारिश करने के लिए कुछ भी नहीं है; जो निवेदन हम कर सकते हैं वह असहाय स्थिति है, जो उसकी छुड़ाने वाली सामर्थ को बाध्यता बनाता है। सभी आत्म-निर्भरता को छोड़कर, हम क्रूस के कलवरी की ओर देख कर कहें: "अपने हाथ में मै कोई मूल्य नहीं लाता, केवल उस क्रूस को मै पकड़ता हूँ"।

मैं धन्यवादी हूँ परमेश्वर मुझ से बहुत प्रेम करता है, एक पिता के समान, वह मुझसे बहुत प्रेम करता है डांट और अनुशासन मेरी भलाई के लिए।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं उसकी दया के लिए धन्यवादित हूँ, धीरज, और बहुतायत भलाई और यह कि वह मेरे चरित्र में जीवन बचाने वाले गुणों को डालता है।।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं इस बात को जानता हूँ वह बुराई को उत्पन्न नहीं करता परन्तु मैं इस बात से खुश हूँ कि वह उसको मेरी भलाई और मेरे चरित्र को सिद्ध बनाने के लिए इस्तेमाल करता है।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं देखता हूँ जब परमेश्वर मेरी ताड़ना करता है मुझे पश्चाताप का दान ग्रहण करना चाहिये जो उसके साथ आता है ताकि वह मेरे भीतर रह सके और मैं उसका चरित्र दिखा सकूं।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं धन्यवादित हूँ कि परमेश्वर की महान करुणा कभी बदलती नहीं और क्योंकी वह मुझसे बहुत प्रेम करता है वह मुझे स्वतंत्रता से उसके नाम की महिमा के लिए वह सभी वस्तुएं देगा।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

पाठ 5

परमेश्वर का प्रेम अनुग्रह के द्वारा प्रकट होना

(1) प्रेरित किस नाम से उस अदभुत सेवकाई को पुकारता है जो परमेश्वर अपने महान प्रेम में प्रकट कर रहा है हमारी दोष से भरी और नाश हुई मानवजाति को?

और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिस ने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेलमिलाप कर लिया-, और मेलमिलाप-की सेवा हमें सौंप दी है। (2 कुरन्थियों 5:18)

प्रेरित कहता है: "परमेश्वर मसीह में था, इस संसार को आपने साथ मेलमिलाप कारते हुए"। केवल तभी जब हम परमेश्वर के छुटकारे की योजना पर ध्यान लगाते हैं तो हम परमेश्वर के चरित्र की सराहना करते हैं। सृष्टि का कार्य उसके प्रेम का प्रकटीकरण था; परन्तु परमेश्वर का दान केवल इस पापमय और नाशवान पीड़ी को बचाने में उसकी अलौकिक कोमलता दया की असीमित गहराई को प्रकट करता है। "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया, कि उसने इकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनंत जीवन पाए"। जबकि परमेश्वर की व्यवस्था बाई हुई है, और उसका न्याय महिमान्वित है, एक पापी को क्षमा मिल सकती है। स्वर्ग का सबसे उत्तम वरदान जो स्वर्ग की और से था और उंडेला गया की परमेश्वर "न्यायी हो सके, और उसके न्याय का समर्थक जो यीशु में विश्वास करता है"। उस वरदान के द्वारा मनुष्य इस पाप के अनादर और बर्बादी से उठकर परमेश्वर के बच्चे बनते हैं। पौलुस कहता है: "तुमने लेपालक का आत्मा पाया है, जिससे हम चिल्लाते हैं, अब्बा, पिता"।

(2) परमेश्वर के समझ से बाहर प्रेम में, कौन-सा महान वरदान दिया गया था कि प्रत्येक विश्वासी उद्धार पाए?

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।(यूहन्ना 3:16)

यह सन्देश सम्पूर्ण संसार के लिए है, ताकि "जो कोई" का तात्पर्य है कि जो भी उन शर्तों की पालना करेगा उस आशीष का भागी बनेगा। सभी जो यीशु की ओर ताकते हैं, उस को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता करके ग्रहण करते हैं, "नाश" नहीं होंगे"। परन्तु अनंत जीवन पाए"। हर एक प्रयोजन किया जाता है ताकि हम उस अनंत प्रतिफल को प्राप्त कर सकें।

परमेश्वर के प्रेम का प्रकाशन क्रूस पर केन्द्रित है। इसकी सम्पूर्ण महत्वपूर्णता को जीभ से कहा नहीं जा सकता; कलम से लिखा नहीं जा सकता; दिमाग उसे समझ नहीं सकता। क्रूस के कलवरी की ओर देखकर हम केवल यही कह सकते हैं: " परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया, कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अन्नत जीवन पाए"। (यूहन्ना 3:16)

यीशु हमारे पापों के लिए बलिदान हुआ, यीशु मुर्दों में से जी उठा, मसीह स्वर्ग में उठा लिया गया, यह उद्धार का विज्ञान है कि हमें सीखना है और सिखाना है।

(3) उसके महान प्रेम के कारण, किस विशेष उद्देश्य से परमेश्वर ने अपने पुत्र को <u>नही</u> भेजा?

परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा, कि जगत पर दंड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। (यूहन्ना 3:17)

शायद परमेश्वर ने अपने पुत्र को इस संसार में दंड देने के लिए भेजा होगा। परन्तु अदभुत अनुग्रह! यीशु बचाने के लिए आया, नाश करने के लिए नहीं। प्रेरितों ने कभी भी इस शीर्षक को उद्धारकर्ता के अतुल्य प्रेम की प्रेरणा के साथ अपने हृदयों में प्रकाशमान नहीं किया।

परमेश्वर चाहता है की सभी उद्धार पाएं, और उसके पुत्र का महान वरदान उनके लिए उद्धार लेकर आया। परन्तु परमेश्वर की ईच्छा की प्रत्येक व्यक्ति की व्यक्तिगत ईच्छा से पुष्टि होनी चाहिये ताकि यह उसके लिए प्रभावशाली बन सके। उद्धार केवल विश्वास करने वालों और मसीह को ग्रहण करने वालों के लिए ही है (देखें यूहन्ना 1:12; 3:16)।

(4) खोये हुओं के दंड का क्या कारण है?

और दंड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उन के काम बुरे थे। (यूहन्ना 3:19)

यूहन्ना हमें बताता है कि जो पुत्र पर विश्वास नहीं करते "दंड के आधीन हैं," क्योंकी उन्होंने विश्वास करने से इन्कारकिया। परमेश्वर का अपने पुत्र को इस संसार में भेजने का उद्देश्य संसार का बचाना

है। यदि, उद्धारकर्ता के आगमन के बाद, यदि कुछ लोग दंड के भागी बनते हैं, तो परमेश्वर को दोष नहीं दिया जा सकता। दंड का प्रमाण, सच्ची ज्योति के आने से नहीं मिलता, मनुष्य जानबूझकर ज्योति से मुह फेरते हैं उनके अंधकार की पसंद से।

(5) परमेश्वर ने हमारे प्रति अपना महान कैसे प्रदर्शित किया हमें उस विनाश से बचाने के लिए जिसके हम योग्य थे?

जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इस से प्रगट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं। (1 यूहन्ना 4:9)

जब आदम के पाप ने मानवजाती को आशाहीन बर्बादी में धकेल दिया, परमेश्वर स्वंय को पाप में गिरे मनुष्य से अलग कर लिया होता। उसने उन्हें पापियों के समान व्यवहार किया होता जिस व्यवहार के योग्य थे। उसने स्वर्गदूतों को उसका क्रोध उड़ेलने की आज्ञा दी होती। उसने इस गहरे दाग को इस विश्व से अलग कर दिया होता। परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। उनको अपनी उपस्थिति से निर्वासित करने की बजाय, वह इस पाप से प्रभावित पीड़ी के पास आया। उसने अपने पुत्र को हमारी हड्डी में की हड्डी और मांस में का मांस बनने के लिए दिया।

मनुष्य का परमेश्वर का वरदान सारी गणना से बाहर है। कुछ भी नहीं रख छोड़ा। परमेश्वर ऐसा कहने की अनुमति नहीं देगा कि उसने और ज्यादा किया होता या मानवता पर प्रेम का बड़ा माप प्रकट किया होता। मसीह के वरदान में उसने सारा स्वर्ग दे दिया।

(6) अपने महान प्रेम के कारण, उसने किस उद्देश्य से उसने पुत्र को पृथ्वी पर भेजा?

प्रेम इस में नहीं कि हम ने परमेश्वर ने प्रेम किया; पर इस में है, कि उस ने हम से प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिये अपने पुत्र को भेजा। (1 यूहन्ना 4:10)

जब, अधर्म के परिणामस्वरूप, आदम और हव्वा सारी आशा से दूर हो गए थे, जब न्याय ने पापी की मृत्यु की मांग की, मसीह ने स्वंय को बलिदान होने के लिए दे दिया। "यहाँ प्रेम में, ऐसा नहीं की हमने परमेश्वर से प्रेम किया, परन्तु उसने हमसे प्रेम किया, और उसने पापों के लिए हमारे स्थान पर मरने के लिए दे दिया"। "हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे; हम में से हर एक ने

अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया"। 1 यूहन्ना 4:10; यशायाह 53:6

मनुष्य के पास केवल ही महायाजक है, एक मध्यस्थ, जो अधर्मों को क्षमा करने में सक्षम है। क्या हमारा हृदय उसके प्रति धन्यवाद से नहीं भर उठाना चाहिये जिसने स्वंय को हमारे पापों के लिए बलिदान होने के लिए दे दिया? उस प्रेम के बारे में सोचें जो पिता ने हमारे लिए प्रदर्शित किया, वह प्रेम जो उसने हमारे प्रति प्रकट किया। हम उसके प्रेम को माप नहीं सकते। कोई माप नहीं है। हमें कलवरी पर अपना ध्यान लगा सकते हैं, उस मेमने की ओर जो सृष्टि के निर्माण से पहले हमारे लिए वध हुआ। यह असीमित बलिदान है। क्या हम असीमितता को माप सकते हैं या समझ सकते हैं?

(7) परमेश्वर ने मसीह को क्या करने के लिए कहा जिसने उसके अतुल्य प्रेम का अचूक प्रमाण दिया?

परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा। (रोमियो 5:8)

यह सुसमाचार की महिमा है कि यह पाप में गिरे मानवजाती के पुन:स्थापना के सिद्धांत पर केन्द्रित है अलौकिक स्वरूप परोपकार की निरंतर प्रकटीकरण में। यह कार्य स्वर्गीय न्यायालय में शुरू है। वहां परमेश्वर ने मानवजाति को प्रेम का अचूक प्रमाण दिया जिसके कारण उसने उनको माना। उसने "जगत से ऐसा प्रेम किया, कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो हो, परन्तु अन्नत जीवन पाए"। यूहन्ना 3:16

ईश्वरत्व इस मानवजाति के लिए दया से भर गया, और पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा ने अपने आप को छुटकारे के कार्य के लिए दे दिया। उस योजना को पूर्ण रूप से चलाने के लिए, ऐसा निर्णय लिया गया कि मसीह, परमेश्वर का इकलौता पुत्र, पापों के लिए स्वंय का बलिदान देगा। कौन-सा वाक्य उसके प्रेम की गहराई को समझ सकता है? परमेश्वर मनुष्य के लिए यह असम्भव कर देता है कि उसने और ज्यादा किया होता। मसीह के साथ उसने स्वर्ग के सारे संसाधनों को दे दिया, ताकि मनुष्य के उत्थान में कुछ भी कमी न रहे। यहाँ प्रेम है- जिसके चिंतन से मन धन्यवाद से भर उठाना चाहिए! वाह! क्या प्रेम, कैसा अतुल्य प्रेम! इस प्रेम का चिंतन मन को सारे स्वार्थ से शुद्ध कर देगा। यह एक चेले को स्वंय का इन्कार करने के लिए अगुवाई करेगा, क्रूस उठाकर, और छुड़ाने वाले के पीछे चलने के लिए। {सीएच 222}

(8) यद्यपि, जब तक हम स्वर्ग न जाएं तब तक हम इसे नहीं समझ पायेंगें, परमेश्वर के प्रेम के प्रति हमारी क्या प्रार्थना होनी चाहिये?

सब पवित्र लोगों के साथ भली भांति समझने की शक्ति पाओ; कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊंचाई, और गहराई कितनी है। और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है, कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ॥ (इफिसियों 3:18-19)

परमेश्वर के प्रेम का चिंतन जिसका प्रकटीकरण उसके पुत्र के वरदान के रूप में इस पाप में गिरे मानवजाति के लिए हुआ हमारे हृदयों में ऐसी हलचल मचाएगा और हमारे मन की ताकतें जैसे कोई और नहीं। परमेश्वर का छुटकारा आश्चर्य का काम है; यह परमेश्वर के संसार में रहस्य है। परन्तु इस अतुल्य अनुग्रह के अभिप्राय कितने अभिन्न हैं।

यदि हमारी इन्द्रियां पाप से तेज नहीं होती और उन अंधकार से भरी तस्वीरों के चिन्तन के द्वारा जो शैतान हमारे सामने प्रस्तुत करता है, एक उत्कट और निरन्तर धन्यवाद का भाव मारे हृदयों से उसकी ओर जाएगा जो प्रतिदिन हमें उपकारों से मालामाल करता है वे उपकार जिनके हम योग्य भी नहीं हैं। छुटकारे पाए हुए का अनन्त गीत उसकी स्तुति होगा जिसने हमसे प्रेम किया और हमारे पापों को अपने लहू से धो दिया; और यदि कभी भी हम उस गीत को उसके अनुग्रह के सिंहासन के सामने गाएं हमें वह पहले यहाँ गाना है"।

(9) चाहे हम घोर बुराई में गिर जाएँ और दुख और बहुत अयोग्य हैं, कौन-सी तीन बातें हमारा प्रेम करने वाला परमेश्वर वायदा करता है?

मैं उनकी भटक जाने की आदत को दूर करूंगा; मैं सेंतमेंत उन से प्रेम करूंगा, क्योंकि मेरा क्रोध उन पर से उतर गया है। (होशे 14:4)

सभी जो परमेश्वर के शहर में प्रवेश करते हैं सीधे द्वार से प्रवेश करेंगे अति पीड़ा देने वाले कार्यों के द्वारा; "और उस में कोई अपवित्र वस्तु था घृणित काम करनेवाला, या झूठ का गढ़ने वाला, किसी रीति से प्रवेश न करेगा; पर केवल वे लोग जिन के नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं"। परन्तु कोई भी जिसमें पाप में गिरे

जरूरत है वह निराशा में देता है। बुजुर्ग पुरुष, जिनका परमेश्वर आदर करता है, उन्होंने अपने मन अशुद्ध कर दिया होगा, अभिलाषा की वेदी पर बलिदान; परन्तु यदि वे पश्चाताप करें, पापों को छोड़ दें, परमेश्वर की और मुड़ें, तब भी उनके लिए आशा है।

जो कहता है, "प्राण देने तक विश्वासी रह; तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच विचार छोड़कर यहोवा ही की ओर फिरे, वह उस पर दया करेगा, वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा"। मैं उनकी भटक जाने की आदत को दूर करूंगा; मैं सेंतमेंत उन से प्रेम करूंगा, क्योंकि मेरा क्रोध उन पर से उतर गया है। प्रकाशितवाक्य 2:10; यशायाह 55:7। "मैं उनकी भटक जाने की आदत को दूर करूंगा; मैं सेंतमेंत उन से प्रेम करूंगा, क्योंकि मेरा क्रोध उन पर से उतर गया है"। होशे 14:4

(10) किस कारण से परमेश्वर ने अपनी महान दया हमे दी ताकि हम मसीह के साथ जीवित हो सकें?

परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है; अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिस से उस ने हम से प्रेम किया। जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया; (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है।((इफिसियों 2:4-5)

परमेश्वर न केवल दयालु है; वरन दया में उनके प्रति महान है जो उसे पुकारते हैं, इसलिए नहीं की वे उसके योग्य हैं, परन्तु क्योंकी उसकी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिये नया जन्म दिया। (तीतुस 3:5; 1 पतरस 1:3)।

परमेश्वर का प्रेम कृपा से बढ़कर है; यह भलाई के कार्य की ओर अगुवाई करता है। परमेश्वर ने हमें तब प्रेम किया "जब हम पापी ही थे", और वह हमसे प्रेम करना बंद नहीं करेगा। यही प्रेम था जिसने उद्धार के कार्य को प्रेरित किया (यूहन्ना 3:16)। प्रेम उसके चरित्र का मुख्य गुण है (1 यूहन्ना 4:8), मसीह के व्यक्तित्व में उसके ऊच्च प्रकटीकरण को पाना। परमेश्वर हम पर इसलिए दया करता है क्योंकी हम पापी हैं, और वह हमसे इसलिए प्रेम करता है क्योंकी हम उसकी सृष्टि हैं। मनुष्य के लिए उसका भला कार्य, केवल परोपकारिता नहीं था या दानशील कृपालुता; यह स्नेह की क्रिया था; प्रेम की।

ऐसा परमेश्वर का अनुग्रह है, ऐसे प्रेम से परमेश्वर ने हमसे प्रेम किया, जब हम अपने अपराधों में मरे हुए थे और पापों में, अपने बुरे

कार्यों के कारण, अपने मनों में शत्रु, अनेकों वासनाओं और बुराइयों के गुलाम थे, भ्रष्ट वासनाओं के गुलाम थे, पाप और शैतान के गुलाम। कौन से प्रेम की गहराई मसीह में प्रगट हुई, जैसे वह हमारे पापों के लिए बलिदान बनता है। पवित्र आत्मा के प्रकटीकरण के द्वारा मनुष्यों की अगुवाई होती है पापों की क्षमा के लिए।

(11) किसके द्वारा परमेश्वर इस संसार पर अपना प्रेम प्रकट करता है?

यीशु ने उस से कहा; हे फिलेप्पुस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूं, और क्या तू मुझे नहीं जानता? जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा हैतू क्यों कहता है कि पिता को हमें : दिखा। (यूहन्ना 14:9)

परमेश्वर की गलतफहमी के कारण पृथ्वी अँधेरे में थी। ताकि विषादपूर्ण छाया प्रकाशमय हो, ताकि संसार परमेश्वर के पास वापस लाया जाए, शैतान की धोखा देने वाली ताकतें तोड़ी जाएं। यह बलपूर्वक नहीं किया जा सकता था। बलपूर्वक चीजों का अभ्यास परमेश्वर के राज्य के सिद्धांतों के विपरीत है; वह केवल प्रेम की की सेवा को ग्रहण करता है; और प्रेम को आज्ञा देकर नहीं किया जाता; यह अधिकार या बलपूर्वक नहीं जीता जाता। प्रेम केवल प्रेम से ही जागता है।

परमेश्वर को जानने का तात्पर्य है उससे प्रेम करना; उसका चरित्र शैतान के चरित्र के विपरीत होना चाहिये। यह कार्य केवल एक ही मनुष्य इस संसार में कर सकता है। केवल वही जो परमेश्वर के प्रेम की उसकी ऊंचाई और गहराई को जानता है इसको दूसरों तक पंहुचा सकता है। इस संसार की अँधेरी रात पर धार्मिकता का सूर्य उदय हो, "उसकी किरणों में चंगाई होगी"। मलाकी 4:2

(12) पहले क्या आया परमेश्वर का प्रेम या हमे बचाने के लिए उसके पुत्र का वरदान?

क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।(यूहन्ना 3:16)

परन्तु यह महान बलिदान परमेश्वर के हृदय में मनुष्य के लिए प्रेम उत्पन्न करने के लिए नहीं बना था, उसे हमें बचाने के लिए तैयार करने के लिए की । नहीं, नहीं! " क्योंकी परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया, की उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया"। यूहन्ना 3:16।

पिता हमसे प्रेम करता हैं, उस महान बलिदान के कारण नहीं जो हमारे लिए हुआ, परन्तु वह इसलिए हमारे स्थान पर मरा क्योंकी वह हमसे प्रेम करता है। मसीही वह रास्ता था जिसके द्वारा बह अपना असीमित प्रेम उस पाप में गिरे संसार पर उड़ेल सके। "परमेश्वर मसीह में था, इस संसार का अपने साथ मेल कराने के लिए"। 2 कुरन्थियों 5:19। परमेश्वर अपने पुत्र के साथ पीड़ित हुआ। गतसमनी की पीड़ा में, कलवरी की मृत्यु, उस असीमित प्रेम के ह्रदय ने हमारे छुटकारे के लिए दाम चुकाया।

यीशु ने कहा, "मेरा पिता मुझसे प्रेम करता है, क्योंकी स्वंय को दे देता हूँ, ताकि इसे वापिस ले सकूं"। यूहन्ना 10:17। वह यह है, "मेरे पिता ने तुमसे प्रेम किया की वह मुझ से अपने जीवन को देने के लिए प्रेम करता है तुम्हे छुड़ाने के लिए। हमारे बदले में मरने के लिए और निश्चयता, मेरे जीवन को समर्पित करने के द्वारा, तुम्हारे उत्तरदायित्वों को लेने के द्वारा, तुम्हारे अपराध, मैं मेरे पिता के लिए प्रिय हूँ, क्योंकी मेरे बलिदान के द्वारा परमेश्वर धर्मी है, और उसको धर्मी बनाने वाला जो यीशु पर विश्वास करता है"।

(13) यद्यपि हम पाप में मरे हुए थे, कौन-सी दो बातें परमेश्वर ने, अपने प्रेम और दया के कारण मसीह के द्वारा हमारे लिए की?

जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया; (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है।(और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया। (इफिसियों 2:5-6)

जीवन और महिमा के परमेश्वर ने मानवता और ईश्वरीयता को धारण किया मनुष्य को यह दिखाने के लिए कि परमेश्वर मसीह के वरदान के द्वारा हमें उसके साथ जोड़ेगा। परमेश्वर के साथ सबंध बनाये बिना कोई भी प्रसन्न नहीं रह सकता। पाप में गिरे मनुष्य को यह समझना होगा कि हमारा स्वर्गीय पिता तब तक संतुष्ट नहीं हो सकता जब तक उसका प्रेम एक पश्चातापी पापी को छुए, निष्पाप परमेश्वर के मेमने के अनुग्रह के द्वारा रूपांतरित।

स्वर्गीय बुद्धिमता का लक्ष्य यही है। प्रधान की आज्ञा के अनुसार उन्हें उनके पुन:दावे के लिए कार्य करना है जो अपने अपराधों के कारण स्वर्गीय पिता से अलग हो गए हैं। एक योजना बनाई गई है जिसके द्वारा वह अदभुत अनुग्रह और मसीह का प्रेम इस संसार पर प्रगट होगा। असीमित मूल्य जो परमेश्वर के पुत्र के द्वारा मनुष्य को बचाने के लिए बनाया गया, मसीह का प्रेम प्रकट हुआ। छुटकारे

की महिमामय योजना में इस सम्पूर्ण संसार को बचाने के लिए बहुत से प्रयोजन हैं। पापी और पाप में गिरे मनुष्य यीशु में पापों की क्षमा और मसीह के द्वारा पहनाई गई धार्मिकता से परिपूर्ण बनते हैं।

मैं मसीह का शरीर में प्रगट होने के लिए हम पर पिता का प्रेम और हमें विनाश से बचाने के लिए रहस्यमयी भक्ति के द्वारा आश्चर्यचकित हूँ!

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं उसके पुत्र के वरदान के लिये अनंतीय धन्यवादी हूँ कि परमेश्वर ने उदारता से वः दिया जो मैं भविष्य प् सकता हूँ और उसकी उपस्थिति में जीवन की आशा जो दर्द,पीड़ा और मृत्यु से हीन हो।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

यह मेरी प्रार्थना है कि परमेश्वर मुझे अपनी आत्मा से भरे कि मैं इस संसार में मसीह की अदभुत ज्योति का चुनाव करूँ पाप के अन्धकार से प्रेम करने और अन्धकार में दंड का चुनाव करने की बजाय

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

पिता मैं धन्यवाद करता हूँ मेरी विश्वास के डगमगाने को चंगा करने के वायदे के लिए, मुझ से स्वतन्त्रता से प्रेम करने के लिए, और अपने क्रोध को मुझसे अलग करने के लिए।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं सराहता हूँ कि ईश्वरत्व हमारी पूरी मानवजाती के लिए दया से प्रेरित होकर और स्वंय को अपने छुटकारे की योजना के लिए मेरे लिए दे दिया

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

आज मैं अपना हृदय, मन और प्राण को परमेश्वर दे देता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि उसके अनुग्रह और आत्मा के द्वारा, मैं उसकी महिमा के लिए अपना जीवन जी सकता हूँ। मैं उसके प्रेम और भलाई के प्रति सामर्थी गवाही देना चाहता हूँ भक्ति के रहस्य के प्रकटीकरण मसीह के मृत्यु और जीवन में मेरे लिए।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

पाठ 6

परमेश्वर का प्रेम उसके न्याय और दया के द्वारा प्रकट होना

(1) मसीह किस लिए पृथ्वी पर आया और अपना जीवन दिया आदर, परिपूर्ण करने और संभालने के लिए?

"यह न समझो, कि मैं व्यवस्था था भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूं। (मत्ती 5:17)

परमेश्वर का असीमित प्रेम सम्पूर्ण मानवजाती को बचाने के लिए अपने इकलौते पुत्र के वरदान के रूप में प्रकट हुआ। मसीह मनुष्यों पर अपने पिता का चरित्र प्रकट करने के लिए आया, और उसका जीवन ईश्वरीय कोमलता और दया से भरा हुआ था। और फिर मसीह कहता है, "जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा"।(मत्ती 5:18)

यीशु के द्वारा, परमेश्वर की दया मनुष्यों पर प्रकट हुई; परन्तु दया न्याय अलग नहीं करती। व्यवस्था परमेश्वर के चरित्र के गुणों को प्रकट करती है, और इसमें से मनुष्य उसकी पाप में गिरे अवस्था को थोड़ा भी नहीं बदला जा सकता। परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था को नहीं बदला, परन्तु उसने मनुष्य के छुटकारे के लिए, मसीह में, अपना बलिदान दिया। "और उन के अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया और उस ने मेल मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है"॥ 2 कुरन्थियों 5:19

धार्मिकता व्यवस्था की मांग करती है,--एक धर्मी जीवन, एक सिद्ध चरित्र; और इस मनुष्य के पास देने के लिए नहीं। वह परमेश्वर की पवित्र व्यवस्था के दावों को पूरा नहीं कर सकता। परन्तु मसीह, इस पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में आया, पवित्र जीवन जिया, और सिद्ध चरित्र का विकास किया। वह एक मुफ्त वरदान उसको ग्रहण करने वालों को देता है। उसका जीवन मनुष्यों के जीवन के लिए है। इसलिए उनके पास अतीत के पापों की क्षमा है, मसीह की सहनशीलता के द्वारा। इससे बढ़कर, मसीह मनुष्यों को परमेश्वर के गुणों से भर देता है। वह मानवीय चरित्र को ईश्वरीय समानता में बढ़ाता है, आत्मिक बल और सुन्दरता का भला मिश्रण। इस प्रकार व्यवस्था की धार्मिकता मसीह में विश्वासी में पूरी होती है। "और जो यीशु पर विश्वास करे, उसका भी धर्मी ठहराने वाला हो"। रोमियो 3:26

(2) क्या है "परमेश्वर जो" दया का संतुलन रखता है, और क्रूस पर प्रकट हुआ?

तौभी यहोवा इसलिये विलम्ब करता है कि तुम पर अनुग्रह करे, और इसलिये ऊंचे उठेगा कि तुम पर दया करे। क्योंकि यहोवा न्यायी परमेश्वर है; क्या ही धन्य हैं वे जो उस पर आशा लगाए रहते हैं॥ (यशायाह 30:18)

परमेश्वर का प्रेम उसके न्याय से और दया से कम नहीं प्रदर्शित होता। न्याय उसके सिंहासन की नीव है, और उसके प्रेम का फल। शैतान का उद्देश्य दया को सत्य और न्याय से अलग करना था।

वह यह साबित करना चाहता था परमेश्वर की व्यवस्था की धार्मिकता शान्ति की शत्रु है। परन्तु मसीह दिखाता है परमेश्वर की योजना में वे स्थिर रूप से आपस में जुड़े हुए हैं; एक का दूसरे के बिना अस्तित्व नहीं। "करूणा और सच्चाई आपस में मिल गई हैं; धर्म और मेल ने आपस में चुम्बन किया है"। भजनसहिता 85:10

उसके जीवन और उसकी मृत्यु के द्वारा, मसीह ने प्रमाणित किया कि परमेश्वर के न्याय ने उसकी दया को नाश नहीं किया, परन्तु यह की पाप की क्षमा मिल सके, और यह कि व्यवस्था धर्मी है, और सिद्धता से मानी जा सकती है। शैतान के दावों को हराया गया। परमेश्वर ने अपने प्रेम का अचूक प्रमाण दिया। {डीए 762}

(3) उसके महान प्रेम और ईश्वरीय सामर्थ के द्वारा, परमेश्वर ने हमें मसीह के अनुग्रह के द्वारा किस में सहभागी होने की अनुमति दी है और उसके हमारे अन्दर रहने के द्वारा?

क्योंकि उसके ईश्वरीय सामर्थ ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सबंध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिस ने हमें अपनी ही महिमा और सद्गुण के अनुसार बुलाया है। जिन के द्वारा उस ने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं दी हैं ताकि :इन के द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूट कर जो संसार। (2 पतरस 1:3-4)

मनुष्य के छुटकारे के कार्य को पूर्ण करने के लिए, पिता कुछ भी नहीं रख छोड़ेगा, चाहे वह उस कार्य के पूरा होने के लिए जितना भी प्रिय हो। वह मनुष्यों के लिए अवसर बनाएगा; वह उन पर अपनी आशीष उड़ेलेगा; वह अनुग्रह पर अनुग्रह का ढेर लगा देगा, वरदान पर वरदान, जब तक स्वर्ग के सारे खजाने उन के लिए न खुल जाए जिनको वह उद्धार देने के लिए आया। इस संसार की सारी सम्पन्नता का संग्रह कर के, और उसके ईश्वरीय स्वभाव के सारे संसाधनों को लादकर, परमेश्वर ने मनुष्य के प्रयोग के लिए वह सब दिया। वे उसके मुफ्त वरदान थे। कितना अदभुत प्रेम, ईश्वरीय वातावरण के समान प्रवाहित हो रहा है, संसारके चारों ओर! ये किस प्रकार का प्रेम है, कि अन्नत परमेश्वर को यीशु के व्यक्तित्व में मानव स्वभाव ग्रहण करना पड़ा, और वही ऊच्चतम स्वर्ग में लेकर जाए!

हमें छुड़ानेवाले ने इस कमतर निर्णय नहीं लिया कि परमेश्वर का प्रेम उन मनुष्यों के भीतर प्रवाहित हो जो उस पर विश्वास करते हैं। जैसे हमारा जीवन, परमेश्वर के प्रेम की तीव्रता हमारे स्वभाव के प्रत्येक भाग में प्रवाहित होगी। मसीही के साथ जीवित विश्वास के

साथ जुड़कर, पिता हमें मसीही के रहस्यमयी देह का भाग के रूप में प्रेम करता है, जिसमें मसीही महिमान्वित सिर है।

(4) दया और कृपा से प्रेरित हमारे पाप में गिरे लोगों के लिए, ईश्वरत्व क्या नहीं करना चाहता हो हर एक विश्वासी को करना चाहिये?

प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि कोई नाश हो; वरन यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले। (2 पतरस 3:9)

यह सुसमाचार की महिमा है कि यह पाप में गिरे मानवजाती के पुन:स्थापन के सिद्धांत पर केन्द्रित है अलौकिक स्वरूप परोपकार की निरंतर प्रकटीकरण में। यह कार्य स्वर्गीय न्यायालय में शुरू है। वहां परमेश्वर ने मानवजाति को प्रेम का अचूक प्रमाण दिया जिसमें उसने उनको माना। उसने "जगत से ऐसा प्रेम किया, कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो हो, परन्तु अन्नत जीवन पाए"। यूहन्ना 3:16

ईश्वरत्व इस मानवजाति के लिए दया से भर गया, और पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा ने अपने आप को छुटकारे के कार्य के लिए दे दिया। उस योजना को पूर्ण रूप से चलाने के लिए, ऐसा निर्णय लिया गया कि मसीह, परमेश्वर का इकलौता पुत्र, पापों के लिए स्वंय का बलिदान देगा। कौन-सा वाक्य उसके प्रेम की गहराई को समझ सकता है? परमेश्वर मनुष्य के लिए यह असम्भव कर देता है कि उसने और ज्यादा किया होता। मसीह के साथ उसने स्वर्ग के सारे संसाधनों को दे दिया, ताकि मनुष्य के उत्थान में कुछ भी कमी न रहे। यहाँ प्रेम है- जिसके चिंतन से मन धन्यवाद से भर उठाना चाहिए! वाह! क्या प्रेम, कैसा अतुल्य प्रेम! इस प्रेम का चिंतन मन को सारे स्वार्थ से शुद्ध कर देगा। यह एक चेले को स्वंय का इन्कार करने के लिए अगुवाई करेगा, क्रूस उठाकर, और छुड़ाने वाले के पीछे चलने के लिए।

(5) जब हम पापी क्रूस के प्रकाश में परमेश्वर के न्याय, दया, और प्रेम को समझते हैं, पौलुस के समान हमारी गवाही का केंद्र का होगा?

क्योंकि मैं ने यह ठान लिया था, कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह, वरन क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूं। (1 कुरन्थियों 2:2)

यीशु ने क्रूस को स्वर्ग से आती हुई ज्योति के स्थान पर रखा, क्योंकी वहीं पर पर मनुष्य की दृष्टि उस पर पड़ेगी। क्रूस ईश्वरीय चेहरे की चमक की सीधी दिशा में है, ताकि क्रूस की ओर ताकने के द्वारा मनुष्य परमेश्वर और यीशु मसीह को देख सकें, जिसे उसने भेजा था। परमेश्वर को देखने के द्वारा हम हम उसे देखते हैं जिसने मृत्यु तक अपने प्राण को दे दिया। क्रूस को देखने के द्वारा दृश्य परमेश्वर की ओर बढ़ता है। परन्तु जब हम क्रूस पर परमेश्वर की पाप के लिए घृणा को देखते हैं, हम पापियों के लिए उसके प्रेम को भी देखते हैं, जो मृत्यु से दृढ़ है। संसार के लिए क्रूस मुहतोड़ विवाद है कि परमेश्वर सत्य, प्रकाश और प्रेम है।

(6) यद्यपि पाप के द्वारा हम परमेश्वर से अलग हो गए थे, मसीह की मृत्यु के द्वारा उसको ग्रहण करने वालों के लिए कौन-सा दया का कार्य पूर्ण हुआ?

क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे? और केवल यही नहीं, परन्तु हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जिस के द्वारा हमारा मेल हुआ है, परमेश्वर के विषय में घमण्ड भी करते हैं॥ (रोमियो 5:10-11)

पाप के द्वारा मनुष्य परमेश्वर से अलग हो गया। उसका प्राण शैतान की साजिशों से कंपित है, पाप का लेखक। वह स्वंय पाप को महसूस करने में अयोग्य है, ईश्वरीय स्वभाव को सराहने और पाने में अयोग्य। यदि यह उसकी पहुंच में नहीं लाया जाता उसके स्वाभाविक हृदय में ऐसा कुछ भी नहीं जो उसकी चाह करे।

परन्तु परमेश्वर शैतान के द्वारा नहीं हराया जाएगा। उसने अपने पुत्र को इसलिए इस संसार में भेजा, ताकि उसके मानव रूप धारण करने के द्वारा, मानवता और ईश्वरीयता उसमें जुड़कर मनुष्य को नैतिक मूल्यों में परमेश्वर के साथ ऊँचा उठाएगा।
संसार के लिए परमेश्वर का प्रेम इसलिए नहीं प्रकट हुआ क्योंकी उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, परन्तु इसलिये क्योंकी उसने संसार से प्रेम किया इसलिए अपने पुत्र को भेजा ताकि ईश्वरीयता मानवता को धारण करके मानवता को स्पर्श कर सके, जबकि ईश्वरीयता ईश्वरीयता पर राज करे। यद्यपि पाप ने मनुष्य और

परमेश्वर के बीच दूरी पैदा की, ईश्वरीय परोपकारिता ने इस दूरी को समाप्त करने की योजना प्रदान की। और उसने कौन-सी चीजों का प्रयोग किया? उसका स्वंय का भाग। परमेश्वर की महिमा की चमक इस संसार में आई इस श्राप से लिप्त संसार मे, और उसके खुद के ईश्वरीय चरित्र में, उसके ईश्वरीय शरीर में, दूरी को समाप्त किया। स्वर्ग के झरोखें खुल गए और स्वर्गीय अनुग्रह की वर्षा उस चंगाई से बहती नदियाँ इस रात्रिमय संसार में आई।

(7) जैसे अनंतता के वर्ष आगे बढ़ेंगे और उनके साथ परमेश्वर की दया, न्याय और प्रेम का प्रकाशन होगा, हमारा स्तुति का गीत क्या होगा?

फिर मैं ने स्वर्ग में, और पृथ्वी पर, और पृथ्वी के नीचे, और समुद्र की सब सृजी हुई वस्तुओं को, और सब कुछ को जो उन में हैं, यह कहते सुना, कि जो सिंहासन पर बैठा है, उसका, और मेम्ने का धन्यवाद, और आदर, और महिमा, और राज्य, युगानुयुग रहे"। (प्रकाशितवाक्य 5:13)

और जैसे अन्नता के वर्ष, आगे बढ़ते हैं, परमेश्वर और मसीह की महिमा के प्रकाशन की बहुतायत को लेकर आयेंगें। जैसे ज्ञान प्रगतिशील है, वैसे ही प्रेम, सम्मान और आनन्द बढ़ेगा। जितना मनुष्य परमेश्वर के विषय में सीखेंगें, उतना उसके चरित्र को सराहा जाएगा। जैसे यीशु उनके सामने छुटकारे की बहुतायत को खोलते हैं और शैतान के साथ विवाद की हैरान कर देने वाली उपलब्धियां, छुडाये हुए लोग और भक्ति के साथ आनन्दित होते हैं, और बहुत आन्नद के साथ वे सोने की वीणा बजाते हैं; और दस हजार बार दस हजार और हजारों हजार वाणियां स्तुति का गीत गाने के लिए ईकट्ठा होती हैं।

बड़ा विवाद समाप्त हो चुका है। पाप और पापी नही रहे। पूरा विश्व साफ़ है। सामंजस्य और आनंद का एक मिजाज पूरी सृष्टि में खनकता है। उसी से जिसने सब कुछ बनाया, जीवन और प्रकाश और आनंद का प्रवाह होता है। सबसे छोटे परवाणु से लेकर सम्पूर्ण विश्व भर तक, सभी निर्जीव और सजीव, उनकी बेदाग़ सुन्दरता और सिद्ध आनंद, उद्घोषणा करते हैं परमेश्वर प्रेम है।

(8) जब पिता हमें शुद्ध कर देता है और हमारे विश्वास में डगमगाने को ढांप देता है, हमारे अपराध कितनी दूर हमसे हो जाते हैं?

उदयाचल अस्ताचल से जितनी दूर है, उसने हमारे अपराधों को हम से उतनी ही दूर कर दिया है। (भजनसहिता 103:12)

परन्तु क्षमा का उससे व्यापक अर्थ है जितना लोग सोचते हैं। जब परमेश्वर वायदा करता है कि वह "बहुतायत से क्षमा देगा," वह कहता है, जैसे की उस वायदे का अर्थ हम समझते हैं उससे बढ़कर है: क्योंकि यहोवा कहता है, मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं है, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है। क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है"॥ यशायाह 55:7-9। परमेश्वर की क्षमा केवल कानूनी कार्य नहीं जिसके द्वारा उसने हमे दंड से आजाद किया। यह केवल पापों की क्षमा ही नहीं, परन्तु पाप से दुबारा दावा करना। यह उस छुटकारा देने वाले प्रेम का प्रवाह है हमारे हृदय को रूपांतरित करता है। दाऊद के पास क्षमा का सच्चा विचार था जब उसने प्रार्थना की, "हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर"। भजनसहिता 51:10

(9) जब हम पापी क्रूस पर प्रकट प्रेम की महत्वपूर्णता को समझते हैं, पौलुस के समान, हम कैसे चिल्लायेंगें?

पर ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमण्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का जिस के द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं। (गलातियों 6:14)

मसीह की मृत्यु मनुष्य के लिए परमेश्वर का प्रमाण है। क्रूस का मसीही जीवन से हटना कुछ ऐसे है जैसे सूर्य को आकश से हटाना। क्रूस हमें परमेश्वर की नजदीकी में लेकर आता है, हमारा उसके साथ मेलमिलाप करता है। पिता के प्रेम की कोमल दया के साथ, यहोवा उस पीड़ा को देखता है जो उसके पुत्र ने इस मानवजाती को अनन्त मृत्यु से बचाने के लिए सही, और हमें प्रिय में ग्रहण करता है।

क्रूस के बिना, इसी पर हमारी आशा निर्भर है। इसी से उद्धारकर्ता के प्रेम का प्रकाश चमकता है, और जब क्रूस के चरणों में एक पापी देखता है उसकी ओर जो हमें बचाने के लिए मरा, वह आनन्द की परिपूर्णता में आन्दित हो सके, क्योंकी उसके पाप क्षमा हो चुके हैं। क्रूस पर विश्वास में झुकना, वह ऊच्तम स्थान पर पहुंच गया जो मनुष्य को मिल सकता है।

क्रूस के द्वारा सीखते हैं कि हमारा स्वर्गीय पिता हम से ऐसे प्रेम से प्रेम करता है जो असीमित है। हम विस्मित होते हैं जो पौलुस ने कहा, "पर ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमण्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का जिस के द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं"? गलातियो 6:14। यह हमारा सौभाग्य भी है क्रूस पर घमंड करना, हमारा सौभाग्य उसको अपने आप को देना जिसने स्वंय को हमारे पापों के लिए दिया। तब, उस प्रकाश के साथ जो हमारे चेहरों पर चमकती है, हम उस प्रकाश को उन पर प्रकट कर सकते हैं जो अन्धकार में हैं।

अभी मैं समझता हूँ कि मसीह परमेश्वर की व्यवस्था की पुष्टि करने के लिया आया और उसका निष्काषित करने के लिए नहीं। यह सत्य की मसीह छुटकारा देने के लिया आया उसकी महत्वपूर्णता और अनन्त अस्त्तिव की पुष्टि करता है

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं देखता हूँ कि परमेश्वर का प्रेम उसके न्याय और उसकी दया के मध्य उपयुक्त संतुलन है और यह उसके सिंहासन और उसकी सरकार की नीव हैं।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं धन्यवादी हूँ कि परमेश्वर नहीं चाहता की कोई भी नाश हो और मैं यीशु के क्रूस की ओर ताकता हूँ और उसके पवित्र लहू से मेरे पापों को ढापने के लिए दावा करता हूँ।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं मसीह की चुनने के के द्वारा और उसकी पवित्र आत्मा को मुझे भरने के अनुमति देने के लिया मैं आश्चर्यचकित हूँ, मैं उसके ईश्वरीय स्वभाव को मुझ में भरने और उसको जीने का सौभाग्य ले सकता हूँ। मैं उस सौभाग्य को अभी मांगता हूँ।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

पाठ 7

भक्ति का रहस्य

(1) मसीह जीवित वचन ने क्या किया और वह कभी भी होने वाली अदभुत बात है?

और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उस की ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा। (यूहन्ना 1:14)

जब हम एक गहरी समस्या का अध्ययन करते हैं, हम अपने मनों को उस अदभुत बात की ओर ध्यान लगायें जो स्वर्ग और पृथ्वी पर पहली बार घटी है-परमेश्वर के पुत्र का देहधारी होना। परमेश्वर ने अपने पुत्र को पापी मनुष्यों के लिए लिए बदनामी और निंदा की मृत्यु को सहने के लिए भेजा। वह जो स्वर्गीय धाम में प्रधान था उसने अपने राजकीय वस्त्रों को त्यागकर, और अपनी मानवता और ईश्वरीयता को पहनकर, इस संसार में आया इस मानवजाती का प्रधान बनकर नमूना पेश किया। उसने स्वंय को इस मानवजाति के साथ पीड़ित होने के लिए नम्र बनाया, उनकी सारी पीडाओं के साथ पीड़ित के लिए।

यह पूरा संसार उसका था, परन्तु उसने स्वंय को सम्पूर्ण तरीके से शून्य कर दिया कि उसकी सेवकाई के दौरान उसने घोषणा की, “ लोमड़ियों के पास भट्ट और आकाश के पक्षियों के पास घोसले

होते हैं; परन्तु मनुष्य के पुत्र के पास सिर छिपाने की जगह नहीं" [इब्रानियों 2:14-18 उद्धरण)

(2) *"इम्मानुएल" नाम का क्या अर्थ है जैसे मसीह से सम्बन्धित और हमारी समझ से बाहर वाला उसके साथ रिश्ता?*

कि, देखो एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा जिस का अर्थ यह है " परमेश्वर हमारे साथ"। (मत्ती 1:23)

मानवता में मसीह के देहधारी पर मनन करने के द्वारा, हम कभी न समझे जाने वाले रहस्य के सामने हैरान हो जाते हैं, जो मनुष्य का दिमाग नहीं समझ सकता। जितना हम उसकी ओर ध्यान लगाते हैं, उतना ही अदभुत यह दिखता है। कितना बड़ा अंतर है मसीह की ईश्वरीयता में और बैतलहम की चरणी में पैदा हुए उस बच्चे में! हम कैसे उस दूरी को माप सकते हैं उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर और उस असहाय बच्चे के बीच? परन्तु फिर भी इस संसार का रचयिता, जिसमे परमेश्वर की सारी ईश्वरता वास करती है, उस चरणी में असहाय बच्चे के रूप में प्रकट हुआ। सभी स्वर्गदूतों से उत्तम, पिता के साथ महिमा और शान में बराबर, और फिर भी मानवता का रूप धारण करना! ईश्वरीयता और मनुष्यता रहस्यमयी तरीके से जुड़ी हुई थी, और मनुष्य और परमेश्वर एक हैं। इस एकता में हम पाप में गिरे मानवजाती के लिए आशा पाते हैं। मानवता में यीशु को देखने के द्वारा, हम परमेश्वर को देखते हैं, और उसमें महिमा की चमक को देखते हैं, उसके व्यक्तित्व की तस्वीर।

(3) पिता के द्वारा भेजा गया, मसीह के प्रेम का क्या कार्य था कि हम परमेश्वर की संतान के रूप में ग्रहण किये जाएँ?

परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के आधीन उत्पन्न हुआ। ताकि व्यवस्था के आधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हम को लेपालक होने का पद मिले। (गलातियों 4:4-5)

जैसे पापी उद्धारकर्ता को कलवरी पर मरते हुए देखता है, और यह पहचानता है कि पीड़ित होने वाला अलौकिक है, वह पूछता है यह महान बलिदान क्यों हुआ, और क्रूस परमेश्वर की पवित्र व्यवस्था की ओर केन्द्रित करता है जिसको तोड़ा गया था। मसीह

की मृत्यु परमेश्वर की अपरिवर्तनीय और धर्मी व्यवस्था के प्रति बिना जवाब दिया गया विवाद है।

मसीह के विषय में भविष्यवाणी करते हुए, यशायाह ने कहा, "यहोवा को अपनी धार्मिकता के निमित्त ही यह भाया है कि व्यवस्था की बड़ाई अधिक करे"। (यशायाह 42:21)। व्यवस्था में दुष्ट को क्षमा करने की सामर्थ नहीं है। उसका वर्ग उसकी त्रुटियों को निकालता है, कि वह उसकी जरूरत की अनुभव करे जो बचाने के योग्य है, उसकी जरूरत को पूरा करने के लिए वह उसके स्थान पर मरेगा, उसकी निश्चयता, उसकी धार्मिकता। यीशु पापी की आवश्यकता को पूरा करता है; क्योंकी वह हमारे अपराधों के लिए घायल हुआ, उसने हमारी दुष्टता के लिए घायल हुआ; हमारी शान्ति के लिए उसने ताड़ना सही; और उसके कोड़े खाने से हम चंगे हुए"। (यशायाह 53:5)। परमेश्वर पापी को मिटा सकता था, और उसका विनाश कर सकता था; परन्तु महंगी योजना का चुनाव किया गया। उसके महान प्रेम में वह आशाहीन को आशा देता है, अपने इकलौते पुत्र को हमारे पापों का बोझ उठाने के लिए देकर। और क्योंकी उसने पूरा स्वर्ग उस एक महान वरदान में लुटा दिया। वह मनुष्य से कुछ भी नहीं रख छोड़ेगा ताकि वह अपने उद्धार का कटोरा लेकर, और परमेश्वर के साथ वारिस बन सके, मसीह के साथ मिलकर।

(4) स्वंय-बलिदानी प्रेम में, मसीह हमें किस से छुड़ाने के लिए आया हमारी सम्पूर्ण पुन:स्थापना के लिए?

उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया। जिस में हमें छुटकारा अर्थात पापों की क्षमा प्राप्त होती है। (कुलुस्सियों 1:13-14)

मसीह, हमारे दोष के कारण, हमसे शायद दूर हो गया। परन्तु हमसे दूर जाने की बजाय, वह हमारे बीच में आया और वास किया, ईश्वरत्व की परिपूर्णता के साथ, हमारे साथ एक होने के लिए, ताकि हम उसके अनुग्रह से सिद्धता को प्राप्त करें। निंदा और पीड़ा की मृत्यु सहकर उसने हमारे पापों के लिए फिरौती बनकर दाम चुकाया। कितना स्वंय-बलिदानी प्रेम! सबसे ऊतम ऊच्चता से वह आया, उसकी ईश्वरता में मानवता को पहनकर, कदम पर कदम बढ़कर उस निंदा की गहराई की ओर। कोई भी उसके प्रेम की गहराई को नहीं माप सकता। मसीह ने हमे दिखाया कि परमेश्वर हमसे कितना प्रेम करता है और हमारा छुटकारा देने वाला पीड़ा सहता है हमारी सम्पूर्ण पुन:स्थापना के लिए। वह चाहता है उसके

बच्चे उसके चरित्र को दिखाएं, उसके प्रभाव को, ताकि दूसरे मन उसके मन की एकता में खीचें जाएँ।

(5) कौन-से अदभुत तथ्य जिनका पौलस जिक्र करता है प्रेम के कार्य को मसीह के देहधारण में मनुष्य के लिए समझ से बाहर बना देते हैं?

और वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं। (कुलुस्सियों 1:17)

प्रेरित पौलुस ने मसीह को अपने भाइयों के सामने ऐसे उठाया जिसके द्वारा परमेश्वर ने सारी चीजों की सृष्टि की और जिसके द्वारा छुटकारे का कार्य पूर्ण हुआ। उसने कहा वह हाथ जो इस संसार को संभालता है, और उनके क्रमबद्ध तरीके से बिना थके सम्पूर्ण विश्व की सारी क्रियाएँ, वह हाथ जो क्रूस पर हमारे लिए बेधा गया। "उसी ने सभी वस्तुओं की रचना की," पौलुस ने लिखा, "जो स्वर्ग में हैं, और जो पृथ्वी पर, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुतांए, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं और वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती" "और उस ने अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा भी मेल कर लिया जो पहिले निकाले हुए थे और बुरे कामों के कारण मन से बैरी थे। ताकि तुम्हें अपने सम्मुख पवित्र और निष्कलंक, और निर्दोष बनाकर उपस्थित करे"।

(6) कौन-सा वाक्यांश पौलुस प्रयोग करता है जो बिना विवाद के है, प्रेम का सबसे अदभुत कार्य जो मसीह के देहधारी होने में प्रकट हुआ?

और इस में सन्देह नहीं, कि भक्ति का भेद गम्भीर है; अर्थात वह जो शरीर में प्रगट हुआ, आत्मा में धर्मी ठहरा, स्वर्गदूतों को दिखाई दिया, अन्यजातियों में उसका प्रचार हुआ, जगत में उस पर विश्वास किया गया, और महिमा में ऊपर उठाया गया॥

मसीह का रहस्य सारे रहस्यों में रहस्यमयी है। मसीह पिता के साथ एक था, फिर भी..वह उस परमेश्वर के साथ बराबरी से निम्न होने के लिए तैयार था। ताकि वह इस पाप में गिरे मानवजाती के लिए प्रेम के उद्देश्यों को पूरा कर सके, वह हमारी हड्डी में की हड्डी और मांस में का मांस बना।

कितना बड़ा अंतर है मसीह की ईश्वरीयता में और बैतलहम की चरणी में पैदा हुए उस बच्चे में! हम कैसे उस दूरी को माप सकते हैं उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर और उस असहाय बच्चे के बीच? परन्तु फिर भी इस संसार का रचयिता, जिसमे परमेश्वर की सारी ईश्वरता वास करती है, उस चरणी में असहाय बच्चे के रूप में प्रकट हुआ। सभी स्वर्गदूतों से उत्तम, पिता के साथ महिमा और शान में बराबर, और फिर भी मानवता का रूप धारण करना! ईश्वरीयता और मनुष्यता रहस्यमयी तरीके से जुड़ी हुई थी, और मनुष्य और परमेश्वर एक हैं।

परमेश्वर के पुत्र के लिए मनुष्य का स्वभाव धारण करना यह असीमित निंदा होती, जब आदम भी अपनी मासूमियत में अदन में खड़ा था। परन्तु यीशु ने मनुष्यता को ग्रहण किया जब मानवजाति चार हजार वर्षों के पाप से कमजोर थी। आदम के हर एक बच्चे के समान उसने विरासत की महान व्यवस्था के परिणामों को ग्रहण किया। यह परिणाम क्या थे वे उसके पृथ्वी के पूर्वजों के ईतिहास में दिखाए गए थे। वह उस विरासत के साथ आया हमारे दुख और परीक्षाओं को हमारे साथ भोगने के लिए, और एक निष्पाप जीवन जीने का नमूना पेश करने के लिए।

जो दावा करते हैं कि मसीह के लिए पाप करना संभव नहीं था, इस बात पर विश्वास नहीं करेंगें कि उसने स्वंय पर मनुष्य स्वभाव ले लिया। परन्तु क्या सच में मसीह की परीक्षा नहीं हुई, न केवल जंगल में शैतान के द्वारा, परन्तु उसके सम्पूर्ण जीवनकाल में, बचपन से लेकर बड़े होने तक? {एनपि} हमारे उद्धारकर्ता ने मानवता को ले लिया, उसकी जिम्मेदारियों के साथ। उसने मनुष्य का स्वभाव ले लिया, परीक्षा के प्रति समर्पित करने की संभावना के द्वारा। हमारे पास ऐसा कुछ भी सहने के लिए नहीं जो उसने न सहा हो।

(7) मसीह के महान प्रेम के कारण, जो "भक्तिपूर्ण रहस्य," के द्वारा प्रकट किया गया कैसे हम कलीसिया परमेश्वर के सामने खड़े हो सकते हैं?

और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बना कर अपने पास खड़ी करे, जिस में न कलंक, न झुर्री, न कोई ऐसी वस्तु हो, वरन पवित्र और निर्दोष हो। (इफिसियों 5:27)

हे कीमती, धीरजवन्त, यीशु, मेरा प्राण कैसे तुझे सराहता है! कि एक गरीब, अयोग्य, पाप में लिप्त मनुष्य भी पवित्र परमेश्वर के सामने खड़ा हो सकता है, हमारे विकल्प की धार्मिकता और

निश्चयता में परिपूर्ण! हे स्वर्ग, विस्मित हो, और हे पृथ्वी विस्मित हो, कि पाप में गिरे मनुष्य उसके असीमित प्रेम और आनन्द का पात्र बने। वह कभी न खत्म होने वाले गीतों से आन्दित होता है, और मनुष्य पाप से भरा, मसीह की धार्मिकता से शुद्ध होकर, पिता के सामने बिना किसी दाग और पाप के धब्बे के साथ प्रस्तुत किया जाता है, "न कलंक, न झुर्री, न कोई ऐसी वस्तु हो, वरन पवित्र और निर्दोष हो" "परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा? परमेश्वर वह है जो उन को धर्मी ठहराने वाला है"। (रोमियो 8:33)

(8) इस "भेद की महिमा की क्या बहुतायत है" कि परमेश्वर चाहता है हम जानें और अनुभव करें ताकि हम उसमें परिपूर्ण हो सकें?

जिन पर परमेश्वर ने प्रगट करना चाहा, कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है और वह यह है, कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है। (कुलुस्सियो 1:27)

परमेश्वर की संतान के सौभाग्य, आशीर्षे, प्रेरित के द्वारा नीचे लिखे गए इस अनुच्छेद में बताये गए हैं: "जिन पर परमेश्वर ने प्रगट करना चाहा, कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है और वह यह है, कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है"। *(कुलुस्सियो 1:27)* जब हम इस बात को पहचानते हैं कि हमारी महिमा की आशा मसीह है. और यह कि हम उसमें परिपूर्ण हैं. हम न बताये जाने वाले आनन्द के साथ आनन्द करेंगें और महिमा से भरपूर।

(9) प्रेम के साथ हम अनन्तता को बितायेंगें, परमेश्वर का पुत्र मसीह इस अन्धकार भरे ग्रह पर आया और हमारे लिया सहा?

परन्तु वह हमारे ही अपराधो के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जाएं। (यशायाह 53:5)

परमेश्वर का पुत्र गिरे हुओं को उठाने के लिए झुका। इसी कारणवश उसने उत्तम निष्पाप संसार को छोड़ा, निन्यानवे जिन्होंने उससे प्रेम किया, और इस धरती पर आया "हमारे "अपराधों के लिए घायल होने के लिए" और हमारे अधर्म के कामों के लिए कुचला गया"। यशायाह 53:5। वह उन सभी चीजों के समान बना जिस में उसके

भाई थे, वह मनुष्य बना, जैसे हम भी हैं। वह अच्छे से जानता था कि भूखे और प्यासे रहने का क्या अर्थ है। उसने खाने के द्वारा गुजारा किया और सोने के द्वारा ऊर्जा पाई। वह अजनबी था और इस पृथ्वी पर एक राही-इस संसार में, परन्तु इस संसार का नहीं; उसकी परीक्षा हुई और वह परखा गया जैसे आज मनुष्यों पर परीक्षा आती और और परखे भी जाते हैं, परन्तु फिर भी उसने निष्पाप जीवन जिया। कोमला, दयालु, सहानुभूति रखने वाला, दूसरों के बारे में सोचने वाला, उसने परमेश्वर के चरित्र को दिखाया। " और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया"। (यूहन्ना 1:14)

वह मसीह स्वंय को नम्र करेगा और असहाय बच्चे के रूप में बैतलह्म की चरणी में पैदा होगा। मसीह का देहधारी होना सचमुच सभी रहस्यों में से एक रहस्य है।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

सम्पूर्ण विश्व के साथ मैं इस बात पर आश्चर्यचकित होता हूँ कि यीशु ने अपने राजकीय वस्त्रों और राजकीय मुकुट को परे रखा और शरीर में होकर हमारे मध्य रहने के लिए आया और हमें बचाने के लिए अपना जीवन दिया।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं इस बात को मानता हूँ मसीह परमेश्वर की प्रेम-सबंधी व्यवस्थाओं को अलग करने नहीं वरन उन्हें पूरा करने के लिया आया। यदि ऐसा न होता तो वह हमारे पापों के लिए नहीं बलिदान होता।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं अपने पापों से क्षमा मांगता हूँ और उस वायदे का दावा करता हूँ कि, उसके महान प्रेम के कारण, मैं पिता के सामने बिना किसी दोष या ग्लानि के खड़ा हो सकता हूँ।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

जैसे अनन्ता के वर्ष बीतते हैं मैं यीशु के चरणों में बैठना चाहता जो हूँ और उस महान बात को समझना चाहता हूँ जो उसने मेरे लिए की है और सर्वदा उसके पवित्र नाम की स्तुति करूँगा।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

पाठ 8

परमेश्वर का खींचने वाला प्रेम

(1) कौन-से तर्क-संगत तरीके के द्वारा परमेश्वर हमारे प्रेम की अपील करता है और प्रेम-पूर्वक हमें अपनी ओर खींचता है?

मैं उन को मनुष्य जानकर प्रेम की डोरी से खींचता था, और जैसा कोई बैल के गले की जोत खोल कर उसके साम्हने आहार रख दे, वैसा ही मैं ने उन से किया। (होशे 11:4)

एक मुख्य प्रकटीकरण, यह दर्शाता है हथकड़ी उससे बहुत अलग है जिनका उपयोग लोग जंगली पशुओं को नियन्त्रण में करने के करते हैं। छोटे जानवरों को कई बार हिंसा के साथ श्रम के लिए इस्तेमाल किया जाता है। परन्तु परमेश्वर इस प्रकार मनुष्यों को अपनी और नहीं खींचता। न ही वह मजबूत रस्सियों या लोहे के डंडों का इस्तेमाल करता, परन्तु हमें प्रेम-पूर्वक रिश्ते के माध्यमों द्वारा खींचता है, हमारी बुद्धिमता और हमारे स्नेह की प्रार्थना

करता है (देखें यशायाह 1:18)। परमेश्वर हमें हमारे स्वभाव की शान के अनुसार खींचता है, जैसे हम वो जो परमेश्वर के स्वरूप में रचे गए हैं (उत्पत्ति 1:26-27)। हमारे मन में काम करने के द्वारा हमें उसके प्रेम के तरीके को इस्तेमाल करना चाहिये (देखें 1 कुरन्थियो 9:19-23; 1 थिस्लुनिकियों 2:7,8; 3:12; इब्रानियों 5:2)। मसीह ने मनुष्य को मनुष्य बनकर खींचा, उसने हमारे बीच में डेरा डाला और हमारी भलाई के लिए अपना बलिदान दिया (देखें यूहन्ना 12:32; प्रेरितों के काम 10:38)। परमेश्वर का मनुष्य बनने का एक कारण था मनुष्य को प्रेम की कड़ियों से खींचना, उनके साथ साधारण स्वभाव में भागीदार बनकर।

मसीह इस संसार को परमेश्वर का प्रेम प्रकट करने के लिए आया, मनुष्य के हृदयों को अपनी और खींचने के लिए....उद्धार प्राप्ति का पहला कदम मसीह के प्रेम के प्रति खिंचना....यह इसलिए कि लोग परमेश्वर की क्षमा के आनंद को समझें, परमेश्वर की शांति, कि मसीह उन्हें अपने प्रेम के प्रकटीकरण के द्वारा खींचता है।यदि वे उसके बुलावे का प्रति प्रतिउत्तर देते हैं, उसके अनुग्रह के लिये अपने हृदयों को समर्पित करते हैं, वह कदम-कदम पर उनकी अगुवाई करेगा, अपने सम्पूर्ण ज्ञान की ओर, और यही अनन्त जीवन है।

(2) किस वरदान के लिए मसीह ने कर्जा चुकाया और क्षमा प्रदान की और परमेश्वर अपने अनुग्रह के अनुसार हमें देता है?

क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है॥ (रोमियो 6:23)

फिरौती दे दी गई है, और सभी के लिए परमेश्वर के पास आना संभव है, और आज्ञाकारिता में जीवने जीने के द्वारा अनन्त जीवन प्राप्त कर सकते हैं। फिर भी कितने दुःख की बात है की मनुष्य उस अविनाशी विरासत से मुख मोड़ लेता है, और घमंड, स्वार्थ और दिखावे की संतुष्टि में जीवन जीता है, और शैतान के शासन की आधीनता में, और उन आशीषों को खो बैठता है जो उसे इस जीवन में और आने वाले जीवन में मिल सकती हैं। वे स्वर्ग के रास्तों से गुजर सकते थे, और आजादी और समानता में मसीह के साथ और स्वर्गीय दूतों के साथ जुड़ सकते थे; परन्तु फिर भी चाहे यह कितना भी आकर्षक क्यों न दिखता हो, वे स्वर्गीय आकर्षणों से दूर रहते हैं। इस सम्पूर्ण संसार का रचयिता हम से प्रेम करने का चुनाव करता है यदि हम उसको अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता करके

है ग्रहण करें तो। अभी और यहाँ भी उसका अनुग्रह इस सीमा तक हम पर बरसता है। उसने मनुष्यों को ज्योति का वरदान और स्वर्ग की महिमा दी है, और उसके साथ उसने स्वर्ग के सारे खजानों का साहस दिया है।जितना उसने आने वाले जीवन का वायदा दिया है, वह इस जीवन में भी महान वरदानों से हमें सुशोभित करता है, और उसके अनुग्रह के पात्र, वह चाहता है हम उन सभी बातों का आनन्द लें जो हमारे चरित्र को विशेष बनाती और ऊँचा उठाती हैं। यह उसकी बनावट की हमें स्वर्ग के लिए तैयार करे।
न्याय मांग करता है कि पाप को न क्षमा किया जाए, परन्तु मृत्यु दंड दिया जाए। परमेश्वर, अपने इकलौते पुत्र के वरदान के रूप में, दोनों मांगों को पूरा किया।मनुष्य के स्थान पर मरने के द्वारा, मसीह ने उस सजा को ले लिया और क्षमा प्रदान की।

(3) मसीह इस पृथ्वी पर क्या बहुतायत से देने के लिए आया जो उसे ग्रहण करेंगें?

चोर किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है। मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं। (यूहन्ना 10:10)

यही जीवन हमारे पास होना चाहिये, और हमारे पास बहुतायत में होना चाहिये। परमेश्वर यह जीवन हर उस प्राण में फूंकेगा जो स्वंय के लिए मरकर और मसीह के लिए जियेगा। परन्तु पूरा स्वंय से इन्कार करना होगा। जब तक यह न हो, हम अपने साथ उस बुराई को लेकर चलते हैं जो हमारे आनन्द को नाश कर देती है। परन्तु जब स्वंय को क्रूस पर चढ़ा दिया जाता है, मसीह हमारे भीतर वास करने लगता है, और पवित्र आत्मा की सामर्थ हमारी मेहनत को देखती है।

मैं चाहता हूँ कि हम वन बन जाएँ जैसा परमेश्वर हमें बनाना चाहता है- परमेश्वर में पूरी रोशनी। हमें ऊच्च मानदंड तक पहुंचना है, परन्तु हम ऐसा तब तक नहीं कर सकते जब तक स्वंय को वेदी पर चढ़ाया जाए, जब तक पवित्र आत्मा हमें नियंत्रित करे, हमें बनाये और ईश्वरीय स्वभाव में हमें बदले।

वह (विश्वासी) मर जाए, जैसे मसीह मरा, परन्तु उद्धारकर्ता का जीवन उस में है। उसका जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। "मैं आया हूँ कि तुम जीवन पाओ," यीशु ने कहा, "और ताकि वे बहुतायत का जीवन पाएं"। वह उस महान प्रक्रिया का संचालन करता है जिससे विश्वासी इस वर्तमान जीवन में उसके

साथ एक हो जाते हैं, उसके साथ पूरी अनन्तता में एक होने के लिए।

(4) प्रेमी चरवाहे के समान, परमेश्वर प्रत्येक मनुष्य के लिए क्या करता है जैसे की केवल वे ही बहुत खास हैं जिनके लिए मसीह मरा?

क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उन का उद्धार करने आया है॥ (लूका 19:10)

प्रत्येक मनुष्य को यीशु ऐसे जानता है जैसे कि केवल उसी व्यक्ति के लिए यीशु मरा। हर एक दिल की निराशा उसके हृदय को स्पर्श करती है। सहायता के लिए चिल्लाने की आवाज उसके दिल तक पहुंचती है। वह उन्हें बुलाता है, "मेरे पीछे हो लो," और उसकी आत्मा उनसके हृदयों में मडराती है ताकि वह उन्हें ओर खींच ले। बहुत से उसकी ओर खीचना नहीं चाहते। यीशु जानता है वे कौन हैं। वह यह भी जानता है की कौन ख़ुशी से उसकी आवाज को सुनता है, और जो उसकी पासबानी देखभाल के प्रति पूरी तरह आधीन होने के लिए तैयार हैं। वह कहता है, "मेरी भेड़ मेरी आवाज सुनती है, और मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मुझे जानती हैं और मेरे पीछे चलती हैं"। वह हर एक ध्यान रखता है जैसे इस धरती पर उनको छोड़ कोई है ही नहीं।

"वह अपनी भेड़ को नाम लेकर पुकारता है, और उनकी अगुवाई करता है....और भेड़ उसके पीछे लेती हैं: क्योंकी वे उसकी आवाज को पहचानती हैं"। पूर्वी चरवाहे अपनी भेड़ों को नहीं चलाते। वह जबरदस्ती या डर पर निर्भर नहीं; परन्तु उनके आगे चलता है, और उन्हें बुलाता है। वे उसकी आवाज को पहचानती हैं; और उसके बुलाने से आज्ञा मानती हैं। उसी प्रकार उद्धारकर्ता-चरवाहा उसकी भेड़ के साथ। पवित्रशास्त्र कहता है "तू ने मूसा और हारून के द्धारा, अपनी प्रजा की अगुवाई भेड़ों की सी की"। भविष्यवक्ता के द्वारा, यीशु ने कहा, यहोवा ने मुझे दूर से दर्शन देकर कहा है। मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूँ; इस कारण मैं ने तुझ पर अपनी करुणा बनाए रखी है"। वह किसी को अपने पीछे चलने के लिए दबाव नहीं देता। मैंने "उनको खींचा", उसने कहा, "मैं उन को मनुष्य जानकर प्रेम की डोरी से खींचता था"। भजन 77:20; यिर्मियाह 31:3; होशे 11:4

(5) जब, मसीह के जीवन में, हम दया, कोमलता, कृपा, और प्रेम देखते हैं किसका चरित्र और गुण हम देखते हैं?

यीशु ने उस से कहा; हे फिलेप्पुस, मैं इतने दिन से तुम्हारे साथ हूं, और क्या तू मुझे नहीं जानता? जिस ने मुझे देखा है उस ने पिता को देखा है :तू क्यों कहता है कि पिता को हमें दिखा। (यूहन्ना 14:9)

परमेश्वर की पवित्रता और संसार में परमेश्वर की महिमा देखने के द्वारा, हम डर जाते हैं, क्योंकी हम जानते हैं कि उसका न्याय दोषी को माफ़ करने की अनुमति नहीं देगा। हमें डर में रहने की आवश्यकता नहीं; क्योंकी मसीह इस संसार में परमेश्वर के चरित्र को प्रकट करने के लिया आया, हमें उसका पिता वाला प्रेम उसके लेपालक बच्चों के प्रति प्रकट करने के लिए। हमें परमेश्वर के चरित्र को केवल प्रकृति के अति विशाल कार्यों के द्वारा ही नहीं आंकना है, परन्तु साधारण, मसीह के प्रेम से भरे जीवन के द्वारा, जिसने यहोवा को हमारे धरती के माता-पिता की तुलना में बहुत दया करने वाला, अति दयालु और अति कोमल प्रस्तुत किया।

यीशु ने पिता को ऐसा प्रस्तुत किया जिसको हम अपना भरोसा दे सकते हैं और अपनी जरूरतों को रख सकते हैं। जब हम परमेश्वर के डर में होते हैं, और उसकी महिमा और प्रताप के विचार से अभिभूत हो जाते हैं, पिता हमें हमें मसीह की और और केन्द्रित करता है उसका प्रतिनिधित्व करने के लिए। जो हम मसीह में प्रकट होते हुए देखते हैं, उसकी कोमलता, उसकी दया, और प्रेम, पिता के गुणों का प्रतिबिम्ब है। कलवरी का क्रूस मनुष्य पर परमेश्वर का प्रेम प्रकट करता है। मसीह विश्व के प्रतापी को प्रेम करने वाले परमेश्वर के रूप में प्रकट करता है। भविष्यवक्ता के मुह से उसने कहा, "मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूँ; इस कारण मैं ने तुझ पर अपनी करुणा बनाए रखी है"। (यिर्मियाह 31:3)

(6) हम क्या पा सकते हैं, यदि हम उसको ग्रहण करने का चुनाव करें, मसीह के अनुग्रह की बहुतायत से और उसके लहू बहाए जाने के द्वारा?

हम को उस में उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है। (इफिसियों 1:7)

जीवन और महिमा का परमेश्वर उसकी ईश्वरता में मानवता को धारण कर यह प्रदर्शित करने के लिए कि मसीह के वरदान के द्वारा हम उसके साथ जुड़ जाएंगें। परमेश्वर के साथ जुड़े बिना कोई अभी व्यक्ति खुश नहीं रह सकता। पाप में गिरे मनुष्य को यह सीखना होगा कि हमारा स्वर्गीय पिता तब तक संतुष्ट नहीं होगा जब तक

वह पश्चातापी पापी को गले न लगा ले, परमेश्वर के निष्पाप मेमने की योग्यता के द्वारा।

सारी स्वर्गीय बुद्धिमता का लक्ष्य केवल यही है। प्रधान की आज्ञा के अनुसार उन्हें उनके दुबारा हित के लिए कार्य करना है जो अपने अपराधों के कारण स्वर्गीय पिता से अलग हो गए हैं। एक योजना बनाई गई है जिसके द्वारा वह अदभुत अनुग्रह और मसीह का प्रेम इस संसार पर प्रगट होगा। असीमित मूल्य जो परमेश्वर के पुत्र के द्वारा मनुष्य को बचाने के लिए बनाया गया, मसीह का प्रेम प्रकट हुआ। छुटकारे की महिमामय योजना में इस सम्पूर्ण संसार को बचाने के लिए बहुत से प्रयोजन हैं। पापी और पाप में गिरे मनुष्य यीशु में पापों की क्षमा और मसीह के द्वारा पहनाई गई धार्मिकता से परिपूर्ण बनते हैं।

(7) यदि हम उसके घावों को उसके अपराधों के लिए ग्रहण करें, उसका हमारे अधर्म के लिए कुचला जाना, और उसकी ताड़ना हमारी शान्ति के लिए, तो उसकी पीड़ा के कोड़े हमारे प्राण के लिए लाएंगें?

परन्तु वह हमारे ही अपराधो के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जाएं। (यशायाह 53:5)

यदि संभव है, मसीह की पीड़ा के स्वभाव और उसकी सीमा की कल्पना करें। मानवता में यह पीड़ा सम्पूर्ण संसार पर परमेश्वर के क्रोध के उड़ेले जाने को रोकना था उनके लिए जिनके लिए वह मरा। हाँ, कलीसिया के लिये यह बलिदान पूरी अनन्ता तक प्रभावशाली होगा। क्या हम उसके अपराधों का आंकड़ों में मूल्यांकन कर सकते हैं? असंभव। तब कौन उस बात की समझ तक पहुंच सकता है जो मसीह ने कलीसिया की निश्चयता के लिए सहा....? केवल वही पापी के स्थान पर कोड़े खा सकता था और उसकी मासूमियत के कारण खत्म नहीं होता। मसीह के पुत्र के ईकलौते पुत्र के बलिदान के द्वारा परमेश्वर की महिमा की पवित्रता और न्याय प्रकट हुआ।

अपने जीवन को शपथबद्ध करने के द्वारा यीशु ने स्वंय को इस पृथ्वी पर रहने वाले प्रत्येक पुरुष और स्त्री के लिए जिम्मेदार ठहराया। वह परमेश्वर की उपस्थिति में खड़ा होकर कहता है, "पिता, मै स्वंय पर इस मनुष्य का दोष लेता हूँ। इसका अर्थ उसके

लिए मरना था। यदि वह पश्चाताप करे तो उसे क्षमा किया जाएगा। मेरा लहू उसे पापों से शुद्ध करेगा। मैंने अपना जीवन जगत के पापों के लिए दे दिया"।

(8) हमारी क्या भूमिका है कि हम सारी अधार्मिकता से शुद्ध हो सकें और उसके वस्त्रों से ढप सकें?

यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है। (1 यूहन्ना 1:9)

हमें ऐसा लग सकता है कि हम पापी और अपूर्ण हैं; परन्तु केवल उसी आधार पर की हमे एक उद्धारकर्ता की जरुररत है। यदि आपके जीवन में अंगीकार करने वाले कुछ पाप हैं, समय न गवाएं। ये पल सुनहरे हैं। "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है" (1 यूहन्ना 1:9)। जो धार्मिकता के के भूखे और प्यासे हैं वे तृप्त किये जाएंगें: क्योंकी यीशु ने हम से यह वायदा किया है। कीमती उद्धारकर्ता! उसकी बाहें हमें ग्रहण करने के लिए तैयार हैं, और उसका प्रेम का महान हृदय हमें आशीष देने की प्रतीक्षा कर रहा है।

उद्धारकर्ता ने मनुष्य की संतानों के प्रति कैसा अवर्णनीय प्रेम प्रकट किया है! न केवल वह पाप कलंक को हमसे दूर करता है, वरन हमें हमारे मन को धोता और शुद्ध करता है, अपनी धार्मिकता के वस्त्र पहनाकर, जो बिना किसी दाग के हैं, स्वर्ग के करघे में बुने हुए। वह न केवल पापी से श्राप को दूर करता, परन्तु उसे स्वंय के साथ एकता में लाता है, उस पर धार्मिकता की किरणों को चमकाकर। उसका स्वर्गीय संसार में स्वागत होता है, परमेश्वर के प्रिय में ग्रहण किया जाता है। कौन-सी महिमा पाप में गिरे मनुष्य, पश्चाताप और विश्वास के द्वारा, परमेश्वर के पास वापस ला सकता है!

(9) यीशु अपनी हर "भेड़" को कैसे बुलात है जो उसके विशेष प्रेम और हमारे लिए भलाई को दिखाता है?

उसके लिये द्वारपाल द्वार खोल देता है, और भेंड़ें उसका शब्द सुनती हैं, और वह अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर बुलाता है और बाहर ले जाता है (यूहन्ना 10:3)

प्रत्येक मनुष्य को यीशु ऐसे जानता है जैसे कि केवल उसी व्यक्ति के लिए यीशु मरा। हर एक दिल की निराशा उसके हृदय को स्पर्श

करती है। सहायता के लिए चिल्लाने की आवाज उसके दिल तक पहुंचती है। वह उन्हें बुलाता है, "मेरे पीछे हो लो," और उसकी आत्मा उनसके हृदयों में मडराती है ताकि वह उन्हें ओर खींच ले। बहुत से उसकी ओर खीचना नहीं चाहते। यीशु जानता है वे कौन हैं। वह यह भी जानता है की कौन ख़ुशी से उसकी आवाज को सुनता है, और जो उसकी पासबानी देखभाल के प्रति पूरी तरह आधीन होने के लिए तैयार हैं। वह कहता है, "मेरी भेड़ मेरी आवाज सुनती है, और मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मुझे जानती हैं और मेरे पीछे चलती हैं"। वह हर एक ध्यान रखता है जैसे इस धरती पर उनको छोड़ कोई है ही नहीं।

पूर्वी चरवाहे अपनी भेड़ों को नहीं चलाते। वह जबरदस्ती या डर पर निर्भर नहीं; परन्तु उनके आगे चलता है, और उन्हें बुलाता है। वे उसकी आवाज को पहचानती हैं; और उसके बुलाने से आज्ञा मानती हैं। उसी प्रकार उद्धारकर्ता-चरवाहा उसकी भेड़ के साथ। पवित्रशास्त्र कहता है "तू ने मूसा और हारून के द्धारा, अपनी प्रजा की अगुवाई भेड़ों की सी की"। भविष्यवक्ता के द्वारा, यीशु ने कहा, यहोवा ने मुझे दूर से दर्शन देकर कहा है। मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूँ; इस कारण मैं ने तुझ पर अपनी करुणा बनाए रखी है"। वह किसी को अपने पीछे चलने के लिए दबाव नहीं देता। मैंने "उनको खींचा", उसने कहा, "मैं उन को मनुष्य जानकर प्रेम की डोरी से खींचता था"। भजन 77:20; यिर्मियाह 31:3; होशे 11:4

यह दंड का डर नहीं, या आशा का अनन्त फल, जो यीशु के चेलों को उसका अनुसरण करने में अगुवाई करता है। वे उद्धारकर्ता के अतुल्य प्रेम को देखते हैं, जो उसके धरती के सफर में उसने प्रकट किया था, बैतलह्म की चरणी के लेकर कलवरी के क्रूस तक, और उसकी दृष्टि का आकर्षण, यह मन को पिघला देता और नियंत्रित करता है। प्रेम देखनेवालों के हृदय में जागता है। वे उसकी आवाज को सुनते हैं, और वे उसका अनुसरण करते हैं।

मैं धन्यवादी हूँ कि परमेश्वर मुझे अपने प्रेम, धीरज और दया और तर्किक तरीके के अपनी ओर खींचता है और शैतान के जबरदस्ती के तरीके को नहीं अपनाता।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं धन्यवादी हूँ कि, परमेश्वर की मसीह के वरदान के द्वारा, फिरौती मेरे छुटकारे के लिए दे दी गई है। मैं इस अदभुत

अविनाशी विरासत को ग्रहण करता हूँ जो वह अपने प्रेम में उन सबको देता है जो उसको ग्रहण करते हैं।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा, मैं चुनाव करता हूँ, मेरे घमंड, स्वार्थ से मुड़कर और उन आशीषों को ले लेता हूँ जो वह इस जीवन में और इस जीवन के बाद भी मुझे देना चाहता है।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं यीशु की प्रेम-पूर्वक बुलाहट को सुनता हूँ और मेरे जीवन को स्वंय बलिदानी वेदी पर चढ़ा देता हूँ। मैं मांगता हूँ और उसकी ईच्छा को मेरे जीवन के द्वारा पूरा होने लिए बहुतायत से अनुमति देता हूँ।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

पाठ 9

क्रूस को देखना

(1) पवित्र शास्त्र कैसे उस व्यवहार का विवरण देता है जो यीशु ने अपने महान प्रेम के कारण हमारे लिए सहा?

वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा और अपना मुंह न

खोला; जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय वा भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुंह न खोला। (यशायाह 53:7)

यीशु की ओर ताकने के द्वारा, हम उसके प्रेम को बिना समानांतर देख पाएंगें, कि उसने दोषित पापी का स्थान ले लिया, और उसमें अपनी दागरहित धार्मिकता डाल दी। जब एक पापी उद्धारकर्ता को क्रूस पर अपने स्थान पर मरते देखता है, उसकी क्षमा वाला प्रेम, प्रेम उसके हृदय को खोल देता है। पापी मसीह से प्रेम करता है, क्योंकी मसीह ने उससे प्रेम किया, और प्रेम व्यवस्था की परिपूर्णता है। पश्चातापी मन मानता है कि परमेश्वर "हमें हमारे पापों और सारी अधार्मिकता से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है"। परमेश्वर का आत्मा विश्वासी के मन में कार्य करता है, और उसे योग्य बनता है कि वह आज्ञाकारिता की एक छोर से दूसरी छोर तक धीरे-धीरे बढ़ें, बल से बल, और अनुग्रह से अनुग्रह की ओर बढ़ता जाए।

मेरा पिता तुमसे इतना प्रेम करता है कि वह मुझसे और ज्यादा प्रेम करता है क्योंकी मैंने तुम्हे छुड़ाने के लिए अपना जीवन दे दिया....क्या चेले इस प्रेम को समझ पाए अपने उद्धारकर्ता को निंदा, संदेह, नकारा जाते हुए देख कर, उसे गतसमनी में पीड़ित होते देखकर, और क्रूस के कलवरी पर उसकी मृत्यु को देखकर। यह ऐसा गहरा प्रेम है जिसे समझा नहीं जा सकता। जैसे चेलों इसे समझा, जैसे उनकी समझ ने परमेश्वर की ईश्वरीय दया को समझा, वे इस बात को जान पाए कि इस मायने में पुत्र की पीडाएं पिता का पीडाएं हैं।

(2) यदि हम जीवन की उलझनों में न उलझें और उसकी अपेक्षा यीशु की ओर अपना उद्धारकर्ता करके देखें, उदाहरण और हमारे लिए चरित्र का नमूना, वह कैसे हमारा लेखक और सिद्धक ठहरेगा?

और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें; जिस ने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्ज़ा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा। (इब्रानियों 12:2)

मसीह की संतान होने के नाते, उसे तांकना भी हमारा सौभाग्य है, विश्वास की आँखों को उस पर लगाये रहना। जैसे हम निरंतर उस पर केन्द्रित होते हैं, उसकी उपस्थिति का प्रकाश हमारे मन के

कक्षों में बहने लगता है। मसीह की ज्योति इस प्राण रूपी मंदिर में शांति लाती है। मन परमेश्वर के साथ ठहर जाता है। सारी उलझनें और चिंताएं मसीह को समर्पित कर दी जाती हैं। जैसे हम निरंतर उसकी ओर देखते हैं, उसकी तस्वीर हमारे हृदयों में छप जाती है, और प्रतिदिन हम पर प्रकट होती है।

हमें किसी मनुष्य की नकल करने की आवश्यकता नहीं है। हमारे नमूना बनने के लिए कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति नहीं है। हमें मनुष्य यीशु मसीह की ओर ताकना हैं, जो धार्मिकता और पवित्रता की सिद्धता में परिपूर्ण है। वह हमारे विश्वास का कर्ता और सिद्धक है। वह नमूना पेश करने वाला है। उसका अनुभव उस अनुभव के बराबर जो हमारे पास होना चाहिये। इसलिए आइये, आपना मन इस जीवन की उलझनों और समस्याओं से परे रखें, और उनको उस पर डाल दें, ताकि उनको देखने के द्वारा हम उसकी समानता में बढ़ सकें। हम सुरक्षित उसकी ओर देख सकें; क्योकि वह अति-बुद्धिमान है। जैसे हम उसकी ओर देखते और सोचते हैं, वह हमारे भीतर बस जाएगा, महिमा की आशा।

(3) हम मेमने के लहू से क्या प्राप्त करते हैं और उसके अनुग्रह की बहुतायत और जो सबसे महान विषय है जिस पर हमारे मन स्थिर रह सकते हैं?

इस्राएल यहोवा पर आशा लगाए रहेक्योंकि यहोवा ! करूणा करने वाला और पूरा छुटकारा देने वाला है। (भजनसहिता 130:7)

उद्धार की योजना, परमेश्वर का न्याय और प्रेम का प्रकटीकरण करके, स्थिर संसार में दल-बदली के विरुद्ध अनंत सुरक्षा प्रदान करती है, और उनके मध्य भी जो मेमने के लहू से छुडाये जाएंगे। केवल आशा ही सिद्ध भरोसा है जो अंत तक हमें बचा सकता है उन सभी को जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आयेंगें। क्रूस के कलवरी पर यीशु की मृत्यु इस संसार में हमारा एकमात्र भरोसा है, और यही आने वाले जीवन में हमारा विषय होगा। दुःख की बात है हम प्रायश्चित के मूल्य को नहीं समझ पाते! यदि हम उसको समझ पाते तो हमेशा उसके बारे में बात करते। परमेश्वर के वरदान उसके प्रिय पुत्र में समझ से बाहर प्रेम का प्रकटीकरण है। यह अंतिम था जो परमेश्वर व्यवस्था का सम्मान करने के लिए क्र सकता था, और अपराधियों को बचा सकता था। मनुष्य को क्यों नहीं छुटकारे के विषय पर अध्ययन करना चाहिये? यदि यह महान विषय है मानवीय बातचीत का। यदि लोग मसीह के प्रेम पर चिंतन करेंगें, जो क्रूस पर दिखाया गया है , उनका विश्वास

उसके बहे हुए लहू को समझने के द्वारा दृढ़ होगा, और वे पाप से उद्धार पायेंगे और शुद्ध होंगे।

(4) उसके प्रेम की कौन-से चार मुख्य विशेषताएं मसीह ने क्रूस पर प्रकट की जब वह निस्वार्थ और स्वेच्छा से हमारे स्थान पर ईश्वरीय बलिदान बना?

तेरे सिंहासन का मूल, धर्म और न्याय है; करूणा और सच्चाई तेरे आगे आगे चलती है। (भजनसहिता 89:14)

स्वेच्छापूर्वक हमारे ईश्वरीय स्थानापन्न ने अपने प्राण को न्याय की तलवार पर बेधने के लिए दे दिया, ताकि हम नाश न हों परन्तु अन्नत जीवन पाएं। यीशु ने कहा, "मैं अपना जीवन देता हूँ ताकि उसे वापस प् सकूं। मेरे पास अपना प्राण देने की सामर्थ है, और उसे दोबारा लेने की" (यूहन्ना 10:17,18)। पृथ्वी का कोई मनुष्य या स्वर्ग का कोई दूत हमारे पापों के लिए दाम नहीं चुका सकता था। केवल यीशु ही बलवा करने वाले मनुष्य को बचा सकता था। उसमें मनुष्यता और ईश्वरता एक साथ थी, और इसी बात ने कलवरी के क्रूस को प्रभावशाली बनाया। क्रूस पर दया और सत्य इकट्ठे मिलते हैं, धार्मिकता और शांति एक-दूसरे को चुम्बन करते हैं।

निस्वार्थ प्रेम का प्रकटीकरण जैसे यीशु का मानवजाति के छुटकारे के लिए स्वेच्छापूर्वक स्वंय का बलिदान पिता के प्रेम का एक और कारण बन गया। उद्धार की योजना इस सृष्टि की उत्पत्ति से पहले ही बनाई गई थी (प्रकाशितवाक्य 13:8)। यीशु का पुनरुत्थान अन्नत जीवन का उतना ही भाग था जितना की क्रूस पर चढ़ाया जाना। यीशु मृत्यु के नियन्त्रण से होकर गुजरेगा परन्तु थोड़े समय के लिए ही (भजनसहिता 16:10; और प्रेरितों के काम 2:31-32) और फिर वह महिमान्वित होकर जीवन और पुनरुत्थान बन कर आता है। (यूहन्ना 11:25) और मनुष्य का मध्यस्थ (इब्रानियों 7:25)। उसकी निंदा के परिणामस्वरूप पिता उसे ऊँचा उठाएगा और उसे सब नामों में ऊँचा नाम देगा (फिलिप्प्यों 2:9)।

(5) यदि हम छुटकारे की योजना को समझने का प्रयत्न करें और यूहन्ना के अनुसार क्रूस पर, हम इस संसार को क्या उद्घोषित करने के लिए आनंदित होंगें?

दूसरे दिन उस ने यीशु को अपनी ओर आते देखकर कहा, देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत के पाप उठा ले जाता है! (यूहन्ना 1:29)

जब मसीह के क्रूस की ओर ध्यान लगाया जाता है, सम्पूर्ण प्राण विशाल हो जाता है। उद्धारकर्ता के प्रेम का ज्ञान मन पर नियन्त्रण करने लगता है, और मन को समय और समझ से बढ़कर होने वाली बातों की और ले जाता है। आइयें उन सारी स्थायी बातों की ओर मन लगायें उस ज्योति की ओर जो क्रूस से चमकती है। आइये उस निंदा की गहराई को समझने का प्रयत्न करें जो हमारे उद्धारकर्ता ने हमें अनंत सम्पन्नता देने के लिए ले ली। जैसे हम छुटकारे की योजना का अध्ययन करते हैं, हमारा हृदय उद्धारकर्ता धड़कन को अनुभव करेगा, और उसके चरित्र के आकर्षण से भरपूर होगा।

यह मसीह का प्रेम है जो हमारा स्वर्ग बनाता है। परन्तु जब हम उसके प्रेम के विषय में बताना चाहते हैं, भाषा असफल हो जाती है। हम इस पृथ्वी पर उसके जीवन के विषय में सोचते हैं, हमारे लिए उसका बलिदान; हम स्वर्ग में एक मध्यस्थ के रूप में उसके कार्य को देखते हैं, उस घर के लिए जो वह उनके लिए बना रहा है जो उससे प्रेम करते हैं; और हम कर सकते हैं परन्तु हम पुकारते हैं, "वाह मसीह के प्रेम की ऊंचाई और गहराई!" जैसे हम क्रूस के नीचे विलम्ब करते हैं, हम परमेश्वर के प्रेम के मुर्च्छित प्रेम की विचारधारा को पाते हैं, और हम कहते हैं, "प्रेम इसमें नहीं, कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, परन्तु इसमें की परमेश्वर ने हम से प्रेम किया, और अपने पुत्र को हमारे पापों के बलिदान होने के लिए इस संसार में भेजा"। परन्तु हमारे मसीह के बारे में सोचने में, हम केवल प्रेम के उस किनारे पर विलम्ब कर रहें हो जिसको मापा नहीं जा सकता। उसका प्रेम ऐसे है जैसे कि विशाल सागर, बिना गहराई और किनारे के।

सभी सच्चे चेलों में यह प्रेम, पवित्र आग के समान, हृदय की वेदी पर जलता है। यह पृथ्वी पर ही परमेश्वर का प्रेम यीशु में प्रकट हुआ। यह पृथ्वी पर उसके बच्चों को दोषरहित जीवन जीने के द्वारा उसके प्रेम को प्रकाशित करना है। उस प्रकार, पापी क्रूस परमेश्वर के मेमने को देखने के लिए क्रूस पर आएंगें

(6) क्या होगा यदि हम मसीह की और ताकें और उसकी महिमा, उसका प्रेमी चरित्र, और उसके अतुल्य प्रेम के माप को देखें?

परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश कर के बदलते जाते हैं॥ (2 कुरन्थियो 3:18)

मसीह के प्रेम की देखें, उसके चरित्र के प्रेमी आकर्षण को देखें, और उसको देखने के द्वारा आप उसकी समानता में बदल जाएंगें। वह धुंध जो मसीह और मनुष्यों के बीच बाधा डालती है दूर हो जाएगी जब हम विश्वास के द्वारा शैतान की नारकीय छाया को अतीत में छोड़ देंगें और उसकी व्यवस्था में परमेश्वर की महिमा देखेंगें, और मसीह की धार्मिकता।

शैतान हमारी दृष्टि से यीशु पर पर्दा डालना चाहता है, उसके प्रकाश को हमसे छिपाने के लिए; क्योंकी यदि हम उसकी महिमा की एक झलक भी देख लें, हम उस से आकर्षित हो जाएंगें। पाप से यीशु का आकर्षण छिपा लेता है; पक्षपात, स्वार्थ, स्वंय-धार्मिकता, और अभिलाषा हमारी आखों को अँधा कर देते हैं, ताकि हम उद्धारकर्ता को न पहचान सकें। वाह! यदि हम विश्वास के द्वारा परमेश्वर के निकट आयें, वह हम पर अपनी महिमा प्रकट करेगा, जो उसका चरित्र है, और परमेश्वर की स्तुति मनुष्य के अन्दर से निकलेगी और मनुष्यों को आवाजों से गूँज उठेगी। तब हम हमेशा के लिए परमेश्वर के विरुद्ध पाप न करने के द्वारा और अविश्वास और संदेह के द्वारा शैतान को महिमा देना बंद कर देंगें। हम हमेशा ठोकर खाना बंद कर देंगें, बलवा करना और शोक करना, और परमेश्वर की वेदी को अपने आसुओं से गीला करके ढाप देंगे।

(7) पौलुस के समान कौन-से अदभुत विषय पर हमारे होठ उत्साह के साथ बोलने चाहिये और हमारे मन निरंतर उसमें बने रहने चाहिये?

क्योंकि मैं ने यह ठान लिया था, कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह, वरन क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूं। (1 कुरन्थियो 2:2)

मनन के लिए कैसा विषय जो यीशु का बलिदान है यीशु ने खोये हुए पापियों के लिए बनाया। "परन्तु वह हमारे ही अपराधो के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जाएं"। (यशायाह 53:5) कैसे हम उन आशीषों को समझ सकते हैं जो हमारी पहुंच में हैं?क्या यीशु

इससे अधिक सह सकता था? क्या वह हमारे लिए और बहुतायत की आशीषें खरीद सकता था? क्या यह सोचकर हमारा दिल नहीं पिघलना चाहिये की हमारे कारण उसने सारा आनन्द और स्वर्ग की महिमा छोड़ दी और गरीबी और निंदा, और निर्दयी पीड़ा और भयानक मृत्यु सही? यदि उसने अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा हमारे लिए रास्ता नहीं खोला होता, हमारे पास केवल अन्धकार का डर और निराशा का कष्ट होता। हमारी वर्तमान अवस्था में, हम कितने धन्य और आशिषित हैं, हम नहीं समझ सकते कितनी गहराई से हम छुड़ाए गए हैं। हम नहीं माप सकते हमारी पीड़ा कितनी गहरी होती, हमारे श्राप कितने महान, यदि यीशु ने अपनी मनुष्यी प्रेम, सहानुभूति बाहों में न लिया होता और उठाया न होता।

(8) पौलुस के समान, कौन-से विषय पर मसीह में उद्धार को पाने वाले उत्साह के साथ घमंड कर सकते हैं

पर ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमण्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का जिस के द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं। (गलातियों 6:14)

बहुत से जो मसीही होने का दावा करते हैं सांसारिक कुशलता पर उत्साहित होते हैं, और उनकी रूचि नए और उतेजित करने वाले मनोंरजन के द्वारा जागते हैं, जबकि वे ठंडे हृदयों के हैं, और जमें हुए लगते हैं, परमेश्वर के कार्यों में। यहाँ एक विषय है, तुच्छ औपचारिक, जो आपको उत्साहित करने के लिए पर्याप्त है। अन्नत रुचियां उसमें सम्मिलित हैं। उस विषय पर शांत रहना पाप है। कलवरी का दृश्य गहरी भावनाओं के लिए आमंत्रित करता हैं। आप को इस विषय पर छोड़ दिया जाएगा यदि आप उत्साह प्रकट करते हैं तो। कि मसीह, सर्वोत्तम, मासूम, को ऐसी दर्दनाक मृत्यु सहनी पड़ें, इस संसार के पापों का भार उस पर लादकर, हमारी सोच और विचार उसे समझ नहीं सकते। "मसीह के प्रेम की ऊंचाई और गहराई को हम नहीं समझ सकते। उद्धारकर्ता के प्रेम की गहराई का मनन हमारे मन को रूपांतरित कर देना चाहिये, हमारे स्नेह को ऊंचा उठाना चाहिये, और हमारे चरित्र को सम्पूर्ण तरीके से परिवर्तन कर देना चाहिये। प्रेरित पौलुस की भाषा यह है: "मैं तुम्हारे मध्य में कुछ और नहीं सीखना चाहता वरन यह की यीशु, और क्रूस पर चढ़ाया गया यीशु"। हम भी कलवरी की ओर देखकर पुकार सकते हैं "पर ऐसा न हो, कि मैं और किसी बात का घमण्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का जिस के द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूं"।

(9) हम संतों के साथ कैसे अनंतता बितायेंगें, जिसको समझने का प्रयत्न कर रहे हैं?

सब पवित्र लोगों के साथ भली भांति समझने की शक्ति पाओ; कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊंचाई, और गहराई कितनी है।और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है, कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ॥ (इफिसियों 3:18-19)

यह मसीह का प्रेम है जो हमारा स्वर्ग बनाता है। परन्तु जब हम उसके प्रेम के विषय में बताना चाहते हैं, भाषा अचूक हो जाती है। हम इस पृथ्वी पर उसके जीवन के विषय में सोचते हैं, हमारे लिए उसका बलिदान; हम स्वर्ग में एक मध्यस्थ के रूप में उसके कार्य को देखते हैं, उस घर के लिए जो वह उनके लिए बना रहा है जो उससे प्रेम करते हैं; और हम कर सकते हैं परन्तु हम पुकारते हैं, "वाह मसीह के प्रेम की ऊंचाई और गहराई!" जैसे हम क्रूस के नीचे विलम्ब करते हैं, हम परमेश्वर के प्रेम के मुर्च्छित प्रेम की विचारधारा को पाते हैं, और हम कहते हैं, "प्रेम इसमें नहीं, कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, परन्तु इसमें की परमेश्वर ने हम से प्रेम किया, और अपने पुत्र को हमारे पापों के बलिदान होने के लिए इस संसार में भेजा"। परन्तु हमारे मसीह के बारे में सोचने में, हम केवल प्रेम के उस किनारे पर विलम्ब कर रहें हो जिसको मापा नहीं जा सकता। उसका प्रेम ऐसे है जैसे कि विशाल सागर, बिना गहराई और किनारे के।

सभी सच्चे चेलों में यह प्रेम, पवित्र आग के समान, हृदय की वेदी पर जलता है। यह पृथ्वी पर ही परमेश्वर का प्रेम यीशु में प्रकट हुआ। यह पृथ्वी पर उसके बच्चों को दोषरहित जीवन जीने के द्वारा उसके प्रेम को प्रकाशित करना है। उस प्रकार, पापी क्रूस परमेश्वर के मेमने को देखने के लिए क्रूस पर आएंगें

(10) सम्पूर्ण अनंतता के दौरान कौन से स्तुति के गीत होंगे पुरे विश्व के प्रत्येक मनुष्य के द्वारा जैसे वे क्रूस के सम्पूर्ण मूल्य को समझने का प्रयत्न करते हैं?

कि हे हमारे प्रभु, और परमेश्वर, तू ही महिमा, और आदर, और सामर्थ के योग्य है; क्योंकि तू ही ने सब वस्तुएं सृजीं और वे तेरी ही इच्छा से थीं, और सृजी गईं॥ (प्रकाशितवाक्य 4:11)

इस जीवनकाल में हम केवल छुटकारे के अदभुत विषय को समझने की शुरुवात कर सकते हैं। हमारी सिमित समझ के द्वारा हम उत्सुकता से उस निंदा और महिमा, मृत्यु और जीवन, न्याय और दया, को समझ सकते हैं, जो क्रूस पर आकर रुक जाते हैं; परन्तु फिर भी अपनी मानसिक ताकतों को हम सम्पूर्ण तरीके चाहे जितना भी समझना चाहें, नहीं समझ सकते। हम उस छुड़ाने वाले प्रेम की गहराई, ऊंचाई और लम्बाई को धुंधला ही समझ सकते हैं। छुटकारे का कार्य सम्पूर्ण तरीके से नहीं समझा जा सकता, जब छुडाये हुए देखते हैं जैसे वे दिखते हैं और जानते हैं जैसे वे जाने जाते हैं; परन्तु अनंत युगों तक, नई सच्चाई विस्मित और चाहने वाले मन पर निरंतर प्रकट होगा। यद्यपि धरती के दर्द और दुःख और परीक्षाएं खत्म होंगी, और श्राप दूर होगा, परमेश्वर के लोगो के पास उनके उद्धार का क्या मूल्य है उसका एक विशिष्ट, बुद्धिमतापूर्ण ज्ञान होगा

(11) चौबीस प्राचीन और छुड़ाए हुए लोग परमेश्वर के सामने क्या रखेंगें जब वे उसके लिए स्तुति के गीत गाएंगे?

तब चौबीसों प्राचीन सिंहासन पर बैठने वाले के साम्हने गिर पड़ेंगे, और उसे जो युगानुयुग जीवता है प्रणाम करेंगे; और अपने अपने मुकुट सिंहासन के साम्हने यह कहते हुए डाल देंगे।

मसीह का क्रूस पूरी अनंतता तक छुड़ाए हुओं का गीत और ज्ञान होगा। मसीह में महिमा पाए क्रूसित मसीह को देखने पायेगें। यह कभी भी भूला नहीं जाएगा जिसकी सामर्थ ने सब कुछ रचा और असंख्य संसारों को संभाल- परमेश्वर का प्रिय, स्वर्ग का प्रताप, जिसको करुब और चमकते सराफ भी महिमा करने के लिए ललायित रहते हैं- उसने पाप में गिरे मनुष्य के लिए स्वंय को नम्र बनाया; कि उसने पाप के दोष और निंदा को सहा, और उसके पिता का उससे चेहरा छिपाया जाना, जब तक इस खोये हुए संसार की हाय उसका हृदय न तोड़ दे, और उसके जीवन को क्रूस पर न कुचल दे। की सारी सृष्टि का रचयिता, सभी मंजिलों का मध्यस्थ, अपनी सारी महिमा को छोड़कर और स्वंय को निन्दित करने के द्वारा मनुष्य के लिए, इस विश्व को विस्मित और सराहा जाएगा। जैसे उद्धार पाए हुए राष्ट्र अपने छुड़ाने वाले की ओर देखते हैं और उसके सिंहासन की महिमा को, जो अनंतता से अनंतता तक है, और यह जानते हुए कि उसके राज्य का कोई अंत नहीं, वे उत्साहपूर्ण गीत में बदल जाते हैं। " आदर, आदर के योग्य मेमना, जो हमारे लिए वध हुआ, और जिसने हमें परमेश्वर के लिए छुड़ाया, अपने स्वंय के कीमती लहू के द्वारा"। (ए जी 98)

जैसे मैं इस बात को अच्छे से समझता हूँ कि मसीह ने शरीरिक और मानसिक रूप से मेरे लिए कितना सहा मैं उसके अतुल्य प्रेम को देखता हूँ जैसे उसने मुझ दोषी पापी का स्थान लिया।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मै सदा विश्वास की आखों को मसीह पर स्थिर रखना चाहता हूँ और वही मेरे विश्वास कर कर्ता और सिद्धक है।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत
मैं आश्चर्यचकित हूँ कैसे परमेश्वर की छुटकारे की योजना स्पष्ट रूप से दोनों परमेश्वर के प्रेम और न्याय को प्रकट करता है। कि वह अपने पुत्र को मुझ जैसे आशाहीन पापी को ऐसा दाम चुकाकर छुड़ाने के लिए भेजेगा यह सत्य में उसके समझ से बाहर प्रेम का प्रकटीकरण है। कलवरी पर मैं धार्मिकता, न्याय और दया के मध्य उचित संतुलन को देखता हूँ।
गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

पौलुस के समान, मैं यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया उस विषय पर रहना चाहता हूँ और संसार को उनके लिए उसके महान के विषय में बताना चाहता हूँ।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं अनंतता को यीशु के चरणों में बिताना चाहता हूँ हमेशा खोजते और सीखते हुए उसके प्रेम को समझने के प्रयत्न में

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं उस दिन की प्रतीक्षा में हूँ जब मैं उसके प्रेम के भय में अपना मुकुट यीशु के चरणों में रखूंगा।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

पाठ 10

मसीह का प्रेम वरदान

(1) जैसे हम बाइबल में सत्य को खोजते हैं और उसके छुड़ाने वाले प्रेम के विषय में सीखते हैं, इम्माउस के रास्ते में चेलों के समान, क्या परिणाम होगा?

उन्होंने आपस में कहा; जब वह मार्ग में हम से बातें करता था, और पवित्र शास्त्र का अर्थ हमें समझाता था, तो क्या हमारे मन में उत्तेजना न उत्पन्न हुई? (लूका 24:32)

मसीह में सत्य और मसीह के द्वारा अपार है। बाइबल का छात्र देखता है, जैसे कि वह उस सोते को देखता हों जो देखते-देखते और गहरा और विशाल दिखने लगता है। इस जीवन में हम परमेश्वर के प्रेम को अपने पुत्र को हमारे पापों के बलिदान के लिए देने के रहस्य को नहीं समझ पाएंगें। हमें छुटकारा देने वाले का

कार्य इस धरती पर और कभी भी ऊच्चतम कल्पना का विषय होगा। मनुष्य अपनी हर एक मानसिक ताकत का प्रयोग कर सकता है इस रहस्य को समझने के लिए, परन्तु उसका मन मुर्छित और थक जाएगा। सबसे परिश्रमी खोजकर्ता अपने सामने एक न थमना वाला, और असीमित समुन्द्र पायेगा।
सत्य जैसे यीशु में अनुभव किया जाता है, परन्तु उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। उसकी ऊंचाई और गहराई और लम्बाई हमारे ज्ञान के भीतर कभी नहीं आ सकती। हम अपनी सोच की अंतिम सीमा तक सोच कर भी, हमन प्रेम की धुंधली सी रुपरेखा को देख पायेंगे जिसका वर्णन करना असंभव होगा, वह इसलिए कि यह आकाश से भी ऊँचा हैं, परन्तु वह पृथ्वी तक झुका ताकि पूरी मानवजाति पर परमेश्वर के स्वरूप की मुहर लगाए।

परन्तु फिर भी हमारे लिए ईश्वरीय दया के विषय में सब कुछ देखना संभव है। यह केवल नम्र और टूटे हुए मनुष्यों पर ही प्रकट किया जाता है। हम परमेश्वर की दया को केवल उतने ह अनुपात में समझ सकते हैं जितना की हम उसके बलिदान को सराहते हैं। जैसे हम अपने हृदय में परमेश्वर के वचन को खोजते हैं, छुटकारे का महान विषय खोजबीन के लिए हमारे सामने खुल जाएगा। जैसे हम उसे देखते जाएंगे वैसे उसकी चमक बढ़ती जाएगी, और जैसे हम उसको समझने का प्रयत्न करेंगे, उसकी ऊंचाई और गहराई बढ़ जाएगी।

(2) जब कोई भी आशा नहीं थी, उस समय मसीह ने कौन-सी ऐसी चीज की जिससे दोनों उसका और पिता का प्रेम हम पर प्रकट हुआ?

पिता इसलिये मुझ से प्रेम रखता है, कि मैं अपना प्राण देता हूं, कि उसे फिर ले लूं। (यूहन्ना 10:17)

जब पाप और अपराध के परिणामस्वरूप आदम और हव्वा की सम्पूर्ण आशा खो गई थी, जब न्याय ने पापी के मारे जाने की मांग की, मसीह ने स्वंय को इस संसार के पापों के लिए बलिदान होने के लिए दे दिया। मसीह हमारे लिए स्थानापन्न और मनुष्य के लिए निश्चयता बना।

कोई भी नहीं केवल परमेश्वर का पुत्र हमारे छुटकारे के कार्य को पूर्ण कर सकता था; क्योंकी केवल वही जो पिता की गोद में था उसकी घोषणा कर सकता था। केवल वही जो परमेश्वर के प्रेम की ऊंचाई और गहराई को जानता था उसका प्रगटीकरण कर सकता

था। पाप में गिरे मनुष्य के स्थान पर असीमित बलिदान से कमतर कुछ भी इस खोई हुई मानवता के लिए परमेश्वर का प्रेम प्रकट कर सका।

"परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया, कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया"। उसने उसे न केवल मनुष्यों के मध्य रहने के लिए दिया, उनके पापों का बोझ उठाने के लिए, और उनके लिए बलिदान होकर मरने के लिए दिया। उसने उसे पाप में पड़ी मानवजाती के लिए दे दिया। मसीह को मानवता के रुचियों और जरूरतों के समान बनना था। वह जो परमेश्वर के साथ एक था उसने स्वंय को मनुष्य की संतानों के साथ जोड़ लिया उस डोरी से जो कभी टूट नहीं सकती। यीशु उन्हें "अपने भाई कहने से लज्जित नहीं होता" (इब्रानियों 2:11); वह हमारा बलिदान है, हमारा मध्यस्थ, हमारा भाई, पिता के सिंहासन के सामने हमारे मानव रूप को लेकर, और अन्नत युगों तक मानवजाति के साथ जिन्हें उसने छुड़ाया- मनुष्य का पुत्र। और यह इसलिये कि मनुष्य बर्बादी से बाहर आ सके और पाप की गिरावट कि वह परमेश्वर का प्रेम प्रकट कर सके और पवित्रता का आनंद।

(3) जैसे हम हमारे स्वामी के वरदानों की बनावट को समझने का प्रयत्न करते हैं और हम सभी के लिए उसकी व्यक्तिगत प्रवाह, दाऊद के समय, हमारा क्या प्रतिउत्तर होगा?

यह ज्ञान मेरे लिये बहुत कठिन है; यह गम्भीर और मेरी समझ से बाहर है॥ (भजनसहिता 139:6)

आने वाले जीवन मसीह छुटकारा पाए हुओं की जीवन की नदी के किनारे अगुवाई करेगा और उन्हें जीवन के अदभुत सत्यों को सिखाएगा। वह उन पर प्रकृति के रहस्यों को प्रकट करेगा। वे देखेंगे की कैसे परमेश्वर ने उनके हाथों को पकड़ा हुआ है। वे महान कलाकार के द्वारा खेतों के फूलों के रंगने की कलाकृति को देखेंगें, और उस दयावान पिता के महान उद्देश्यों के विषय में सीखेंगें, जो प्रकाश की किरणों को बिखेरता है, छुड़ाए हुए स्वर्गदूतों के साथ धन्यवाद के स्तुति के गीतों को गाएंगें परमेश्वर के सर्वोत्तम प्रेम के लिए इस अधन्यवादित संसार में। तब इस बात को समझा जाएगा कि "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया, कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया , ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनंत जीवन पाए"।

(4) मसीह इस पृथ्वी पर हर एक परमेश्वर के बच्चे के हृदय को तैयार करने के लिए क्या करता है ताकि वह उसके द्वारा देने वाले उद्धार के वरदान को ग्रहण कर सके?

और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खीचूंगा। (यूहन्ना 12:32)

मसीह इस संसार में परमेश्वर का प्रेम प्रकट करने के लिए आया, ताकि सभी मनुष्यों को अपनी ओर आकर्षित करे। उसने कहा,'' और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खीचूंगा। (यूहन्ना 12:32)। उद्धार का पहला कदम मसीह के प्रेम के प्रति प्रतिउत्तर देना है।

(5) परमेश्वर मसीह के द्वारा हमें कौन-सा वरदान देता ही कि, यदि हम उसे ग्रहण करें, हमें अपनी शांति और क्षमा और हमारे जीवनों को अगुवाई करने का आश्वासन देता ह?

उसी को परमेश्वर ने प्रभु और उद्धारक ठहराकर, अपने दाहिने हाथ से सर्वोच्च कर दिया, कि वह इस्त्राएलियों को मन फिराव की शक्ति और पापों की क्षमा प्रदान करे। (प्रेरितों के काम 5:31)

परमेश्वर मनुष्य के पास संदेश के बाद संदेश भेजता है, उन्हें पश्चाताप की याचना करता है, ताकि वह उन्हें क्षमा कर सके, और उनके नामों के साथ क्षमा किये गए लिख सके। क्या पश्चाताप न होगा? क्या उसकी बुलाहट की ओर ध्यान न दिया जाएगा? क्या उसकी दया की याचना को नकार दिया जाएगा, और उसके प्रेम का तिरस्कार किया जाएगा? वाह! तब मनुष्य स्वंय को उस माध्यम से अलग कर लेगा जिसके द्वारा उसको अनंत जीवन मिल सकता है; क्योंकी केवल परमेश्वर ही पश्चाताप करने वाले को क्षमा दे सकता है!

उसके प्रेम के प्रकटीकरण के द्वारा, उसकी आत्मा की याचना के द्वारा, वह मनुष्यों को पश्चाताप के लिए आकर्षित करता है; क्योंकी पश्चाताप परमेश्वर का वरदान है, और जिसको वह क्षमा करता है उसको पहले पश्चातापी बनाता है। मनुष्य के पास सबसे मीठा आनन्द व्यवस्था का उलंघन करने के लिए परमेश्वर के सामने पश्चाताप करने के द्वारा आता है, और मसीह में विश्वास के द्वारा पापी का छुड़ाने वाला और मध्यस्थ बनकर।

यह इसलिए कि मनुष्य क्षमा के आनन्द को समझ सके, परमेश्वर की शांति, जिन्हें परमेश्वर उसके प्रेम के प्रकटीकरण के द्वारा खींचता है।यदि वे उसके खिचे जाने के प्रति प्रतिउत्तर दें, उसके अनुग्रह के लिए समर्पित हों, वह कदम-कदम पर उनकी अगुवाई करेगा, उसके परिपूर्ण ज्ञान के द्वारा, और यही अनंत जीवन है।

(6) मसीह से कौन-सा अनुग्रहकारी निमन्त्रण हमने प्राप्त किया जिसके प्रति हमें पश्चाताप से पहले प्रतिउत्तर देना चाहिये?

हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। (मत्ती 11:28)

कौन सा ऐसा व्यक्ति है जो कुरूप पश्चातापी बनना चाहता है? हमें क्या करना चाहिये? – उसे यीशु के पास आना है जैसे वह है, बिना विलम्ब किये। हमें विश्वास करना चाहिये कि मसीह का वचन सत्य है, और वायदे पर विश्वास करने का अर्थ है, मांगे, ताकि प्राप्त क्र सकें।

जब सच्ची मनसा मनुष्य को प्रार्थना करने के लिए उत्साहित करती है, तब वे व्यर्थ में प्रार्थना नहीं करेंगें। परमेश्वर अपने वचन की परिपूर्ण करेगा, और परमेश्वर के पास पहुंचने के लिए पश्चाताप के लिए अगुवाई करेगा और हमारे प्रभु यीशु मसीह की ओर विश्वास। वह प्रार्थना और प्रतीक्षा करेगा, और उनके पापों को दूर करेगा, और अपनी ईमानदारी का प्रकटीकरण करने के द्वारा परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने की सामर्थ देकर। वह प्रार्थना के साथ विश्वास को मिश्रित करेगा, और केवल उसमें विश्वास ही नहीं परन्तु व्यवस्था की बातों की आज्ञा भी मानना। वह उन सभी आदतों और संगतियों को त्याग देगा जो परमेश्वर उसे उसके हृदय को दूर कर सकता है।

(7) यद्यपि बहुतों में से एक, कौन-सा वरदान मसीह के प्रेम के प्रकटीकरण का सबसे महान वरदान था पाप में गिरे मनुष्य के लिए जो पाप और श्राप से घिरे हुए थे?

और प्रेम में चलो; जैसे मसीह ने भी तुम से प्रेम किया; और हमारे लिये अपने आप को सुखदायक सुगन्ध के लिये परमेश्वर के आगे भेंट करके बलिदान कर दिया। (इफिसियों 5:2)

मनुष्य के पतन ने सम्पूर्ण स्वर्ग को दुःख से भर दिया। जो संसार परमेश्वर ने बनाया था अब पाप के श्राप से भर गया था और ऐसे लोगों से भर गया था जिनकी आखिरी मंजिल केवल पीड़ा और मृत्यु थी। जिन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ा था उनके बचने

का कोई रास्ता नहीं था। स्वर्गदूतों ने अपने स्तुति के गीत गाने बंद कर दिए। स्वर्गीय स्थानों में केवल बर्बादी का शोक मनाय जा रहा था जो पाप के कारण उत्पन्न हुआ।

परमेश्वर का पुत्र, स्वर्ग का महिमामय प्रधान, पाप में गिरी हुई मानवजाति के लिए दया से भर गया। उसका हृदय असीमित दया से भर गया जैसे इस खोये हुए संसार की हाय उसके सामने उठने लगी। परन्तु ईश्वरीय प्रेम ने ऐसी योजना बनाई जिसके द्वारा मनुष्य छुटकारा पा सके। परमेश्वर की टूटी हुई व्यवस्था ने पापी के जीवन की मांग की। इस सम्पूर्ण संसार में केवल एक ही था जो यह क्र सकता था, मनुष्य के स्थान पर, उसके दावों को संतुष्ट क्र सकता था। क्योंकी ईश्वरीय व्यवस्था उतनी ही पवित्र है जितना की स्वंय परमेश्वर, केवल वही जो परमेश्वर के समान था अपराध के लिए हमारे स्थान पर मर सकता था। कोई भी नहीं केवल मसीह पाप में गिरे मनुष्य को व्यवस्था के श्राप से छुड़ा सकता था और उसके फिर से स्वर्ग के साथ एक कर सकता था। मसीह अपने ऊपर पाप की निंदा के लेगा- पाप जो पवित्र परमेश्वर के लिए बहुत अपमानजनक कि वह पिता और पुत्र को अलग कर देगा। मसीह दुःख की गहराई तक पहुंच जाएगा पाप में गिरे मनुष्य को बचाने के लिए।

(8) यीशु ने उसके पास आने वाले प्रत्येक पाप से पश्चाताप करने वाले से क्या वायदा किया है?

जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा, उसे मैं कभी न निकालूंगा। (यूहन्ना 6:37)

परन्तु बहुत से सोचते हैं कि उनमें विश्वास की कमी है, और इसलिए वे परमेश्वर से दूर रहते हैं। उनके प्राण, उनकी असहाय अयोग्यता में, अपने दयालु उद्धारकर्ता के दया पर स्वंय को डालते हैं। स्वंय को नहीं, परन्तु मसीह को देखें। जिसने मनुष्यों के बीच रहते हुए रोगियों को चंगा किया और दुष्टात्माओं को निकाला आज भी वही सर्वसामर्थी छुड़ाने वाला है। फिर उसके वायदों को छोड़ देता है जैसे जीवन के वृक्ष के पत्ते। "*जो* कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा, उसे मैं कभी न निकालूंगा। (यूहन्ना 6:37) । जैसे आप उसके निकट आते हैं, विश्वास करें कि वह आपको ग्रहण करता है. क्योंकी उसने वायदा किया है। आप कभी भी नाश न होंगें जब ऐसा करेंगें-कभी नहीं।

जब पश्चाताप करने वाल पापी मसीह के पास आता है, उसके दोष का विवेक और अयोयता, यह जानते हुए कि वह दंड के

योग्य है, परन्तु यीशु के प्रेम की दया पर निर्भरता के कारण, उसे दूर नहीं किया जाएगा। परमेश्वर का क्षमा करने वाला प्रेम उपलब्ध होता है, और आनंदमय गीत उसके हृदय से निकलता है उस असीमित दया और उद्धारकर्ता के प्रेम के कारण। इस सृष्टि की रचना से पहले स्वर्ग की सभाओं में उसके लिए प्रयोजन किया गया था, कि मसीह को स्वंय के ऊपर मनुष्यों के पापों की सजा लेनी होगी और उस में अपनी धार्मिकता डालनी होगी, यह आश्चर्य से उसे भरपूर कर देता है।

(9) दया की कौन-सी क्रिया के द्वारा यीशु ने अपना वर्णन से बाहर और अस्मानांतरण प्रेम उसने हम सभी पर प्रगट किया?

हम ने प्रेम इसी से जाना, कि उस ने हमारे लिये अपने प्राण दे दिए; और हमें भी भाइयों के लिये प्राण देना चाहिए। (1 यूहन्ना 3:16)

जब मन क्रूस के कलवरी की और आकर्षित होता है, मसीह असिद्ध दृष्टि के साथ निन्दित क्रूस पर पहचाना जाता है। वह कब मरा? पाप के परिणामस्वरूप। पाप क्या है? व्यवस्था का उलंघन। तब पापमय चरित्र को देखने के लिए खुलती हैं। यह हमारा पाठशाला शिक्षक है, जो दंडित करने के लिए दोष लगाता है। उपचार कहां है? व्यवस्था हमें मसीह की ओर खीचती है, जो क्रूस पर लटका कि ताकि वह अपनी धार्मिकता पाप में गिरे हुए लोगों में डाल दे, पापी मनुष्य इस प्रकार मनुष्य को पिता के सामने उसके धार्मिक चरित्र में प्रस्तुत करे।

दिन-रात मसीह के चरित्र का अध्ययन करें। यह उसकी कोमल दया थी, तुम्हारे प्राण के लिए उसका वर्णन से बाहर प्रेम, जिसके कारण उसने सारी निंदा, निरादर, गालियां, पृथ्वी पर उसको न समझा गया सहा। उसके निकट जाएँ, उसके हाथों और पैरों को छुओं, हमारे अधर्मों के लिए कुचला और हमारे अपराधों के कारण घायल हुआ। “हमारी शांति के लिए उसने ताड़ना सही, और उसके कोड़े खाने से हम चंगे होते हैं”।

समय न गवाएं, अनंतता में एक ओर दिन न बीतने दें, परन्तु जैसे तुम हो, तुम्हारी जो भी कमजोरियां, तुम्हारी योग्यताएं, तुम्हारा नकारा जाना, आने में देरी न करें...यीशु के पास आने की बुलाहट, उस मुकुट की प्रस्तुती जो कभी मिटेगा नहीं, जीवन, अन्नत जीवन जो परमेश्वर के साथ जीवन का माप है, और प्रलोभन से कम नहीं की तुम अपने सम्पूर्ण प्रेम से उसकी सेवा करो।

(10) किस के लिए मसीह ने सहने से बाहर और पीड़ा से भरे पाप का श्राप सहा?

और वही हमारे पापों का प्रायश्चित्त हैऔर केवल हमारे ही : नहीं, वरन सारे जगत के पापों का भी। (1 यूहन्ना 2:2)

मनुष्य को पाप सहने वाला नहीं बनाया गया, और वह पाप के उस भयानक श्राप को कभी नहीं जान सकता जिसे उद्धारकर्ता ने सहा। कोई दुःख उसके दुःख के साथ तुलना नहीं किया जा सकता जिस पर परमेश्वर का क्रोध सहने से बाहर दबाव के साथ पड़ा। मानवीय स्वभाव सह सकता है परन्तु सीमित दुःख और परीक्षा।सिमित केवल सीमित माप को ही सह सकता है, और मानवीय स्वभाव कांपने लगता है; परन्तु मसीह के स्वभाव में परीक्षा सहने की अधिक क्षमता थी, क्योंकी ईश्वरीय स्वभाव में मानवीय भी मौजूद था, और पीड़ा सहने की क्षमता उत्पन्न की जिसका परिणाम खोये हुए संसार के पाप था।

जो पीड़ा मसीह ने सही वह पाप के चरित्र की विचारधारा को गहरा और चौड़ा बना देती है, और प्रतिकार को परमेश्वर उन पर भेजेगा जो पाप में निरंतर बने रहते हैं। पाप की मजदूरी तो मृत्यु है परन्तु यीशु मसीह के द्वारा ,एक विश्वास करने वाले और पश्चाताप करने वाले के लिए अनंत जीवन है।

हमारा परमेश्वर कहता है, पाप के बोध में, स्मरण रखें कि मैं तुम्हारे लिए मरा। जब कुचले हुए और सताए हुए और मेरे कारण पीड़ित और सुसमाचार के लिए, मेरे प्रेम को याद रखें। जब तुम्हारे कर्तव्य ज्यादा लगें, और तुम्हारे बोझ सहने से ज्यादा, याद रखें तुम्हारे लिए मैंने क्रूस को सहा, उसकी निंदा को त्याग कर। जब तुम्हारा हृदय कोशिश से सिकुड़ जाए, याद रखें, तुम्हारा छुड़ाने वाला तुम्हारे लिए मध्यस्था करता है।

(11) जब हम किस तरह की परिस्थिति में होते हैं जब परमेश्वर स्वेच्छा-पूर्वक अपना वरदान और अनुग्रह हम पर करता है?

परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा। (रोमियो 5:8)

ऐसा नहीं कि हमने पहले उससे प्रेम किया मसीह ने किया; “जब हम पापी ही थे” वह हमारे लिए मरा। वह हमारे जंगल के अनुसार

हमसे व्यवहार नहीं करता। यद्यपि हमारे पाप दंड की के योग्य हैं, वह हमें दंड नहीं देता। वर्ष के बाद वर्ष वह हमारी कमजोरियों और अज्ञान को सहता है। हमारी भटकने के बावाजूद भी, हमारे दिल की कठोरता, हमारे द्वारा उसके वचन को नकारा जान, फिर भी उसका हाथ हम तक पहुंचता है।

अनुग्रह परमेश्वर का वह गुण है जो अयोग्य मनुष्योंके लिए प्रयोग किया गया। हमने उसे नहीं खोजा, परन्तु उसे हमें खोजने के लिए भेजा गया। परमेश्वर अपना अनुग्रह हम बरसाता है, इसलिए नहीं की हम योग्य हैं, परन्तु हम बहुत ही अयोग्य हैं। उसकी दया के प्रति हमारा एक ही दावा हमारी बड़ी आवश्यकता है।

(12) सुसमाचार में क्रूस का अदभुत वरदान क्या है जिसका प्रचार किया गया? वह किसका ध्यान खींचता है?
...जिन का समाचार अब तुम्हें उन के द्वारा मिला जिन्हों ने पवित्र आत्मा के द्वारा जो स्वर्ग से भेजा गयातुम्हें : सुसमाचार सुनाया, और इन बातों को स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की लालसा रखते हैं॥ (1 पतरस 1:12)

छुटकारे की योजना, जिसके द्वारा दयालु ईश्वरीय-मनुष्य छुड़ाने वाले ने मनुष्य को पाप की दासता से छुड़ाया, यह मनुष्यों और स्वर्गदूतों की समझ से बाहर है। यह समझ से बाहर रहस्य है, बहुत विशाल, सर्वोत्तम, कि हम इसे पूरी तरह से समझने की आशा नहीं कर सकते।
मसीह के बलिदान का पाप में गिरे मनुष्य के लिए कोई समानांतर नहीं है। प्रत्येक हृदय जो परमेश्वर के अनुग्रह से प्रज्जवलित है धन्यवाद के साथ और स्तुति के साथ उसके असीमित बलिदान के लिए छुड़ाने वाले के सामने झुकने के लिए तैयार है।

मैं धन्यवादी हूँ कि केवल मसीह, जो परमेश्वर के प्रेम की ऊंचाई और गहराई को जानता था, उसके प्रेम को प्रकट करने के लिए हमारे समान बना।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं धन्यवादी हूँ की मसीह , परमेश्वर का पुत्र, प्रेम और दया से मेरे लिए भरकर उस टूटी हुई व्यवस्था का दाम चुकाने के लिए तैयार था और मेरी निंदा और दोष को स्वंय के ऊपर लेने

के लिए तैयार था और मुझे दुःख की गहराई से छुड़ाने के लिए।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

जैसे मैं मसीह के लौक-प्रसिद्ध सोते की ओर देखता हूँ वह गहरा और चौड़ा होता हुआ दिखता है। मैं इस बात को समझना शुरू हो गया हूँ कि उसके प्रेम के समुन्द्र का माप समझना असंभव है। राजा दाऊद के समान मुझे कहना चाहिये, "यह ज्ञान मेरे लिए बहुत विशाल है, ऊच्च है, मैं इसे नहीं समझ सकता"।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं पश्चाताप के अदभुत वरदान के लिए धन्यवाद करता हूँ कि यह मसीह के प्रेम के ग्रहण करना मेरे लिए आसान बनाता है जैसे क्रूस पर मेरे लिए दर्शाया गया।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मसीह में विश्वास के द्वारा और वह वरदान जो मुझे देता है मैं उस वरदान को ग्रहण करना चाहता हूँ और मेरे जीवन में उसकी अगुवाई के लिए समर्पित करता हूँ।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

पाठ 11

मसीह का शान्ति का वायदा

(1) मसीह के महान प्रेम के कारण, कौन-सा आशा का वायदा यीशु जीवन- भर के लिए अपने अनुसरण करने वालों को देते हैं?

और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो। (यूहन्ना 14:3)

यीशु के दूसरे आगमन का वायदा उसके चेलों के मन में हमेशा ताजा रहना चाहिये। वही यीशु जिसे उन्होंने स्वर्ग जाते देखा, दोबारा आएगा, अपने साथ उन्हें ले जाने के लिए जिन्होंने उसकी सेवा के लिए अपने आप को दे दिया। वही आवाज जिसने उन्हे कहा था, "देखों मैं सवर्दा तुम्हारे साथ हूँ, इस पृथ्वी के चोर तक," स्वर्गीय राज्य में अपनी उपस्थिति में उनका स्वागत करेगा।

जिन्होंने उससे प्रेम किया और उसकी प्रतीक्षा किया, वह महिमा और आदर और अविनाशी का मुकुट पहनायेगा। धर्मी मृतक अपनी कब्रों से बाहर आयेंगे, और जो जीवित हैं वे परमेश्वर से मिलने के लिए उठा लिए जायेगें। वे यीशु की आवाज को सुनेगें, गीत से मीठा जो नाशवान कानों ने कभी सुना होगा, उन्हें कहते हुए, तुम्हारा मलयुद्ध पूरा हुआ। "आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है"। (मत्ती 25:34)

(2) मसीह ने किस को हमारा शान्ति देने वाला होकर भेजने का और उसके आगमन तक हमें निरंतर बने रहने वायदा किया?

और मैं पिता से बिनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।(यूहन्ना 14:16)

जिस सहायक को यीशु ने अपने नाम से हमारे मध्य भेजने का वायदा किया वह हमारे मध्य में रहता है। वह मार्ग जो परमेश्वर के शहर की ओर जाता है उसमें उस पर भरोसा रखने वालों के लिए कोई ऐसी बाधा नहीं जिसका वे सामना न कर सकें। ऐसा कोई दुःख नहीं, न ही संकट, न ही मानवीय कमजोरी, जिसके लिए उसने रास्ता न बनाया हो।

किसी को भी स्वंय को निराशा और दुःख में त्यागने की जरूरत नहीं। शैतान आपके साथ निर्दयी सलाह को लेकर आ सकता है, "तुम्हारी परिस्थिति आशाहीन है। तुम्हे छुड़ाया नहीं जा सकता"। परन्तु तुम्हारे लिए मसीह में आशा है। परमेश्वर नहीं चाहता हम अपनी सामर्थ में चलें। वह चाहता है हम उसकी और आयें। हम जिन भी परिस्थितियों के आधीन हो, जो हमारे शरीर और प्राण को गिरा देती है। वह हमें स्वतंत्र करने की प्रतीक्षा करता है।

(3) सहायक (पवित्र आत्मा) की भरपूरी का माप किसे दिया जाएगा?
और हम इन बातों के गवाह हैं, और पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है, जो उस की आज्ञा मानते हैं॥ (पवित्र आत्मा 5:32)

मसीह ने अपनी कलीसिया को पवित्र आत्मा का वरदान देने का वायदा दिया है, और यह वायदा हमारे लिए भी उतना ही है जितना कि प्रथम चेलों के लिए। परन्तु हर एक वायदे की तरह, यह शर्तों पर आधारित है। बहुत से मसीह के वायदों पर विश्वास करने और दावा करने का ढोंग करते हैं; वे मसीह और पवित्र आत्मा के विषय में बात करते हैं, परन्तु फिर भी उन्हें कोई लाभ नहीं होता। हम पवित्र आत्मा को उपयोग नहीं कर सकते। पवित्र आत्मा हमें उपयोग करता है। वे पवित्र आत्मा की अगुवाई में रहने के लिये स्वंय को समर्पित नहीं करते और न ही ईश्वरीय वाहकों के द्वारा नियंत्रित नहीं किये जाते। यद्यपि परमेश्वर का आत्मा उसके लोगों में कार्य करता है "जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा के और काम"। (फिलिप्पियों 2:13) परन्तु बहुत से लोग इसके

प्रति समर्पित न करेंगें। केवल वही जो नम्रता से उसकी प्रतीक्षा करते हैं, जो उसके मार्गदर्शन और अनुग्रह को देखते हैं, उन्ही को आत्मा दिया जाता है। परमेश्वर का सामर्थ उनकी मांग और ग्रहण करने की प्रतीक्षा करता है। यह वायदे की आशीष, विश्वास के द्वारा दावा की गई, अपनी गाड़ी में और दूसरी आशीषें भी लेकर आती हैं। यह मसीह के अनुग्रह की बहुतायत के अनुसार दिए जाते हैं, जैसे वह हर एक मनुष्य को उनकी क्षमता के अनुसार देने के लिए तैयार है।

एक व्यक्ति जो स्वंय को अपने हृदय में को पवित्र आत्मा के कार्य के लिए अलग करता है उसके उपयोगिता की कोई सीमा नहीं है।

(4) मसीह हमें कौन-से वरदान देने का वायदा करता है यदि हम उसे अपने जीवन में अतिथि के रुप में रहने के लिए स्वागत करें?

मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देतातुम्हारा मन न घबराए और न : डरे। (यूहन्ना 14:27)

जब हम मसीह को अपने मन में एक अतिथि के रूप में ग्रहण करते हैं, मसीह की शान्ति, जो सारी समझ से परे है, मसीह के द्वारा हमारे हृदयों और मनों को सुरक्षित रखेगी। इस पृथ्वी पर मसीह का जीवन, चाहे संघर्ष के बीच बिताया गाय, शांति का जीवन था। क्रोध में जब शत्रु उसका पीछा कर रहे थे, उसने कहा, और मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उस ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा; क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूं, जिस से वह प्रसन्न होता है"। यूहन्ना 8:29)। न मनुष्य का उपद्रव शैतान का क्रोध परमेश्वर के साथ उसकी वार्तालाप को भंग नही कर सका। वह हमें कहता है, "*मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देतातुम्हारा मन न घबराए और न डरे :"। (यूहन्ना 14:27) "* हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा"। मत्ती 11:28)। मेरे साथ परमेश्वर की महिमा के लिए जुआ उठाओ और मानवता को उठाना, और तुम उस जुए को सहज और हल्का पाओगे।

(5) इस पद में मसीह के आदर्श का अनुकरण करने के लिए, हमें स्वंय के को क्या याद कराना है ताकि यह हमारी शांति को नाश न करे?

मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता; जैसा सुनता हूं, वैसा न्याय करता हूं, और मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजने वाले की इच्छा चाहता हूं। (यूहन्ना 5:30)

यह स्वंय का प्रेम है जो हमारी शांति को नाश करता है। जबकि स्वंय जीवित है, हम इसे वैराग्य और अपमान से निरंतर सुरक्षित रखने के लिए तैयार रहते हैं; परन्तु जब हम मृतक हैं, और परमेश्वर में मसीह में हमारा जीवन छिपा हुआ है, हम हृदय में नकारने और अनादर की उपेक्षा नहीं करेंगें। हम तिरस्कार के प्रति बहरे और ठठा और अपमान के प्रति अंधे हो जाएंगें। "प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं। वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है।वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है।प्रेम कभी टलता नहीं; भविष्यद्वाणियां हों, तो समाप्त हो जाएंगी, भाषाएं हो तो जाती रहेंगी; ज्ञान हो, तो मिट जाएगा"। (1 कुरन्थियो 13:4-8)

पृथ्वी के साधनों से हासिल किया गया आनन्द उतना ही परिवर्तनीय है जितनी बदलती हुई परिस्थितियां उसे बना सकती हैं; परन्तु मसीह की शांति निरंतर बनी रहने वाली शांति है। यह जीवन की बदलती हुई परिस्थियों पर निर्भर नहीं होती, संसारिक चीजों या दोस्तों की संख्या पर निर्भर नहीं है। मसीह जीवन जल का सोता है, और उसमें से लिया गया आनंद अचूक है।

(6) किसे सिद्ध शांति में रखने का परमेश्वर वायदा करता है?
जिसका मन तुझ में धीरज धरे हुए हैं, उसकी तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है, क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है। (यशायाह 26:3)

यीशु मसीह के साथ धर्म (रिश्ते) का आनन्द उठाने वाले बेचैन, असंतुष्ट या परिवर्तनीय नहीं होंगें; हृदय में मसीह की शांति चरित्र को मजबूती प्रदान करेगी।

तुम्हारे मन की शांति ,विश्राम, आश्वासन जो तुमने प्राप्त किया उसे कोई छीनने न पाए। हर एक वायदे को लें; परमेश्वर के शर्तानुसार चलने के अनुसार सारे वायदे तुम्हारे हैं। अपने मार्गों को पूरी तरह

समर्पित करें, जो दिखने में बुद्धिमान लगते हैं, और मसीह के वायदों को ग्रहण करना, उसके प्रेम में सिद्ध विश्राम का रहस्य है। जो मन मसीह के सेवा के लिए अलग है उसमें शांति है जो यह संसार नहीं दे सकता।

(7) यदि हम स्वर्गीय वस्तुओं में बने रहें और मसीह को हमारे हृदयों में विश्वास के द्वारा बने रहने की अनुमति दें उसका क्या परिणाम होगा?

और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड़ पकड़ कर और नेव डाल कर। (इफिसियों 3:17)

याद रखें, उसी में पूरी ईश्वरता सदेह वास करती है। यदि मसीह हमारे हृदयों में विश्वास के द्वारा बना हुआ है, हम उसके जीवन की प्रतीति करने के द्वारा, उसके समान होने की सोचते हैं, शांतिपूर्ण और अशुद्ध। हमें मसीह को अपने चरित्र में प्रकट करना है। हम न केवल ज्योति को प्राप्त करेंगें बल्कि उस ज्योति को सोख लेंगें और बिखेरेंगे। हमारे पास यीशु के विषय में और स्पष्ट और विशिष्ट विचारधारा होगी। जो समरूपता, प्रेम और परोपकारिता मसीह यीशु के जीवन में थी वह हमारे जीवन में भी प्रकाशित होगी।

...जब यीशु विश्वास के द्वारा हमारे हृदय में वास करता है, जो बातें मसीह ने हमें दी हैं उनका अभ्यास कर पायेंगे। हमारे पास यीशु मसीह का सर्वोतम विचार होगा और स्वंय अवधारित हो जाएगा। हमारा प्रेम मसीह मे केन्द्रित होगा, हमारे विचार स्वर्ग की ओर आकर्षित होंगे। मसीह बढ़ेगा और, मैं घटूगा।

स्वर्गीय वस्तुओं पर मन लगाने के लिए में को प्रशिक्षित किया जाना चाहिये। नम्रता मसीह के प्रेम को समझने के परिणामस्वरूप आएगी। मसीह के सर्वोतम चरित्र पर वास करने के द्वारा, हम पाप के ठेस पहुँचाने वाले चरित्र को देखेंगे और विश्वास के द्वारा यीशु मसीह की धार्मिकता को समझ पायेंगे। जब हम क्रूस के कलवरी को देखते हैं, हम स्वंय को नहीं उठाएंगे, परन्तु अपनी अयोग्यता को देख पायेंगे और यह कि मसीह हमारा उद्धार स्वर्ग को कितना महंगा पड़ा; हम मसीह के अतुल्य प्रेम को पहचान पाएंगे।

(8) यदि हम, पवित्र आत्मा का बोध होने के द्वारा, मसीह के समझ से बाहर प्रेम के माप को समझने की सोंचे, तब हम किस चीज से भर जाएंगें?

सब पवित्र लोगों के साथ भली भांति समझने की शक्ति पाओ; कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊंचाई, और गहराई कितनी है। और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है, कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ॥ (इफिसियों 3:18-19)

सारा पिता का प्रेम जो मानव हृदय के माध्यम से पीढ़ी से पीढ़ी तक नीचे आया, सारी कोमलता जो मनुष्यों के मनों में प्रवाहित हुई, वह बड़े समुन्द्र में छोटे नाले के समान है जब उसकी तुलना परमेश्वर के असीमित, हद पार कर देने वाले प्रेम की बात की जाए। जीभ उसका उच्चारण नहीं कर सकती, कलम से उसको चित्रित नहीं किया जा सकता। तुम अपने जीवन के प्रत्येक दिन इस पर मनन कर सकते हो; तुम इसे समझने के लिए लगन से बाइबल में पदों को खोज सकते हैं; तुम परमेश्वर के द्वारा दी गई सारी बुद्धि और योग्यता का प्रयोग कर सकते हो; परमेश्वर पिता के प्रेम और दया को समझने का प्रयत्न करने के लिए; परन्तु फिर भी उससे बढ़कर भी अनंतता है। आप प्रेम का पूरी जिन्दगी अध्ययन कर सकते हैं; परन्तु फिर भी उस प्रेम की गहराई और ऊंचाई को समझ नहीं सकते जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के मरने के द्वारा दिखाया। अनंतता स्वंय भी उस को प्रकट नहीं कर सकती। फिर भी जब हम बाइबल का अध्ययन करते हैं और मसीह के जीवन का मनन करते हैं और उस छुटकारे की योजना पर, ये महान विषय हमारी समझ को और ज्यादा खोल देंगे।

(9) मसीह क्या वायदा करता है यदि हम उसे जीवन की रोटी और जीवन जल को खोजें?

यीशु ने उन से कहा, जीवन की रोटी मैं हूंजो मेरे पास : आएगा वह कभीभूखा न होगा और जो मुझ पर विश्वास करेगा, वह कभी प्यासा न होगा। (यूहन्ना 6:35)

कोई भी मानवीय वाहक हमारे प्राण की भूख और प्यास को नहीं मिटा सकता। परन्तु यीशु ने कहा, "देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं; यदि कोई मेरा शब्द सुन कर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आ कर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ"। "यीशु ने उन से कहा, जीवन की रोटी मैं हूंजो मेरे पास : आएगावह कभी भूखा न होगा और जो मुझ पर विश्वास करेगा, वह कभी प्यासा न होगा"। प्रकाशितवाक्य 3:20; यूहन्ना 6:35

जैसे हमें शरीरिक बल के लिए खाने की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार हमें मसीह की आवश्यकता है, स्वर्गीय रोटी, हमारे

मसीह जीवन की बढ़ोतरी के लिए और परमेश्वर का कार्य करने के लिए बल। जैसे शरीर निरंतर ताकत पाकर शरीर को मजबूत और ताजा रखता है, उसी प्रकार प्राण को निरंतर मसीह के साथ वार्तालाप करते रहना चाहिये, उसके प्रति पूरी तरह से समर्पित करने के द्वारा।

जैसे थका हुआ राही मरुस्थल में ठंडक को ढूंढता है, और उसे पाकर ताजा और संतुष्ट होता है, उसी प्रकार मसीही की आत्मा शुद्ध जल के द्वारा, जो जीवन का सोता है, शांत हो जाती है। (एम बी 18-19)

(10) थके और बोझ से दबे लोगों के लिए मसीह क्या वायदा करता है यदि वे उसके पास आयें?

हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। (मत्ती 11:28)

यीशु आदम के थके और बोझ से दबे पुत्र और पुत्रियों को अपने पास आने का निमन्त्रण देता है, और उसके ऊपर अपने भारी बोझों को डालने के लिए। परन्तु बहुत से जो उसके निमन्त्रण को सुनते हैं, जबकि विश्राम के लिए विलाप करते हैं, परन्तु फिर भी ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर चलते हैं, अपनी समयस्याओं को अपने हृदय के निकट रखते हैं। यीशु उन से प्रेम करता है, और उन्हें अपनी बाहों में लेकर उसकी समस्याओं और बोझों को दूर करना चाहता है। वह उन डरों और अनिश्चतता को दूर कर देता है जो उनके शांति और विश्राम को छीनते हैं; परन्तु उन्हे पहले यीशु के पास आना होगा, अपने हृदय के दर्दों के रहस्यों को उनको बताना होगा। वह उसके लोगों के विश्वास को आमंत्रित करता है, उसके प्रेम के प्रमाण के रूप में। नम्र और भरोसेमंद हृदय का रहस्य उसके लिये सारे धन और सम्पन्नता से अधिक कीमती है जो वह बरसा सकता है। यदि वे उसके सामने साधारणता और भरोसे के साथ आते हैं जैसे एक बच्चा अपने माता-पिता के पास, उसके हाथों का ईश्वरीय स्पर्श उन्हें उनके बोझों से छुड़ा देगा।

यीशु हमारा दयालु उद्धारकर्ता, मार्ग, सत्य और जीवन है। हम उसकी दया का अनुग्रहकारी प्रस्ताव को क्यों नहीं ग्रहण करेंगें, उसके वायदों पर विश्वास क्यों नहीं करंगे और इस जीवन के रास्ते को और कठोर न बनायेंगे?.....मसीह के मार्ग शांति के मार्ग हैं, और उसके सभी मार्ग शांति हैं। यदि हमने हमारे पैरों के लिए मुश्किल मार्ग बनाये हैं, और इस पृथ्वी पर अपने लिए खजाने

इकट्ठे करने के द्वारा बोझ को बढ़ाया है, आइये हम बदलें, और उस मार्ग का अनुकरण करें जो यीशु ने हमारे लिए तैयार किया।

(11) मसीह उनसे किस बात का वायदा करता है जो अपने मनों की रक्षा के लिए उसको समर्पित करते हैं?

जिसका मन तुझ में धीरज धरे हुए हैं, उसकी तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है, क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है। यहोवा पर सदा भरोसा रख, क्योंकि प्रभु यहोवा सनातन चट्टान है। (यशायाह 26:3-4)

स्वर्ग इस पृथ्वी पर होना है। जो मसीह को उसके वचन के अनुसार लेते हैं, उसके रखाव के लिए अपने मनों को समर्पित करते हैं, अपने जीवनों को उसकी आज्ञाओं के प्रति, शांति और वैराग्य को पायेगें। इस संसार में कुछ भी उन्हें उदास नहीं कर सकता यीशु उन्हें अपनी उपस्थिति के द्वारा प्रसन्न बनाता है। परमेश्वर कहता है, "जिसका मन तुझ में धीरज धरे हुए हैं, उसकी तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है, क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है। यहोवा पर सदा भरोसा रख"। यशायाह 26:3। हमारे जीवन उलझे हुए दिख सकते हैं; परन्तु जैसे हम स्वंय को बुद्धिमान स्वामी कार्यकर्त्ता को दे देते हैं, वह हमारे जीवन से एक आकार को लेकर आएगा और ऐसा चरित्र जो उसी की महिमा के लिए होगा। और वह चरित्र जो उसकी महिमा को प्रकट करता है-मसीह का-चरित्र- स्वर्ग में ग्रहण किया जाएगा। एक पुननिर्मित जाती उसके साथ श्वेत में चलेगी, क्योंकी वे योग्य हैं।

जैसे मसीह के द्वारा विश्राम में प्रवेश करते हैं, स्वर्ग यहां शुरू हो जाता है। हम उसके आमन्त्रण के प्रति प्रतिक्रिया करते हैं। आओ, मुझ से सीखो, और इस प्रकार आने के द्वारा हम अनंत जीवन की शुरुवात करते हैं। स्वर्ग मसीह के द्वारा परमेश्वर के पास न रूकने वाली पहुंच है। जितना हम स्वर्ग के आन्नद में रहते हैं, उतनी ही महिमा हमारे लिए खुलेगी; और जितना हम परमेश्वर के बारे में जानते हैं, उतना ही हम हमारी प्रसन्नता के बारे में गम्भीर होते हैं।

मैं उस वायदे के लिए धन्यवादित हूँ कि एक दिन मसीह उस राज्य का पाने के लिए घर में हमारा स्वागत करेगा जो वह उनके लिए तैयार कर रहा है जो वहां होने के चुनाव करते हैं।
गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं धन्यवादी हूँ की मसीह ने सहायक को मेरे साथ रहने के लिए भेजा और मुझे परमेश्वर के शहर में अगुवाई करने के लिए, मसीह के अनुग्रह के द्वारा, कि मैं विश्वासयोग्य रहूँ और एक दिन प्रवेश कर सकूं।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

यह मेरा निर्णय है उस वायदे की आशीष को प्राप्त करने का जो और आशीषों को साथ में लेकर आती है मेरा जीवन को परमेश्वर के लिए अलग किया गया

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं उस शांति को चाहता हूँ जो मसीह मुझसे वायदा करता है और स्वंय को समर्पित करने का चुनाव करता है- सारी शांति का चुनाव और अपने आप को मसीह की सेवा के लिए अलग करता हूँ जो ऐसी शांति देता है जब यह संसार ले या दे नहीं सकता।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

पाठ 12

मसीह में हमारा मूल्य

(1) क्योंकी मसीह ने बहुत प्रेम से इतना महान दाम चुकाकर खरीदा, हमें किन चीजों के द्वारा उसके प्रति महिमा लानी है?

क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिये अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो॥(1 कुरन्थियो 6:20)

यहीं मनुष्य की दशा हैं। मसीह ने हमें अपने जीवन के द्वारा खरीद लिया, और हम उसके हैं। हमारी सारी ताकतें, शारीरिक, मानसिक, और आत्मिक, उसी की हैं; और उससे बचा कर रखना जो उसी का है चोरी है।

परमेश्वर आंकलन के अनुसार हमारे प्राणों का मूल्य जानता है-जहाँ तक हम उसे समझ सकते हैं- कि मसीह ने उन पर रखा है-यीशु मरा ताकि वह मनुष्य को अन्नंत मृत्यु से बचा सके। तब हमें स्वंय को खरीदी हुई सम्पति के अनुसार रखना है। "क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है; जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो? क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिये अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो"॥ (1 कुरन्थियो 6:19-20)। हमारे शरीर, प्राण और मन की ताकतें परमेश्वर की हैं। हमारा समय परमेश्वर का

है। हमें स्वंय को उसकी सेवा के लिए उत्तम संभव स्थिति में जोड़ना है, मसीह के साथ निरंतर जुड़े रहना, और प्रतिदिन उस मूलवान बलिदान के बारे में सोचना जो उसने हमारे लिए किया कि हम उसके द्वारा परमेश्वर के प्रति धर्मी बन जाएं।

(2) इस पद में उसके चेलों के प्रति परमेश्वर के प्रेम के प्रकाशन के लिए कौन-से दो प्रतीकों का प्रयोग किया गया है?

क्योंकि जिस प्रकार जवान पुरूष एक कुमारी को ब्याह लाता है, वैसे ही तेरे पुत्र तुझे ब्याह लेंगे; और, जैसे दुल्हा अपनी दुल्हिन के कारण हर्षित होता है, वैसे ही तेरा परमेश्वर तेरे कारण हर्षित होगा॥ (यशायाह 62:5)

बाइबल में पवित्र और धीरजवन्त चरित्र का संबंध जो मसीह और कलीसिया के मध्य मौजूद है उसका चित्रण विवाह के संबंध द्वारा किया गया है। परमेश्वर ने अपने लोगों को एक पवित्र वाचा के साथ अपने साथ जोड़ा है, वह उनका परमेश्वर होने का वायदा करता है, और वे उसके और केवल उसी के ही होने का वायदा करते हैं। वह कहता है: "और मैं सदा के लिये तुझे अपनी स्त्री करने की प्रतिज्ञा करूंगा, और यह प्रतिज्ञा धर्म, और न्याय, और करूणा, और दया के साथ करूंगा"।होशे 2:19। और, फिर: "मैंने तुम्हारे साथ विवाह किया है"। यिर्मियाह 3:14। और पौलुस नए नियम में भी इस तस्वीर का प्रयोग करता है जब वह कहता है: "इसलिये कि मैं ने एक ही पुरूष से तुम्हारी बात लगाई है, कि तुम्हें पवित्र कुंवारी की नाईं मसीह को सौंप दूं"। 2 कुरन्थियो 11:2

(3) यदि हम यीशु मसीह को अपने जीवन का प्रभु होंने की अनुमति दें, पवित्रशास्त्र हमें क्या वायदा करता है कि हम उसके द्वारा क्या होंगे "जिसने हमसे प्रेम किया"?

परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिस ने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं। (रोमियो 8:37)

हमारी फिरौती हमारे उद्धारकर्ता के द्वारा चुका दे गई है। किसी को भी शैतान के दास बनें रहने की आवश्यकता नहीं। मसीह हमेशा सर्व-सामर्थी सहायक बनकर खड़े रहने के लिए हमारी सहायता करता है। " इस कारण उस को चाहिए था, कि सब बातों में अपने भाइयों के समान बने; जिस से वह उन बातों में जो परमेश्वर से सबंध रखती हैं, एक दयालु और विश्वास योग्य महायाजक बने ताकि लोगों के पापों के लिये प्रायश्चित्त करे।क्योंकि जब उस ने

परीक्षा की दशा में दुख उठाया, तो वह उन की भी सहायता कर सकता है, जिन की परीक्षा होती है"॥ (इब्रानियों 2:17,18) जो परमेश्वर के परिवार में लेपालक हैं पवित्र आत्मा के द्वारा रूपांतरित किये जाते हैं। स्व-भोग और स्वंय के लिए सर्वोत्तम प्रेम स्वंय-इन्कारऔर परमेश्वर के लिए सर्वोत्तम प्रेम में परिवर्तित हो जाते हैं। कोई भी मनुष्य विरासत में पवित्रता को प्राप्त नहीं करता या उसका जन्म सिद्ध अधिकार, न हो हो सकता है, किसी भी माध्यमों के स्वर जिन्हें वह सोचता है, परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बन सकता है। "मेरे बिना," यीशु कहता है, "तुम कुछ नहीं कर सकते" (यूहन्ना 15:5)। मानवीय धार्मिकता "मैले चिथड़ों" के समान है"। परन्तु परमेश्वर के लिए सब कुछ संभव है। छुड़ाने वाले की सामर्थ में, दुर्बल, पापी मनुष्य बुराई पर जयवंत से भी बढ़कर बन सकता है जो उसे घेरती है।

(4) कौन सच्चाई में अब्राहम की संतान कहलाये गए जो आत्मिक "इस्राएल" है?

और यदि तुम मसीह के हो, तो इब्राहीम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो॥ (गलातियों 3:29)

जैसे अब्राहम ने "परमेश्वर में विश्वास किया, और यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया"। इस प्रकार जिन में विश्वास है केवल वही अब्राहम की संतान हैं। "तो यह जान लो, कि जो विश्वास करने वाले हैं, वे ही इब्राहीम की सन्तान हैं।और पवित्र शास्त्र ने पहिले ही से यह जान कर, कि परमेश्वर अन्यजातियों को विश्वास से धर्मी ठहराएगा, पहिले ही से इब्राहीम को यह सुसमाचार सुना दिया, कि तुझ में सब जातियां आशीष पाएंगी। तो जो विश्वास करने वाले हैं, वे विश्वासी इब्राहीम के साथ आशीष पाते हैं।गलातियो 3:6-9।

यहूदी अब्राहम की वंशावली से निकले होने का दावा करते थे, परन्तु अब्राहम के कार्यों को करने में चूकने के द्वारा, उन्होंने यह दिखाया कि वे परमेश्वर की संतान नहीं थे। केवल वही जो आत्मिक एकता में उसके साथ थे उन्हें ही उसका सच्चा वंश गिना गया।

(5) छुटकारे के कौन-से तीन सुन्दर भाग का दावा अपने चुनने वालों के साथ करता है आत्मिक इस्राएल बनने के लिए?

इस्राएल तेरा रचने वाला और हे याकूब तेरा सृजनहार यहोवा अब यों कहता है, मत डर, क्योंकि मैं ने तुझे छुड़ा लिया है; मैं ने तुझे नाम ले कर बुलाया है, तू मेरा ही है।(यशायाह 43:1)

मसीह का उसके लोगो के साथ सबंध, इस्राएल को दी गई व्यवस्था में उसका एक सुन्दर उदाहरण दिया गया है। जब गरीबी में एक इब्रानी को उसकी सम्पति में से हिस्सा करने के लिए दबाव डाला जाता था, और स्वंय को दास के रूप में बेचने के लिए, उसको और उसकी विरासत को छुड़ाने का कर्तव्य उसके निजी रिश्तेदारों के हाथ में होता था। देखें लैव्यव्यवस्था. 25:25, 47-49; रुत 2:20। उसी प्रकार पाप के द्वारा खोई हुई, हमें और हमारी विरासत को छुड़ाने के लिए, जिम्मेवारी उस पर पड़ी जो "हमारा निजी था"।यह हमें छुड़ाने के लिए हमारा कुटुम्बी छुड़ानेवाला बना। पिता के जितना नजदीक,माता, भाई, मित्र, और प्रेमी हमारा परमेश्वर उद्धारकर्ता है। "इस्राएल तेरा रचने वाला और हे याकूब तेरा सृजनहार यहोवा अब यों कहता है, मत डर, क्योंकि मैं ने तुझे छुड़ा लिया है; मैं ने तुझे नाम ले कर बुलाया है, तू मेरा ही है"।" मेरी दृष्टि में तू अनमोल और प्रतिष्ठित ठहरा है और मैं तुझ से प्रेम रखता हूं, इस कारण मैं तेरी सन्ती मनुष्यों को और तेरे प्राण के बदले में राज्य राज्य के लोगों को दे दूंगा"। यशायाह 43:1,4।

मसीह उन स्वर्गीय मनुष्यों से प्रेम करता है जो उसके सिंहासन के चारो ओर एकत्रित होते हैं; परन्तु उस प्रेम के बदले क्या होगा जिससे उसने हम से प्रेम किया? हम उसे समझ नहीं सकते, परन्तु हम उसे अपने अनुभव में जान सकते हैं। और यदि छुड़ाने वाले कुटुम्बी का संबंध उसके साथ रखते हैं, किस कोमलता के साथ हमें परमेश्वर के भाइयों और बहनों के साथ व्यवहार करना चाहिये! क्या हमें हमारे ईश्वरीय संबंध के दावों को नहीं पहचानना चाहिये? मसीह के परिवार में लेपालक बनकर, क्या हमें हमारे पिता और संबंधियों का आदर नहीं करना चाहिये?

(6) यदि हम सच्चे पश्चाताप के साथ, अपने पापों से अंगीकार करते हैं, हमें क्या आत्मविश्वास है जो मसीह करेगा?

यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।(1 यूहन्ना 1:9)

बहुत से लोग अपने मनों को अपनी अयोग्यता पर डाल देते हैं जैसे कि यह उनका गुण हो। यह उनके लिए सम्पूर्ण विश्वास के आश्वासन के साथ यीशु के पास आने में बाधा है। उन्हें अपनी अयोग्यता को अनुभव करना चाहिये-और इसी कारण-उनके पापों के कारण-उद्धारकर्ता के पास आने की बाध्यता को समझना है, जो उनकी योग्यता है और जो उनकी धार्मिकता भी होगा यदि वे पश्चाताप करें और स्वंय को नम्र करें। उनकी अयोग्यता स्वंय-प्रमाणित सत्य है। यीशु की योग्यता सत्य बात है। इसलिए प्रत्येक संदेह रखने वाला व्यक्ति आशा और उत्साह लेने पाए, क्योंकी उनके पास वह है जो उनका उद्धारकर्ता बनने के योग्य है। उनके उद्धार की एकमात्र आशा अपने विश्वास को उसकी योग्यता में रखना है जो उसने नहीं किया परन्तु जो यीशु के द्वारा प्रदान किया जाएगा हमारी धार्मिकता।

(7) जब हम पापी इस बात को समझ जाते हैं कि हमारी आशा की महिमा मसीह में है और हम स्वंय के लिए मर जाते हैं, प्रेरित पौलुस के समान, हम क्या घोषणा करेगें?

मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित हैऔर मैं शरीर में : अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिये अपने आप को दे दिया। गलातियो 2:20

मसीह, कीमती उद्धारकर्ता, मसीह का सब में सब कुछ होना चाहिये। प्रत्येक पवित्र विचार, प्रत्येक शुद्ध ईच्छा, प्रत्येक मसीह समान उद्देश्य, उसी की ओर से है जो ज्योति, मार्ग, और सत्य है।मसीह उसका प्रतिनिधित्व करने वालों में आत्मा और सच्चाई के द्वारा रहना चाहता है....पौलुस कहता है, " मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित हैऔर मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस : विश्वास से जीवित हूं, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिये अपने आप को दे दिया"। गलातियो 2:20।उसके प्रेम के सामर्थी आवेग में उसने संसार में हमारा स्थान ले लिया और और सभी चीजो के शासक को आमन्त्रण दिया कि वह मानवीय परिवार का प्रतिनिधित्व करने वाले के रूप में उसके साथ व्यवहार करे। उसने हमारी रुचियों के साथ साझा किया,

अपनी छाती को मृत्यु के लिए खोल दिया, मनुष्य के दोष और सजा को अपने ऊपर ले लिया, और मनुष्य के स्थान पर परमेश्वर को बलिदान दे दिया। इस प्रायश्चित के आधार पर उसके पास मनुष्य को पूरी धार्मिकता और पूरा उद्धार देने की पूरी सामर्थ है। जो कोई उस को व्यक्तिगत उद्धारकर्ता करके ग्रहण करे वह नाश न हो परन्तु अन्नत जीवन पाए।

(8) कौन प्रकट करता है कि परमेश्वर का प्रेम हम में सिद्ध हो रहा है?

पर जो कोई उसके वचन पर चले, उस में सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ है हमें :इसी से मालूम होता है, कि हम उस में हैं। (1 यूहन्ना 2:5)

वह जो मसीह में बना रहता है परमेश्वर के प्रेम में सिद्ध हो गया है, और उसके उद्देश्य, उसके विचार, और क्रियाएं परमेश्वर की ईच्छा के अनुसार और उसकी व्यवस्था की आज्ञाओं में प्रकट होती है। जो मनुष्य मसीह में बना रहता है उसके हृदय में कोई भी ऐसी चीज नहीं जो परमेश्वर की व्यवस्था के कोई भी बात के विरुद्ध हो। जहाँ मसीह का आत्मा हृदय में है, मसीह का चरित्र प्रकट होगा, और वहां प्रदर्शित नम्रता उत्तेजना के आधीन, परीक्षा के आधीन धीरज होगा। "हे बालकों, तुम्हे कोई मनुष्य धोखा न दे: वह जो धार्मिकता कर कार्य करता है धर्मी है, जैसे वह स्वंय धर्मी है"। "धार्मिकता केवल परमेश्वर के महान नैतिक मानदंडों के द्वारा परिभाषित की जा सकती है, दस आज्ञायें। चरित्र को परखने के लिए कोई और मानदंड नहीं है

(9) मसीह के स्वंय-बलिदान, स्वंय त्याग और छुडाये जाने वाले प्रेम के द्वारा, उसने हमारे अन्नत छुटकारे को पाने के लिए क्या किया?

और बकरों और बछड़ों के लोहू के द्वारा नहीं, पर अपने ही लोहू के द्वारा एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया, और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया। (इब्रानियों 9:12)

हमारा छोटा संसार विश्व की पाठय पुस्तिका है। परमेश्वर के अनुग्रह का अदभुत उद्देश्य, छुड़ाने वाले प्रेम का रहस्य है, यह विषय है, जिसको "स्वर्गदूत देखने की अभिलाषा करते हैं," और यह युगानयुग यही उनका अध्ययन होगा। छुड़ाए हुए और पाप में गिरे हुए दोनों के लिए यह ज्ञान और गीत होगा। यह स्पष्ट होगा कि यीशु के चेहरे पर चमकने वाली महिमा स्वंय बलिदानी प्रेम की महिमा होगी। कलवरी के प्रकाश में यह स्पष्ट होगा कि स्वंय-

बलिदानी प्रेम स्वर्ग और पृथ्वी का कानून है; कि वह प्रेम "जो स्वंय के बारे में नहीं सोचता" उसका रास्ता परमेश्वर के हृदय से है।

(10) जब हम उद्धार के लिए मसीह के अदभुत निमन्त्रण को ग्रहण करते हैं, हम किसके द्वारा उद्धार नहीं और किसके द्वारा उद्धार पाते हैं?

तो उस ने हमारा उद्धार कियाऔर यह धर्म के कामों के : कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार, नए जन्म के स्नान, और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ। (तीतुस 3:5)

परमेश्वर हमसे चाहता है कि हम उस पर भरोसा करें जो अधर्मी को धर्मी बना सकता है। उसका प्रतिफल हमारी योग्यता के आधार पर नहीं बल्कि उसके उद्देश्य के आधार पर दिया जाता है, "सनातन मनसा के अनुसार, जो उस ने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी"। (इफिसियों 3:11) और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार, नए जन्म के स्नान, और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ"। (तीतुस 3:5) और जो उस में भरोसा रखते हैं वह "मझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करेगा"। इफिसियों 3:20

यह हमारी मेहनत के कार्य नहीं या उसके दिखने वाले परिणाम नहीं परन्तु जिस में आत्मा कार्य करता है वह उसे परमेश्वर के साथ मूल्यवान बनाता है। जो दाख की बारी में सम्पूर्ण समय पर आये वे काम करने के सौभाग्य के लिए धन्यवादी थे। उनके हृदय उनके प्रति धन्यवादी थे जिसने उन्हें ग्रहण किया; और जब दिन के अंत में मालिक ने उन्हें सम्पूर्ण दिन के काम करने का महनताना दिया, वे हैरान रह गए। वे जानते थे उन्होंने ऐसी कमाई पहले नहीं कमाई थी। और उनके नियोक्ता के चेहरे पर दया देखकर वे आनन्द से भर गए। वे मालिक की भलाई या उदार क्षतिपूर्ति को नहीं भूल पाएजो उन्हें मिली थी। उसी प्रकार उस पापी के साथ भी ऐसा ही है जिसने अपनी अयोग्यता को पहचानते हुए आठवे पहर मालिक की दाख की बारी में प्रवेश किया। उसके काम का समय बहुत कम था, उसे लगता है वह इस प्रतिफल के योग्य नहीं; परन्तु वह आनन्द से भर जाता है क्योंकि परमेश्वर ने उसे ग्रहण किया। वह नम्र और भरोसेमंद आत्मा के साथ कार्य करता है, मसीह के साथ सहकर्मी बनने के सौभाग्य के लिए। यही आत्मा में परमेश्वर आनंद लेता है।

परमेश्वर चाहता है हम बिना प्रश्न किये उसमे आराम पायें जैसे कि यह हमारा प्रतिफल है। जब मसीह मन में वास करता है, तब प्रतिफल का प्रश्न मुख्य नहीं होता। यह इरादा नहीं जो हमारी सेवा को मूल हो। यह सत्य है अधीनस्थ की भाषा में हमें प्रतिफल की प्राप्ति का आदर करना चाहिये। परमेश्वर चाहता है उसके वायदे की आशीषों को सराहा जाए। परन्तु वह नहीं चाहेगा कि हम प्रतिफल के लिए उत्सुक रहें न ही हम महससू करें कि हमें हर एक कार्य के लिए कमाई मिलना चाहिये। हमें इतना चिंतित नहीं होना कि क्या सही है प्रतिफल के लिए क्या सही है, लाभ के बावजूद। परमेश्वर और अपने पड़ोसियों के प्रति प्रेम ही हमारी मनसा होनी चाहिये।

मै धन्यवादी हूँ कि, उसके लहू और विश्वास के द्वारा मुझे में उसकी धार्मिकता के लिए, कि मैं अब्राहम का आत्मिक बीज समझा गया हूँ और जयवंत और जीतनेवाला बन सकूं।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं यीशु मसीह का धन्यवाद और स्तुति करता हूँ मेरे लिए उसके महान प्रेम के लिए जो बहुत महान था कि उसने पूरा दाम चुकाया। मेरी ईच्छा है मेरे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसको महिमा देना।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मेरे हृदय मसीह के प्रेम से भर गया है मुझे मूल्यवान बनाने के लिए कि वह परमेश्वर के परिवार में मेरा छुड़ाने वाला कुटुम्बी बना।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं संदेह न करने के चुनाव करता हूँ और मेरे मूल्य के अनुसार नहीं वरन मसीह की योग्यता और विश्वास के द्वारा उस योग्यता पर जो यीशु मसीह मेरी धार्मिकता और उद्धारकर्ता के द्वारा प्रदान की जाती है।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

पाठ 13

परमेश्वर के प्रेम में बने रहना

(1) जब हम, परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा, प्रेम में बने रहने का चुनाव करते हैं, उसका क्या परिणाम होता है?

और जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, उस को हम जान गए, और हमें उस की प्रतीति है; परमेश्वर प्रेम हैजो प्रेम में बना : रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है; और परमेश्वर उस में बना रहता है। (1 यूहन्ना 4:16)

जब कभी हम अपने आप को प्रेम के वातावरण में बनाये रखते हैं, उसी के साथ-साथ हम अपने आप को परमेश्वर की उपस्थिति में भी बनाये रखते हैं। क्योंकी हम प्रेम में बने रहते हैं, हम परमेश्वर में बने रहते हैं, जो प्रेम है। परमेश्वर और मनुष्य के प्रति प्रेम के क्षेत्र में निरंतर बने रहना, विपरीत प्रभावों के बावजूद भी, उसके लिए आत्मिक बल का आमन्त्रण है जो केवल परमेश्वर के साथ बने रहने के द्वारा ही संभव है।

वे सभी जिन्होंने प्रेम के परमेश्वर के साथ आपसी रहने का आनन्द चखा है जानते हैं उस प्रतिफल के लिए कार्य करना उचित है। शैतान भी यह जानता है, और वह बहुत चतुर है इसके मूल्य के सीधे नकारने का प्रयत्न न करने में। इसकी अपेक्षा, वह बहुत सी कम भली चीजों को रंग-बिरंगें तरीके से पेश करता है और हम से चाहता है कि हम अपने विचारों को उन पर केन्द्रित करें। यद्यपि थोड़े ही समय के लिए। केवल यदि एक बार वह हमारा ध्यान परमेश्वर से भटका दे, वह मन को स्वंय और दूसरों के हानिकारक

विचारों में अगुवाई करने में सफल हो जाता है। इसलिए पहले हम उस को जानें या उसके खतरे को पहचान पाएं, हम रोष के विचार मन में रख रहे हैं, इस परिणाम को जानते हुए कि प्रेम और परमेश्वर दोनों हमारे हृदय से संचालित होते हैं। यह पुरानी तकनीक है, परन्तु यह अभी भी सफल है!

हमारी उतम सुरक्षा अपने मन को निरंतर जान-बूझकर उन आशीषों पर केन्द्रित करना है जिनका हमने परमेश्वर के हाथों से आनन्द उठाया है (भजनसहिता 63:6; 139:17,18)। परमेश्वर ने जो किया है उसको स्मरण रखना, और उसके साथ संगति का क्या अर्थ है, दृढ़ होता है जब हम दूसरों को अपने आनन्द के विषय में बताते हैं। ये गवाहियां हमारे भाइयों और बहनों को प्रोत्साहित करती हैं और हमारी मनसाओं को मजबूत बनाती है हमारे बीच और स्वर्ग के साथ सबंध बनाये रखने के लिए।

(2) जो प्रेम हम दूसरों के प्रति दिखाते हैं, कैसे वह परमेश्वर के साथ हमारे सबंध में प्रकट होता है?

हे प्रियों, हम आपस में प्रेम रखें; क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है : और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है; और परमेश्वर को जानता है।

जिसके जीवन में मसीह बना रहता है, वह व्यवहारिक भक्ति को प्रकट करेगा। चरित्र शुद्ध, उत्तम, विशाल और महिमान्वित बनेगा। सही शिक्षा धार्मिकता के कार्यों के द्वारा मिश्रित होगी; स्वर्गीय निर्देश पवित्र आचरण के साथ मिश्रित होंगे।

यह हमारे पड़ोसियों के प्रति हमारे प्रेम की सुगंध जो परमेश्वर के लिए हमारे प्रेम को प्रकट करती है। यह सेवा में धैर्य जो हमारी आत्मा में शांति लाता है। यह नम्र, मेहनती और विश्वासयोग्य परिश्रम कि दूसरों (इस्राएल) का भी भला होता है। परमेश्वर उन्हें बलवंत करता है जो मसीह के मार्ग में चलने के लिए तैयार रहता है।

यह एक बहुत बड़ी भूल और भ्रांति है कि मनुष्य, अपने भाइयों के प्रति मसीह समान प्रेम किये बिना अन्नत जीवन में विश्वास कर सकता है। वह जो परमेश्वर और अपने पड़ोसी से प्रेम करता है वह ज्योति और प्रेम से भर जाता है। परमेश्वर उसमें और उसके चारो ओर होता है। मसीही लोग जो उनके इर्द-गिर्द है उसने ऐसे प्रेम करते हैं जैसे वे कीमती लोग जिनके लिए मसीह मरा। प्रेमहीन मसीही जैसा कुछ है ही नहीं; क्योंकी "परमेश्वर प्रेम है," और इस

प्रकार हम यह जानते हैं कि हम उसे जानते हैं, यदि हम उसकी आज्ञाओं को माने। जो कहता है, मैं उसे जानता हूँ, और उसकी आज्ञायें न माने, झूठा है, और उसमे सत्य वास नहीं करता"।

(3) यह पद किन्हें दया पर निरंतर मनन करने की सलाह देता है, असीमित प्रेम, और अन्नत जीवन?

अपने आप को परमेश्वर के प्रेम में बनाए रखो; और अनन्त जीवन के लिये हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया की आशा देखते रहो। (यहूदा 1:21)

मसीह पर मनन करने के द्वारा हम प्रेम के किनारे पर विलम्ब करते हैं जो अपार है। हम उसके प्रेम के विषय में बताने का प्रत्यन करते हैं, और हमारे शब्द कम पड़ जाते हैं। हम इस पृथ्वी पर उसके जीवन के बारे में सोचते हैं, हमारे लिए उसका बलिदान, स्वर्ग में उसका कार्य हमारे मध्यस्थ के रूप में, और जो स्थान वह अपने प्रेम करने वालों के लिए बना रहा है, और हम केवल चिल्ला सकते हैं, वाह! मसीह के प्रेम की ऊंचाई और गहराई! "यही प्रेम है, प्रेम इसमें नहीं की हमने उससे प्रेम किया, परन्तु उसने हमसे प्रेम किया, और अपने पुत्र को हमारे पापों के लिए बलिदान होने के लिए दे दिया"। "देखो पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं, और हम हैं भीइस कारण संसार हमें : नहीं जानता, क्योंकि उस ने उसे भी नहीं जाना"।1 यूहन्ना 4:10;3:1

प्रत्येक सच्चे चेले में उसका प्रेम, पवित्र आग, के समान हृदय की वेदी पर जलता रहता है। यह पृथ्वी पर ही मसीह के द्वारा परमेश्वर का प्रेम प्रकट हुआ। पृथ्वी पर ही उसकी संतान को दोषरहित जीवन जीने के द्वारा उसका प्रेम दिखाना है। उस प्रकार पापी क्रूस की और जाकर परमेश्वर के मेमने को देखेंगे।

(4) परमेश्वर के साथ बने रहने के सबंध में हमारी कौन-सी दो-स्तरीय भूमिका है ताकि हम उसके प्रेम में परिपूर्ण हो सकें?

इसलिये परमेश्वर के आधीन हो जाओ; और शैतान का साम्हना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा। (याकूब 4:7)

छुटकारे की सम्पूर्ण योजना इन शब्दों में प्रकट होती है: "क्योंकी परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया है, कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो

परन्तु अन्नत जीवन पाए"। मसीह ने इस संसार के पापों के लिए दंड सहा, ताकि उसकी धार्मिकता पापियों में डाली जाये, और पश्चाताप और विश्वास के द्वारा वे चरित्र की पवित्रता में उसके समान बन सकें। वह कहता है, "मै उस मनुष्य के पापों के दोष को ले लेता हूँ। मुझे सजा लेने दो और इस पश्चातापी पापी को उस मासूम के सामने खड़ा करने दो"। जिस क्षण मसीह मसीह में विश्वास करता है, वह परमेश्वर की दृष्टि में बिना दोष की खड़ा होता है; क्योंकी मसीह की धार्मिकता उसकी है: मसीह की सिद्ध धार्मिकता उसमे डाली जाती है। परन्तु उसे ईश्वरीय समर्थ के साथ योगदान करना होगा, और उसके मानवीय कार्य के द्वारा पाप की आधीनता में लाना होगा, और मसीह में परिपूर्ण खड़ा होना है।

(5) कौन-से तीन तरीके याकूब बताता है, परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा, जो उसके साथ बने रहने वाले सबंध में हमारे लिए सहायक होगा?

परमेश्वर के निकट आओ, तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा : हे पापियों, अपने हाथ शुद्ध करो; और हे दुचित्ते लोगों अपने हृदय को पवित्र करो। (याकूब 4:8)

(6) यदि हम निरंतर परमेश्वर की महिमा को देखते हुए बने रहें [उसके प्रेममय चरित्र] परमेश्वर के आत्मा के द्वारा, हम किस में परिवर्तित होंगें?

परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश कर के बदलते जाते हैं॥ (2 कुरन्थियो 3:18)

परमेश्वर के प्रेम, दया और उसकी भलाई का प्रकटीकरण और हृदय को नया बनाने और प्रज्जवलित करने में में उसके पवित्र आत्मा के कार्य का, विश्वास के द्वारा, हमें मसीह के साथ घनिष्ट सबंध में बांध देता है कि, कि उसके चरित्र की सही सोच के साथ, हम शैतान के दक्षता-पूर्ण धोखे को हम परख सकें। यीशु की ओर ताकते हुए और उसकी योग्यता पर भरोसा रखते हुए हम पवित्र आत्मा में ज्योति, शांति, आनन्द की आशीषों को प्राप्त करते हैं। और उन महान बातों के प्रकाश में जो मसीह ने हमारे लिए की हैं, हम चिल्ला उठने के लिए तैयार हैं: देखो कैसा प्रेम पिता ने हम से किया, कि हम परमेश्वर के पुत्र कहलायें"।

भाइयों और बहनों, यह देखने के द्वारा हम बदलते हैं। परमेश्वर हारे उद्धारकर्ता के प्रेम में बने रहने के द्वारा, ईश्वरीय चरित्र की सिद्धता पर मनन करने के द्वारा और विश्वास के द्वारा मसीह की धार्मिकता को हमारी धार्मिकता का दावा करने के द्वारा, हमने उसी के स्वरूप के अनुसार बदलना है। सो आइये सारी खराब तस्वीरों को एकत्रित करें-बुराइयां, और दुष्टता और निराशाएं, शैतान की ताकत के परिणाम-हमारे कक्ष में उन यादों को रखना, उन के विषय में बात करना और और शोक करना जब तक हमारी आत्मा निराशा से न भर जाये।एक निराश मन अन्धकार की देह है , न केवल परमेश्वर की ज्योति न प्राप्त करने के द्वारा, परन्तु दूसरों से उसे रोकना। शैतान अपनी विजय की तस्वीरों के प्रभाव को देखना पसन्द करता है, लोगों को विश्वासहीन और निराश बनाकर।

(7) जब हम परमेश्वर में सही रूप से भरोसा और पेम करते हैं अपनी ईच्छा को उसकी ईच्छा के प्रति समर्पित करने के लिए, उसका क्या परिणाम होता है?

और संसार और उस की अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा॥ (1 यूहन्ना 2:17)

शुद्ध भक्ति का ईच्छा से सबंध है। ईच्छा मनुष्य के स्वभाव में संचालित करने वाली सामर्थ है, शरीर के दूसरे भागों को उसकी आधीनता में लाती है।

आप अपने आवेग को नियंत्रित नहीं कर सकते, आपकी भावनायें, जैसे आप चाहें, परन्तु आप अपनी अभिलाषा को नियंत्रित कर सकते हैं, और अपने जीवन में पूरा परिवर्तन ला सकते हैं। अपनी ईच्छा को मसीह के प्रति समर्पित करने के द्वारा, आप परमेश्वर के साथ मसीह में छिप जायेंगे, और उस सामर्थ के साथ मिल जाएंगे जो सारी ताकतों और प्रधानताओं से बढ़कर है। तुम्हारे पास परमेश्वर से सामर्थ होगी और तुम उसके बल को थामे रहोगे; और एक नई ज्योति, जीवित विश्वास की ज्योति, तुम्हारे लिए संभव होगी। परन्तु तुम्हे उसकी ईच्छा के साथ मिलकर कार्य करना पड़ेगा।

निरंतर ईच्छा को परमेश्वर की ओर रखने के द्वारा, आप हर एक भावना को...मसीह की ईच्छा के कैद में लाएंगे । तब तुम्हारे पैर उस दृढ़ चट्टान पर होंगे। और कई बार आपकी स्वेच्छा का हर एक कण लेगा जो आपके अन्दर है, परन्तु यह परमेश्वर है जो आपके

लिए कार्य करता है, और तुम उस बनाये जाने वाली प्रिकिया के द्वारा आदर के पात्र बनकर निकलोगे।

(8) हमें पिता और उसके पुत्र यीशु में बने रहने के लिए क्या जानना, प्रेम करना और किस में बने रहना है?
मैं ने तुम्हें इसलिये नहीं लिखा, कि तुम सत्य को नहीं जानते, पर इसलिये, कि उसे जानते हो, और इसलिये कि कोई झूठ, सत्य की ओर से नहीं। (1 यूहन्ना 2:21)

जो कुछ तुम ने आरम्भ से सुना है वही तुम में बना रहेजो : तुम ने आरम्भ से सुना है, यदि वह तुम में बना रहे, तो तुम भी पुत्र में, और पिता में बने रहोगे।(1 यूहन्ना 2:24)

बाइबल को वैसे नहीं अध्ययन किया जाता जैसे किया जाना चाहिये; यह जीवन का कानून नहीं बनाया गया। जब इसके निर्देशों का सोच समझकर अनुसरण किया जाता है, और चरित्र का आधार बना लिया जाता है, हमारे उद्देश्य में दृढ़ता होगी कि कोई भी व्यापार धारणाएं या संसारिक लक्ष्य गंभीरता से प्रभावित कर सकते। इस प्रकार चरित्र बनता है, और परमेश्वर के वचन से उसे सहायता मिलती है, परीक्षा, परेशानियों, और खतरों के समय भी बना रहेगा। विवेक को नया बनना चाहिये, और जीवन स्त्री प्रेम से शुद्ध होकर हमारे हृदय में जाना चाहिये, यह संसार पर प्रभाव डालेगा।

क्या चीज की आवश्यकता है इस समय क्रिया में चीजों के लाने वाले लोग, सही, दृढ़, सिद्धांत के प्रति चट्टान के समान दृढ़, और किसी भी आपत्ति से निपटने के लिए तैयार। हम इतने कमजोर क्यों हैं, क्यों हमारे बीच बहुत से गैर-जिम्मेदार लोग हैं, क्योंकी वे परमेश्वर के साथ जुड़े हुए नहीं हैं; उनके पास उनके साथ रहने वाला उद्धारकर्ता नहीं है, और वे मसीह के प्रेम नया और ताजा नहीं पाते....कोई भी मानवीय उतना मजबूत नहीं जितना कि उसका प्रेम। उसके साथ किसी की तुलना नहीं की जा सकती। {आर.एच, अगस्त 28, 1879}

(9) जब हम सत्य में परमेश्वर के प्रेम में बने होते हैं, हमारा प्रेम कैसे प्रकट होगा?

पर जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देख कर उस पर तरस न खाना चाहे, तो उस में परमेश्वर का प्रेम क्योंकर बना रह सकता है? हे बालकों,

हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें। (1 यूहन्ना 3:17-18)

प्रत्यके व्यक्ति, अपने कार्यों के कारण, या तो मसीह को उसकी आत्मा को प्रेम न करने और उसका अनुसरण न करने के द्वारा अपने से अलग कर देता है, या फिर वह स्वंय- को त्यागने और विश्वास के द्वारा मसीह के साथ व्यक्तिगत सबंध में एक हो जाता है। हम में से प्रत्येक को, मसीह को चुनना चाहिये, क्योंकी उसने पहले हमे चुना है। मसीह के साथ यह सबंध उनके साथ जुड़ना चाहिये जिनकी स्वाभाविक रूप से उसके साथ शत्रुता है। यह पूरी निर्भरता का सबंध है, एक घमंडी हृदय का उसके भीतर प्रवेश करना। यह निकटता का कार्य है, और बहुत से जो उसके चेले होने का दावा करते हैं इसके विषय में कुछ जानते ही नहीं। वे साधारणतय: उद्धारकर्ता को ग्रहण करते हैं, परन्तु उनके हृदयों को पूरा नियन्त्रण करने वाले के रूप में नहीं।

(10) हमारे लिए उसके महान प्रेम के कारण, परमेश्वर ने हमें क्या दिया जो हम "छिपा" सकते हैं हमारे हृदयों में हमें प्रेरित और तैयार करने करने के द्वारा पाप पर विजय पाने के लिए?

मैं ने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरुद्ध पाप न करूं। (भजनसहिता 119:11)

हृदय में परमेश्वर का वचन क्रूस के योद्धा को अच्छी कुश्ती लड़ने ले लिए प्रेरित और तैयार दोनों करता है (देखें इफिसियों 6:17)। यह मनुष्य की पापमय अवस्था को प्रकट करता है, शैतान के जादू और मन्त्र, पवित्र आत्मा के द्वारा दी गई मसीह की बचाने वाली सामर्थ, मनुष्य को ऊच्च मानदंडों तक भक्ति के द्वारा पहुचना है, और जीतनेवालों का महिमामय पुरस्कार। उद्धारकर्ता ने स्वंय परमेश्वर के लिखित वचन को परीक्षा करने वाले के साथ संघर्ष में इसका प्रयोग किया (मत्ती 4:1-11)। मनुष्य का मनुष्य के साथ युद्ध लड़ना, उद्धारकर्ता के पास ऐसा कोई हथियार नहीं था केवल परमेश्वर का वचन जिसको पवित्र आत्मा ने केवल उन्ही मौकों के लिए रखा था (मत्ती 4:4, 7, 10)। यह जैसे मसीही लोग मसीह के आदर्श का अनुसरण करते हैं, अपने मन को परमेश्वर के कीमती वचन से भरकर, और उसके निर्देशों पर चलने के द्वारा, वे स्वंय और पाप पर विजयी हो सकते हैं।

(11) हम कैसे जान सकते हैं कि परमेश्वर का प्रेम हम में सिद्ध हो गया है और हम उस में बने हुए हैं?

पर जो कोई उसके वचन पर चले, उस में सचमुच परमेश्वर का प्रेम सिद्ध हुआ हैहमें इसी से मालूम होता है :, कि हम उस में हैं। सो कोई यह कहता है, कि मैं उस में बना रहता हूं, उसे चाहिए कि आप भी वैसा ही चले जैसा वह चलता था। (1 यूहन्ना 2:5-6)

हम अपनी आज्ञाकारिता के द्वारा उद्धार नहीं कमाते; क्योंकी उद्धार परमेश्वर का दान है, जो विश्वास के द्वारा मिलता है। परन्तु आज्ञाकारिता विश्वास का फल है। "और तुम जानते हो, कि वह इसलिये प्रगट हुआ, कि पापों को हर ले जाए; और उसके स्वभाव में पाप नहीं। जो कोई उस में बना रहता है, वह पाप नहीं करताजो : कोई पाप करता है, उस ने न तो उसे देखा है, और न उस को जाना है"। यहां सच्ची परीक्षा है। यदि हम मसीह में बने रहें, यदि परमेश्वर का प्रेम हम में बना रहे, हमारी भावनायें, हमारे विचार, हमारे उद्देश्य और हमारी ईच्छा परमेश्वर की ईच्छा के अनुसार होंगे जैसे पवित्र व्यवस्था में उनका प्रकटीकरण है। "हे बालकों, किसी के भरमाने में न आना; जो धर्म के काम करता है, वही उस की नाईं धर्मी है"। धार्मिकता परमेश्वर की पवित्र व्यवस्था के मानदंडों के द्वारा परिभाषित होती है, जैसे सीने पर्वत पर दी गई दस आज्ञायें।

(12) यदि हम क्षण-क्षण करके परमेश्वर के प्रेम में बने रहें, कौन-से वायदे हम दावा कर सकते हैं?

जो कोई उस में बना रहता है, वह पाप नहीं करताजो कोई : पाप करता है, उस ने न तो उसे देखा है, और न उस को जाना है। (1 यूहन्ना 3:6)

"जो कोई परमेश्वर से जन्म है पाप नहीं करता"। वह सोचता है कि वह मसीह के लहू के द्वारा खरीदी गई खरीद है और उसके शरीर और आत्मा में उसकी महिमा करने के लिए वाचा बांधी है, जो परमेश्वर के हैं। पाप का प्रेम और स्वंय का प्रेम उसके आधीन हैं। वह प्रतिदिन पूछता है: "मेरे प्रति परमेश्वर की भलाइयों के प्रति मैं उसे क्या दूं?" "परमेश्वर आप क्या चाहते हैं मैं करूँ?" सच्चा मसीही कभी भी शिकायत नहीं करेगा मसीह का जुआ उसकी गर्दन तक पीड़ा दे रहा है। वह यीशु के सेवा को सच्ची स्वतन्त्रता मानता है। परमेश्वर की व्यवस्था उसका आनंद है। ईश्वरीय आज्ञाओं को निचला दर्जा देने के अपेक्षा, वह उसकी कमियों के साथ व्यवहार करता है, वह उनकी सिद्धता के स्तर तक पहुंचने के लिए निरंतर प्रयास करता रहता है।

यह आत्मिक सबंध केवल व्यक्तिगत विश्वास के द्वारा स्थापित हो सकता है। यह विश्वास हमारी ओर से प्रमुख स्थान, उत्तम भरोसा, पूरा अलगाव लेना चाहिये। हमारी ईच्छा सम्पूर्ण तरीके से उसकी ईश्वरीय ईच्छा के प्रति समर्पित होनी चाहिये, हमारी भावनाएं, हमारी अभिलाषाएं, और सम्मान मसीह के राज्य और उसके कार्य के सम्मान के साथ साझा होकर, हम निरंतर उससे अनुग्रह प्राप्त करते हैं, और मसीह हमसे धन्यवाद प्राप्त करता है।

(13) जैसे मसीह की निकटता में बढ़ते और पहचानते हैं कि हम दुर्बल हैं, उसने हमे क्या वायदा दिया है जिसका हम दावा कर सकते हैं?

और मुझे इस बात का भरोसा है, कि जिस ने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा। (फिलिप्पियों 1:6)

वे भी हैं जिन्होंने मसीह के क्षमा करने वाले प्रेम को जाना और जो सच में उसके बच्चे बनना चाहते हैं, फिर भी वे इस बात को महसूस करते हैं कि उनका चरित्र सिद्ध नहीं है, उनका जीवन त्रुटियों से भरा, और वे संदेह करने के लिए तैयार हैं की क्या सच में उनके हृदय पवित्र आत्मा के द्वारा नए किये गए हैं की नहीं। ऐसों को मै कहूंगा, दुःख में पीछे न जाएं। हमें हमेशा यीशु के चरणों में अपनी गलतियों और कमियों के लिए रोना होगा, परन्तु हमें निराश नहीं होना। यद्यपि हमारा शत्रु हम पर विजय पा ले, हमे निकाला नहीं गया, न ही परमेश्वर ने हमें छोड़ा या त्यागा। नहीं; मसीह परमेश्वर के दाहिने हाथ है, जो हमारे लिए मध्यस्था करता है। प्रिय यूहन्ना ने कहा, " मैं ये बातें तुम्हें इसलिये लिखता हूं, कि तुम पाप न करो; और यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात धर्मी यीशु मसीह"। 1 यूहन्ना 2:1। और मसीह के शब्दों को न भूलें, "पिता स्वंय तुमसे प्रेम करता है"। वह तुम्हे अपनी ओर पुन:स्थापित करना चाहता है, उसकी शुद्धता और पवित्रता की झलक तुम में। और यदि तुम उसके प्रति समर्पण करो, जिसने तुम में कार्य शुरू किया वह मसीह के दिन तक उसे पूरा करेगा। उत्सुकता से प्रार्थना करो; पूर्ण रुप से विश्वास करो। जैसे हम अपनी सामर्थ में संदेह करते हैं, आइये हम छुड़ाने वाले की सामर्थ में विश्वास करें, और उसकी स्तुति करें जो हमारे चेहरे का स्वास्थ्य है।

(14) यदि हम मसीह का प्रेम ग्रहण करें और उसे अपने जीवन में अनुमति दें, कौन-सा अदभुत आश्वासन यह पद हमें अन्नत जीवन के विषय में देता है?

जिस के पास पुत्र है, उसके पास जीवन है; और जिस के पास परमेश्वर का पुत्र नहीं, उसके पास जीवन भी नहीं है॥ मैं ने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिये लिखा है; कि तुम जानो, कि अनन्त जीवन तुम्हारा है। (1 यूहन्ना 5:12-13)

पुत्र का होना मतलब उस पर विश्वास करना कि वह हमारे लिए वह सब बने जो वह बनना चाहता है: एक उद्धारकर्ता, परमेश्वर, जो हमारा राजा होने के लिए अभिषिक्त है (देखें यूहन्ना 1:12;5:24)। उसका अर्थ है मसीह का हमारे हृदय में सम्मानित अतिथि के रूप में रहना (देखें गलतियों 2:20; इफिसियों 3:17; प्रकाशितवाक्य 3:20)

प्रेम के वातावरण में रहना मेरी अभिलाषा है जो परमेश्वर की उपस्थिति में है।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

यह मेरी अभिलाषा है परमेश्वर अपना प्रेम मुझ में भरे ताकि मैं दूसरों से व्यवहारिक रूप से प्रेम कर सकूं। मैं मेरे द्वारा दूसरों की नम्र, और भरोसेमंद और दयालु सेवा में प्रेम की सुगंध का प्रकटीकरण चाहता हूँ।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं निरंतर मसीह की ओर ताकना चाहता हूँ उसकी दया के मनन में, असीमित प्रेम और अनंत जीवन के लिए धन्यवादी हूँ जो उसने मुझे दिया।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं अपनी ईच्छा को परमेश्वर को सौपना चाहता हूँ ताकि उसमे बना रहूँ और उसे और दूसरों को प्रेम करने की धार्मिकता को मुझ में जी सकूं

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

पाठ 14

परमेश्वर के लिए हमारा प्रेम

(1) मसीह ने हमारे उद्धार के आनंद के लिए क्या किया हमारा प्रेम जितने के लिए?

और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें; जिस ने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्ज़ा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा। (इब्रानियों 12:2)

कलवरी का क्रूस सामर्थ में हमसे याचना करता है, उस कारण को समझाने के लिए क्यों हमें क्यों उद्धारकर्ता से प्रेम करना चाहिये, और हमें क्यों उसे प्राथमिकता देनी चाहिये और अपने जीवन से उत्तम देना चाहिये। हमें अपना ऊचित स्थान नम्र धीरज में क्रूस के पैरों में रखना है। हम जैसे अपने उद्धारकर्ता को पीड़ा में देखते हैं, परमेश्वर के पुत्र को मरते हुए, धर्मी को अधर्मी के स्थान पर, हम मन की नम्रता और दीनता की बातों को सीखते हैं। उसको देखो जो एक शब्द के साथ स्वर्गदूतों को सेना को अपना सहायक बनने के लिए आह्वान दे सकता है, मजाक और उपहास का विषय, निंदा और घृणा का विषय। वह स्वंय को पाप के लिए बलिदान होने के लिए दे देता है। जब निंदा की जाती है, वह धमकी नहीं देता; जब

उस पर झूठा दोषारोपण किया जाता है, वह अपना मुह नहीं खोलता। वह अपने हत्यारों के लिए क्रूस पर प्रार्थना करता है। वह उनके लिए मर जाता है; वह उन में से प्रत्येक के लिए असीमित दाम चुकाता है। वह बिना बलवा किये मनुष्य के पापों का बोझ अपने ऊपर उठाता है। और यह कभी न शिकायत करने वाला परमेश्वर का पुत्र है।

आओ, तुम जो वर्जित पापों और खुशियों में आनंद ढूढ़ रहे हो, तुम जो मसीह से तित्तर-बित्तर हो रहे हो, क्रूस के कलवरी की ओर देखो; उस राजकीय शहीद को देखों को तुम्हारे कारण पीड़ित हो रहा है, और जब तुम्हारे पास अवसर है बुद्धिमान बनो, और जीवन के सोते को खोजो और सच्ची ख़ुशी को। आओ, तुम जो छोटी-छोटी असुविधाओं के लिए शिकायत करते हो और कुछ पीडाओं के लिए जो तुम्हे इस जीवन में रहते हुए सामना करना पड़े। यीशु की ओर ताको जो तुम्हारे विश्वास कर कर्ता और सिद्धक है। उसने अपने राजकीय सिहासन को छोड़ दिया, उसकी ऊच्च पदवी, और उसकी ईश्वरीयता को परे रख दिया, मनुष्यता को धारण किया। हमारे कारण उसे त्यागा गया और तुच्छ जाना गया; वह दरिद्रबना ताकि हम उसके दरिद्रबनने के कारण धनवान बन सकें। क्या आप, विश्वास की आखों के द्वारा मसीह की पीडाओं को देखकर, पीडाओं और दुःख की गाथाओं को सुनायेंगे?

(2) यूहन्ना हमें क्या "देखने" का निर्देश देता है और परमेश्वर के प्रेम में पड़ने का पहला कदम क्या है?

देखो पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं, और हम हैं भीइस कारण संसार हमें नहीं : जानता, क्योंकि उस ने उसे भी नहीं जाना। (1 यूहन्ना 3:1)

जब हम परमेश्वर के प्रेम का वर्णन करने के लिए सही भाषा का चुनाव करते हैं, हमारे शब्दों पर लगाम लग जाती है, बहुत दुर्बल, विषय से बहुत कम, और हम अपनी कलम को नीचे रखकर कहते हैं, "नहीं, इसका वर्णन नहीं किया जा सकता"। हम केवल वही कर सकते हैं जो प्रिय चेले ने किया, और कह सकते हैं, "दखो पिता ने जगत से कैसा प्रेम किया, कि हम उसकी संतान कहला सकें"। इस प्रेम के वर्णन का प्रयत्न करने के द्वारा, हमें लगता है हम बच्चे हैं और केवल छोटे बच्चे के समान अपने होठ हिला रहें हैं जैसे बच्चा बोलना शुरू करता है; क्योंकी इस विषय में चुप्पी ही एकमात्र योग्यता है। इस प्रेम का वर्णन सारी भाषाओँ के बाहर है। यह शरीर में परमेश्वर का रहस्य है, परमेश्वर में मसीह, और ईश्वरता और मनुष्यता। मसीह अस्मानंतर मनुष्यता में झुका, वह अपने

विश्वास करने वालों को भी ऊंचा उठा सके, उसके सिंहासन के साथ बैठने के लिए। वे सभी जो मसीह की ओर देखते हैं कि घाव और चोट जो पाप के द्वारा उत्पन्न हुई वे उसमें चंगी हो जायेंगी, वे ठीक हो जायेंगी।

(3) हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम को पहचानने में दूसरा और तीसरा कदम क्या है ताकि हम उससे प्रेम करने लगें?

और जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, उस को हम जान गए, और हमें उस की प्रतीति है; परमेश्वर प्रेम हैजो प्रेम में बना : रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है; और परमेश्वर उस में बना रहता है। (1 यूहन्ना 4:16)

एक चीज जो हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है ताकि हम परमेश्वर के क्षमा करने वाले प्रेम को ग्रहण कर सकें और बांट सकें और विश्वास करें उसका वह प्रेम जो हमारे लिए है। (1 यूहन्ना 4:16) शैतान हर एक षड्यंत्र का इस्तेमाल कर रहा है जो वो कर रहा है, ताकि हम उस प्रेम को न पहचान सकें। वह सोचने के लिए हमें सहायता करेगा कि हमारी गलतियां और हमारे पाप इतनेगंभीर हैं कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का सम्मान नहीं करेगा और हमें आशीष नहीं देगा या बचाएगा नहीं। अपने आप में हम कुछ नहीं केवल कमजोरी ही देख सकते हैं, परमेश्वर के सामने हमारी सिफारिश करने के लिए कुछ भी नहीं, और शैतान कहता है इसका कोई लाभ नहीं; हम हमारे चरित्र के कमियों के लिए कोई उपचार नहीं ढूँढ़ सकते। जब हम परमेश्वर के निकट जाने की सोचते हैं, शत्रु हमारे कान में फुसफुसाता है, प्रार्थना करने से कोई लाभ नहीं; क्या तुमने वह गलती की? क्या तुमने परमेश्वर के विरुद्ध पाप नहीं किया और स्वंय के विवेक को तोड़ा? परन्तु हम शत्रु से कह सकते हैं "मसीह यीशु का लहू हमें हमारे सारे पापों से शुद्ध करता हैं"। (1 यूहन्ना 1:7)

जब हम सोचते हैं हमने पाप कर दिया और प्रार्थना नहीं कर सकते, वही समय प्रार्थना करने का होता है। हम क्तिने भी शर्मिंदा क्यों न हों, हमें प्रार्थना और विश्वास करना चाहिये। "यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है, कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिये जगत में आया, जिन में सब से बड़ा मैं हूं"। (1 तीमुथियुस 1:15। क्षमा, परमेश्वर के साथ मेलमिलाप, हमारे कार्यों के प्रतिफल के रूप में नही आता, न ही यह पापी मनुष्यों की योग्यता के द्वारा आता है, बल्कि यह हमारे लिए वरदान है, मसीह की दोषरहित धार्मिकता को ग्रहण करना इसकी प्राप्ति की नीव है।

(4) मसीह ने हमारे ठंडे हृदयों में क्या करने का वायदा किया है यदि हम उसे अनुमति दें तो ताकि हम में उस से और दूसरों से प्रेम करने के क्षमता हो?

मैं तुम को नया मन दूंगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूंगा; और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकाल कर तुम को मांस का हृदय दूंगा। (यहेजकेल 36:26)

केवल परमेश्वर का अनुग्रह पत्थर के हृदय को मास के हृदय में बदल सकता है, और इसे परमेश्वर के लिए जीवित बना सकता है। मनुष्य संसार की दृष्टि में बड़े कार्य कर सकता है, उनकी उपलब्धियां बहुत हो सकती हैं और मनुष्य की दृष्टि में ऊंचे दर्जे की, परन्तु पूरी योग्यता, और वरदान, और संसार की सारी खूबियां चरित्र को बदलने और पापमय संतान को परमेश्वर की संतान बनाने में विफल है, और स्वर्ग का वारिस। मनुष्य में मनों को धर्मी बनाने की कोई सामर्थ नहीं है, न ही हृदय को शुद्ध करने की। नैतिक रोग बहुत बड़े चिकित्सक के द्वारा चंगा नहो हो सकता।

स्वर्ग का सबसे महान वरदान, यहाँ तक कि पिता का इकलौता,। अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण, ही खोये हुओं को छुड़ाने के योग्य है। क्या धन्यवाद, क्या प्रेम, हमारे हृदयों को भरना चाहिये जैसे हम परमेश्वर के प्रेम पर मनन करते हैं! हृदय का पिघलना और आधीन होना जरूरी है जैसे हम उस जोखिम की ओर ध्यान लगाते हैं जो यीशु ने अपने ऊपर उठाया ताकि मनुष्य पुन:स्थापितहो सके और ऊंचा उठाया जाए। संसार के छुड़ाने वाले ने पीड़ा को सहा इस खोये हुए संसार का दोष। कलवरी पर मसीह का वरदान मानने वाली बात है जो पाप की न समझ आने वाली सामर्थ से बाहर है; और जब पाप की समझ पापी के हृदय पर कब्जा करने लगती है, और जब बोझ सहने से बाहर लगता है, यीशु अपनी और बुलाने और देखकर जीने का निमन्त्रण देता है। मसीह में मन को धोने की सामर्थ है। "यहोवा कहता है, आओ, हम आपस में वादविवाद करेंतुम्हारे पाप चाहे लाल रंग के हों :, तौभी वे हिम की नाईं उजले हो जाएंगे; और चाहे अर्गवानी रंग के हों, तौभी वे ऊन के समान श्वेत हो जाएंगे"।

(5) हम कौन-से वायदे का दावा कर सकते यदि हम विश्वासयोग्यता से उसकी खोज करें?

जो मुझ से प्रेम रखते हैं, उन से मैं भी प्रेम रखती हूं, और जो मुझ को यत्न से तड़के उठ कर खोजते हैं, वे मुझे पाते हैं। (नीतिवचन 8:17)

मेरी खोज करो। इतनी लगन से कि एक व्यक्ति भोर में उठकर खोजता है। इस संसारिक बातों का विकर्षण, और मानवीय हृदय के धोखे के कारण, लगन में बने रहना जरूरी है सच्ची बुद्धि और परमेश्वर के साथ सबंध बनाने के लिए।

(6) बलिदानों और चढ़ावों से बढ़कर परमेश्वर के लिए क्या अधिक महत्वपूर्ण है, और हमारी महान बुलाहट और सौभाग्य है?

और उस से सारे मन और सारी बुद्धि और सारे प्राण और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना और पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना, सारे होमों और बलिदानों से बढ़कर है। (मरकुस 12:33)

परमेश्वर से प्रेम करने का यहां तात्पर्य है अपने आप को सम्पूर्ण तरीके से उसकी सेवा के लिए दे देना, प्रेम, जीवन, शारीरिक ताकतें, और बुद्धि। इस प्रकार का "प्रेम" "व्यवस्था की परिपूर्णता है"। (रोमियो 13:10), और उस प्रकार का प्रेम जिसमे एक व्यक्ति परमेश्वर के अनुग्रह के अनुसार चलता है, "मसीह की" "व्यवस्था" को रखने के द्वारा (यूहन्ना 14:15; 15:9, 10)। सत्य में, परमेश्वर ने अपने पुत्र को इसलिए इस संसार में भेजा ताकि हमारे लिए "व्यवस्था" का पालन संभव हो सके इस मायने में और आत्मा में, इसी प्रकार "व्यवस्था की धार्मिकता" हम में "पूरी होती है" (रोमियो 8:3,4)। वह जो सत्य में परमेश्वर को "जानता" है परमेश्वर की "आज्ञायें" मानेगा" क्योंकी परमेश्वर का प्रेम उस में "सिद्ध" हो चुका है (1 यूहन्ना 2:4-6)

उसे सम्पूर्ण बुद्धि, प्राण और मन से प्रेम करना, जो असीमित है, सर्वव्यापी, का अर्थ प्रत्येक सामर्थ का उत्तम विकास है। इसका अर्थ है सम्पूर्ण प्राण में, बुद्धि में और मन में-परमेश्वर के स्वरूप का पुनस्थापना होना।

(7) हमारे प्रेम का क्या महान प्रकटीकरण हम दे सकते हैं उसके किये गए बलिदान के लिए?

यीशु ने उस से कहा, हे नारी, मेरी बात की प्रतीति कर कि वह समय आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता का भजन करोगे न यरूशलेम में।

मसीह परमेश्वर की आज्ञाओं में आज्ञाकारिता की महत्वपूर्णता को जोड़ता है। उनमें उनका सक्षम ज्ञान होना चाहिये, और उन्हें

प्रतिदिन जीवन में लाया जाना चाहिये। मनुष्य परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं कर सकता, जैसे वह मसीह में है, और मसीह उनमें। और उसके लिए मसीह में रहना संभव नहीं, उसकी आज्ञाओं के प्रति प्रकाश पाकर, जबकि उन में से छोटी से छोटी को भी तुच्छ न जाना जाए। उसके वचन के प्रति दृढ़ और ईच्छापूर्ण आज्ञाकारिता के द्वारा, वे उनके परमेश्वर के द्वारा भेजे गए उनके प्रेम को प्रमाणित करती हैं।

परमेश्वर की आज्ञाओं का न मानने का अर्थ है उससे प्रेम न करना। कोई भी परमेश्वर की आज्ञा को नहीं मान सकता जब तक वे उस से प्रेम न करें जो पिता का इकलौता है। और निश्चयता में; यदि वे उस से प्रेम करें, वे उसके आज्ञापालन के द्वारा उस प्रेम को प्रकट करेंगें। जो मसीह से प्रेम करेंगें वे पिता के द्वारा प्रेम किये जायेंगें। उनकी आपातकालीन स्थिति में और व्याकुलता में मसीह उनका सहायक होगा।

जीवित विश्वास सोने की कड़ियों के समान छोटी से छोटी जिम्मेदारी में भी बहने पाए। तब प्रतिदिन मसीही बढ़ोतरी को बढ़ावा देगा। मसीह को निरंतर ताकना होगा। उनके लिए प्रेम एक महत्वपूर्ण घटक होगा जो प्रत्येक होने वाली बात में दिखाई देगा। तब हमारे वरदानों के सही उपयोग के द्वारा हम सोने की कड़ी के साथ स्वंय को उत्तम संसार के साथ जोड़ सकते हैं। यही सच्ची पवित्रीकरण है, पवित्रीकरण में प्रतिदिन की जिम्मेदारियों को प्रसन्नतापूर्वक परमेश्वर की ईच्छा और आज्ञाकारिता में निभाना सम्मिलित है।

जब परमेश्वर की आज्ञा मानना हृदय में है, जब उस लक्ष्य को पूरा करने के लिए कार्य किया जाता है, यीशु इस स्वभाव को और कार्य को मनुष्य की उत्तम सेवा के रुप में ग्रहण करता है, और उसकी ईश्वरीय योग्यता की कमी को पूरा करता है।

(8) क्योंकी हम, स्वंय के द्वारा, आज्ञाओं को नहीं मान सकते और हमारी स्वाभाविक प्रवर्ती अनाज्ञाकारिता के प्रति है, परमेश्वर क्या करेगा यदि, हम प्रेम और विश्वास के द्वारा, लगन से उसकी परिवर्तन करने वाली सामर्थ के प्रति समर्पित करेंगें?

यीशु ने उस से कहा, हे नारी, मेरी बात की प्रतीति कर कि वह समय आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर पिता का भजन करोगे न यरूशलेम में। (इब्रानियों 8:10)

परमेश्वर की व्यवस्था हर प्रकार के स्वार्थ का खंडन करती है, हृदय का घमंड, बेईमानी की हर एक प्रजाति, प्रत्येक रहस्य या खुला अपराध। स्वाभाविक हृदय उसके निर्देशों की पालना का ईच्छुक नहीं होता, या उसकी मांगो के आज्ञापालन के लिए। "यह परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन नहीं है, न ही यह सच में हो सकती है"। परन्तु मसीह में सच्चा प्रेम हृदय को बदल देता है, व्यवस्था के स्वभाव में बदलाव लाता है, जब तक वह परमेश्वर की व्यवस्था से प्रसन्न न हो। जो मनुष्य परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति शत्रुता दिखाता है उसने परमेश्वर की परिवर्तन करने वाली सामर्थ के प्रति समर्पण नहीं किया है। यह परमेश्वर की व्यवस्था का आज्ञापालन प्रेम की सच्चाई को दिखाता है। यूहन्ना कहता है, "यह परमेश्वर का प्रेम है, और यदि हम उसकी आज्ञाओं को मानें; और उसकी आज्ञायें बोझिल नहीं हैं"।

(9) यदि हमारा "धर्म" प्रेम-सम्बन्धित हो और न कि परम्परा सम्बन्धित और तब, उसके अनुग्रह के द्वारा हम उसका आज्ञापालन करते हैं, हम कहां निरंतर बने रहेंगें?

यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे : जैसा कि मैं ने अपने पिताकी आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं। (यूहन्ना 15:10)

सच्चा धर्म (सबंध से जुड़ा) मनुष्य को परमेश्वर की व्यवस्था की आधीनता में लाता है, शरीरिक, मानसिक, और नैतिक। यह संयम, धीरज और ईमानदारी सिखाता है। धर्म मन को विशाल, स्वाद को शुद्ध, और दंड को शुद्ध बनाता है। यह मन को स्वर्ग की शुद्धता में भागी बनाता है। परमेश्वर के प्रेम में विश्वास और अधिनिर्णय प्रयोजन चिंता और दुःख के बोझ को हल्का करता है। यह मन को आनन्द और संतुष्टि से भरता है उसकी निम्नता और उच्चत्ता में। धर्म स्वास्थ्य को बढ़ाता है, दीर्घायु देता है, और हमारी सारी आशीषों के आनंद को बढ़ाता है। यह मन को कभी अचूक सोते की ओर दिशा देता है।

काश! वे सभी जिन्होंने मसीह को नहीं चुना वे इस बात को जान पाएं कि उसके पास देने के लिए कुछ महान है जिसकी वे खोज में हैं। मनुष्य अपने प्राण को बहुत घातक चोट पहुचाता और अन्याय करता है जब वह परमेश्वर की ईच्छा के विरुद्ध सोचता या कार्य करता है। जो मार्ग उसके अनुसार वर्जित है उसमें सच्चा आनन्द नहीं मिल सकता क्योकि वह जानता है क्या उत्तम है, और जो सारी सृष्टि की भलाई के लिए योजना बनाता है। अपराध का मार्ग विनाश और बर्बादी की ओर अगुवाई करता है; परन्तु बुद्धि का

मार्ग शांति की ओर, उसके मार्ग मनभाऊ हैं, और उसके सब मार्ग कुशल के हैं। (नीतिवचन 3:17)

(10) क्योंकी हमारी अपनी योग्यता में प्रेम करने की क्षमता नहीं है, परमेश्वर हमारे लिए क्या करेगा यदि हम उसको अनुमति दें?
और तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे और तेरे वंश के मन का खतना करेगा, कि तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन और सारे प्राण के साथ प्रेम करे, जिस से तू जीवित रहे। (व्यवस्थाविवरण 30:6)

हृदय का खतना कर अर्थ है एक व्यक्ति की आत्मिक विचारधारा को जिलाना और उसके विवेक को कोमल बनाना।

यह परमेश्वर है जो हृदय का खतना करता है। शुरू से लेकर अंत तक यह परमेश्वर का कार्य है। नाश होने वाला पापी कह सकता है: "मैं खोया हुआ पापी हूँ; परन्तु मसीह खोये हुओं को ढूंढने के लिए आया। वह कहता है, "धर्मियों के लिए नहीं, परन्तु पापियों के लिए आया हूँ' (मरकुस 2:17) । मै पापी हूँ, और वह क्रूस के कलवरी पर मेरे लिए मरा। मुझे अब एक भी क्षण बिना उद्धार प्राप्त किये नहीं रहना। वह मेरे लिए मरा और मुझे धर्मी ठहराने के लिए तीसरे दिन जी उठा, और वह अभी उझे उद्धार देगा। मै उस क्षमा को ग्रहण करता हूँ जिसका उसने वायदा किया"।

(11) जब परमेश्वर के लिए प्रेम का स्वर्गीय सिद्धांत मेरे दिल को भरता है, और उसकी आत्मा के द्वारा हम उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, कैसे वह अपने बच्चों के साथ व्यवहार करेगा?

जब हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, और उस की आज्ञाओं को मानते हैं, तो इसी से हम जानते हैं, कि परमेश्वर की सन्तानों से प्रेम रखते हैं। (1 यूहन्ना 5:2)

जब अन्नत प्रेम का स्वर्गीय सिद्धांत हृदय को भरता है, यह दूसरों में बहेगा, न केवल इसलिए कि उससे अनुग्रह को पाया, परन्तु क्योंकी प्रेम क्रमिक सिद्धांत है, और चरित्र को बदलता है, आवेग को नियंत्रित करता है, अभिलाषाओं को नियंत्रित करता है, शत्रुता को अधीनता में लाता है, स्नेह को ऊंचा उठाता है। यह प्रेम सिकुड़ा हुआ नहीं है, इसमें केवल 'मै और मेरा," नहीं जुड़ा परन्तु यह उतना विशाल है जितना कि संसार और उतना ऊँचा जितना कि स्वर्ग। यह स्वर्ग के कार्यकर्ताओं की सहमति में हैं। यह प्रेम,

मनों में संजोया हुआ, सम्पूर्ण जीवन को मधुर बना देता है, और प्रत्येक चीज पर प्रभाव डालता है। उसको पाने के द्वारा, हम केवल खुशी ही पा सकते हैं, किस्मत हम पर चमके। और यदि यह अपने सम्पूर्ण हृदय से परमेश्वर से प्रेम करें, हमें उसके बच्चों से भी प्रेम करना है। यह प्रेम परमेश्वर का आत्मा है। यह स्वर्गीय आभूषण है जो मन को महानता और गौरव देती है।

(12) जब हम सत्य में परमेश्वर से प्रेम करते हैं, और आनंद का अनुभव करते हैं जो उसका आज्ञापालन लेकर आता है, हम कौन-सी तीन चीजें करना चाहेंगे?

मेरी आज्ञाओं को मान, इस से तू जीवित रहेगा, और मेरी शिक्षा को अपनी आंख की पुतली जान;
उन को अपनी उंगलियों में बान्ध, और अपने हृदय की पटिया पर लिख ले। (नीतिवचन 7:2-3)

जो मनुष्य केवल परमेश्वर की आज्ञाओं को बाध्यता या खानापूर्ति के लिए मानता है- क्योंकी उसे ऐसा करना ही है-वह आज्ञाकारिता के आनंद में कभी प्रवेश नहीं करेगा। वह आज्ञा नहीं मानता। जब परमेश्वर की आज्ञायें बोझ बन जाती हैं क्योंकी वे मानवीय झुकाव से दूर हैं, हम जानते हैं कि यह जीवन मसीही जीवन नहीं है। सच्ची आज्ञाकारिता सिद्धांतो का हमारे भीतर पूरा होना है। यह धार्मिकता के प्रेम से फूट पड़ता है, परमेश्वर की व्यवस्था का प्रेम। धार्मिकता का सारांश हमारे छुड़ाने वाले के प्रति विश्वासयोग्य रहना है। यह हमें सही चींजों की ओर अगुवाई करेगा क्योंकी यह उचित है- और क्योंकी उचित बाते परमेश्वर को प्रसन्न करती हैं।

किसी भी मनुष्य के लिए यह संभव नहीं कि वह खुश रह सके और परमेश्वर के दिए हुए निर्देशों को भी न माने, और स्वंय के मानदंड बनाये जिनका वह आसानी से पालन करता है। तब तो अलग-अलग मानसिकताओं के आधार पर अलग-अलग मानदंड होंगे, और परमेश्वर के हाथों से से निकले ही शासन का नियन्त्रण मनुष्य के हाथों में आ जाता है। स्वंय की व्यवस्था ऊपर हो जाती है, मनुष्य की ईच्छा को सर्वोच्च समझा जाता है; और जब परमेश्वर की सर्वोच्च और पवित्र ईच्छा की आज्ञापालन, सम्मान को प्रस्तुत किया जाता है, तब मनुष्य उसे स्वंय के तरीके से करना चाहता है...अपनी प्रेरणा को करने के लिए, और मानवीय वाहक और ईश्वरीय के मध्य विवाद होने लगता है। {आर सी 56}

(13) जब हम प्रेम के कारण, और उसकी पवित्र आत्मा के द्वारा, उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, तब कौन-सी आशीषों का वायदा हमें दिया गया है?

धन्य वे हैं, जो अपने वस्त्र धो लेते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के पेड़ के पास आने का अधिकार मिलेगा, और वे फाटकों से हो कर नगर में प्रवेश करेंगे। (प्रकाशितवाक्य 22:14)

दुनिया का छुड़ाने वाला हमसे कहता है; आइये सुनिए वह क्या कहता है; "धन्य वे हैं, जो अपने वस्त्र धो लेते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के पेड़ के पास आने का अधिकार मिलेगा, और वे फाटकों से हो कर नगर में प्रवेश करेंगे"। (प्रकाशितवाक्य 22:14)। तब जो परमेश्वर के दावों को उसके वचन में देखते हैं और उसकी नहीं मानते, परन्तु अपनी लापरवाही के लिए बहाने बनाते हैं या जान-बूझकर उसकी मांगों को पूर्ण नहीं करते, वे अपने कामों के द्वारा यह दिखाते हैं कि वे धन्य वायदे आज्ञाकारिता की शर्तानुसार ग्रहण नहीं करना चाहते। वे वो लोग होंगे जो जीवन के वृक्ष से नहीं खा पायेंगें, परन्तु वे जान-बूझकर परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ने वालों के साथ मिले हुए हैं जिनके विषय में परमेश्वर कहता है "हे कुकर्म करनेवालो, तुम सब मुझ से दुर हो"। (लूका 13:27)

(14) एक बार जब हम हमारे स्वर्गीय पिता के प्रेम को जानते और अनुभव करते हैं और हमारा उद्धारकर्ता यीशु मसीह, दाऊद के समान, हमारा गीत और गवाही क्या होगा?

मैं यहोवा के धर्म के अनुसार उसका धन्यवाद करूंगा, और परमप्रधान यहोवा के नाम का भजन गाऊंगा॥ (भजनसंहिता 7:17)

मसीह जो जीवनदाता है उसके क्रियाशील जवित विश्वास में भरोसा रखना हमारा सौभाग्य है। सारे संतों के साथ इस बात को समझना हमारा सौभाग्य है, जो उसकी चौड़ाई और गहराई और लम्बाई क्या है, और परमेश्वर के प्रेम को जानना जो सारे ज्ञान से बाहर है और जिसमें सारी परिपूर्णता वास करती है। उसको अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता करके देखना, हम उसके बचाने वाले अनुग्रह का अभ्यास करेंगें। हमें स्वंय की बजाय यीशु के विषय में सोचना है। हमारे पास परमेश्वर की स्तुति करने का हर संभव कारण है सम्पूर्ण हृदय, प्राण और आवाज के साथ, यह कहते हुए, मैं उसके महान प्रेम के लिए परमेश्वर की स्तुति करूंगा जिस प्रेम से उसने मुझसे प्रेम किया।

क्रूस के कलवरी को ऊंचा उठायें; उसे ऊंचा उठाए, ताकि संसार उसे देख सके। उसकी भलाई के बारे में बात करो, उसके प्रेम के

विषय में गाओ, और उसे अपने दिल की गहराई से धन्यवाद दो। {यू एल 37)

मैं प्रसन्न हूँ और धनी हूँ क्योंकी हमारे उद्धार के लिए मसीह ने क्रूस सहा। उसने मेरा प्रेम जीता और मै उसे सब बातों में प्रथम और अंतिम रखने की अभिलाषा करता हूँ,

गोला लगायें : हाँ अनिर्णीत

मैं प्रार्थना करता हूँ की मै अपनी आँखों से स्पष्टता से उस अदभुत प्रेम को "देख पाऊं" जो पिता ने मुझ पर बरसाया कि वह मुझे अपनी संतान के रूप में ग्रहण करता है।

गोला लगायें : हाँ अनिर्णीत

मैं प्रार्थना करता हूँ कि मै उसे सच में जान सकूं और उसके प्रेम में विश्वास कर सकूं कि वह मुझे दूसरों के प्रति उसके प्रेम को प्रकट करने के लिए शब्द देगा।

गोला लगायें : हाँ अनिर्णीत

मैं परमेश्वर के वायदों का दावा करता हूँ कि वह मेरे पत्थर के हृदय को निकालकर प्रेम का हृदय देगा कि मेरे भीतर उसे और दूसरों को प्रेम करने की क्षमता हो।

गोला लगायें : हाँ अनिर्णीत

मैं अपने हृदय से शपथ लेता हूँ और सम्पूर्ण हृदय, प्राण और मन से उसकी खोज करूं। अपना पूरा प्राण, प्रेम, जीवन, शारीरिक सामर्थ और बुद्धि उसकी सेवा के लिए दे दूँ।

गोला लगायें : हाँ अनिर्णीत

मै धन्यवाद करता हूँ कि उसके अनुग्रह के द्वारा मैं सच्चे धर्म का अनुभव कर सकता हूँ जो उसके साथ सबंध रखने के द्वारा

आता है जो मेरे जीवन में उसकी बनी रहने वाली उपस्थिति में दिखता है। मैं परमेश्वर की व्यवस्था की एकता में रहना चाहता हूँ कि वह मेरा आनंद हो उसकी आज्ञापालन करने के लिए।

गोला लगायें : हाँ अनिर्णीत

मै उस दिन की प्रतीक्षा करता हूँ जब बह शहर के द्वार खोलकर मुझे आमंत्रित करेगा और उन सभी को जो उसके महिमामय राज्य के प्रति विश्वासयोग्य हैं।

गोला लगायें : हाँ अनिर्णीत

पाठ 15

परमेश्वर का प्रेम प्राप्त करना

(1) कौन-सा ईश्वरीय, सामर्थी वरदान परमेश्वर ने हमें दिया है, और हम अनुमति देते हैं, जो हमारे चरित्र को बदले, हमारे आवेग पर शासन करे और हमें उसे और दूसरों को प्रेम करने के योग्य बनाये?

हम इसलिये प्रेम करते हैं, कि पहिले उस ने हम से प्रेम किया। (1 यूहन्ना 4:19)

परमेश्वर के लिए सर्वोत्तम प्रेम और एक-दूसरे के लिए निस्वार्थ प्रेम-यह उत्तम वरदान है जो हमारी स्वर्गीय पिता हमें दे सकता है। यह प्रेम आवेग नहीं है, परन्तु एक ईश्वरीय सिद्धांत, एक स्थायी सामर्थ। अपवित्र हृदय इसे उत्पन्न नहीं कर सकते। केवल जिन हृदयों में मसीह वास करता है यह पाया जाता है। "हम उस से प्रेम करते हैं क्योंकी उसने पहले हम से प्रेम किया"। वे हृदय जो ईश्वरीय अनुग्रह के द्वारा नवीन बनाये गए हैं, प्रेम क्रिया को नियंत्रित करने वाला सिद्धांत है। यह चरित्र को बदलता है, अभिलाषाओं को नियंत्रित करता है और प्रेम को विशाल बनाता है। मन में संजोया गया यह प्रेम, जीवन को मधुर बना देता है और प्रत्येक जगह पवित्र करने वाले प्रभाव को छोड़ता है।

(2) शुद्ध प्रेम, लहू और आत्मा के साथ मिश्रित, होकर क्या कर सकता है?

बैर से तो झगड़े उत्पन्न होते हैं, परन्तु प्रेम से सब अपराध ढंप जाते हैं। (नीतिवचन 10:12)

प्रेम सामर्थ है। इस सिद्धांत में बोद्धिक और नैतिक बल भी शामिल है, और इससे अलग नहीं हो सकते। धन की प्रवर्ती भ्रष्ट और विनाश करना है; दबाव की ताकत नुकसान पहुचाने के लिए बहुत ताकतवर है; परन्तु प्रेम का सर्वोत्तम मूल्य उसके भलाई के कार्य करने की कुशलता में है, और कुछ और नहीं वरन केवल भलाई करने में ही। जो भी शुद्ध मन के साथ किया जाता है, चाहे वह मनुष्य की दृष्टि में थोड़ा या असम्मानीय हो, वह सम्पूर्ण रूप से फलवंत है; क्योंकी परमेश्वर उसकी मात्रा की अपेक्षा कितना व्यवहार में लाया गया उसे देखता है। प्रेम परमेश्वर की ओर से है। अपरिवर्तनीय हृदय न ही इसे बना सकता और न ही इस स्वर्गीय बढ़ोतरी के पौधे को उत्पन्न कर सकता है, जो केवल वहीं पर उपजता या फलता है जहां मसीह होता है।

मसीह का प्रेम गहरा और सच्चा है, कभी न बहना बंद होने वाली नदी के समान है उनके लिए जो उसे ग्रहण करते हैं। उसके प्रेम में कोई स्वार्थ नहीं। यदि यह स्वर्ग में पैदा हुआ प्रेम हमारे हृदय में सर्वदा बने रहने वाला सिद्धांत है, वह स्वंय को दूसरों पर प्रकट करेगा, न केवल कुछ विशेष रिश्तों पर जो हमारे लिए विशेष हैं, परन्तु उन सभी के लिए जिनके हम सम्पर्क में आते हैं। यह हमें ध्यान देने वाली क्रियाओं में अगुवाई करेगा, छूट के लिए, दयालुता के कार्य करने के लिए, कोमलता, प्रोत्साहन और सत्य के वचन बोलने के लिए। यह हमें उनके साथ सहानूभूति दिखाने के

लिए अगुवाई करेगा जिनके हृदय सहानूभूति के भूखे हैं (एम एस 17, 1899)

(3) परमेश्वर हमें कौन-सी तीन चीजें देना चाहता है कि हम उसके स्वरूप को प्रकट कर सकें और इस संसार को उसका चरित्र प्रकट कर सकें?

क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ, और प्रेम, और संयम की आत्मा दी है। (2 तीमुथियुस 1:7)

जब कभी मनुष्य उद्धारकर्ता के निमन्त्रण को अस्वीकार करता है, वे स्वंय को शैतान के प्रति समर्पित करते हैं। भीड़ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, घर में, व्यापार में, और यहां तक कि कलीसिया में भी, वतर्मान में भी ऐसा करते हैं। इसी कारण हिंसा और अपराध पृथ्वी पर बहुत ज्यादा फैला है, और नैतिक अंधकार, मृत्यु का कष्ट, मनुष्य के डेरों में समा गया। इस स्पष्ट परीक्षा के कारण, शैतान मनुष्य को बुरे से बुरे पाप में फसा रहा है, जब तक पूरी बर्बादी और भ्रष्टता न दिखाई दे। उसकी सामर्थ के विरुद्ध सुरक्षा केवल उसकी उपस्थिति में पाई जाती है। मनुष्यों और स्वर्गदूतों के सामने शैतान को मनुष्य शत्रु और विनाश करने वाला प्रकट किया गया है; और मसीह को, मनुष्य का मित्र और छुड़ानेवाले के रूप में। उसकी आत्मा मनुष्य के भीतर उन सभी चीजों को विकसित करेगी को चरित्र को विशाल और स्वभाव को गौरवमय बनाएगा। वह शरीर, प्राण और आत्मा को परमेश्वर की महिमा में बढ़ने के लिए बनाएगा। "क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ, और प्रेम, और संयम की आत्मा दी है"। "जिस के लिये उस ने तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया, कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा को प्राप्त करो"। "क्योंकि जिन्हें उस ने पहिले से जान लिया है उन्हें पहिले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे"। 2 तीमुथियुस 1:7; 2 थिस्लुनिकियों 2:14; रोमीयों 8:29

(4) जब एक बार प्रेम का वरदान प्राप्त कर लिया जाए और विश्वासयोग्यता से अभ्यास किया जाये, तब बुराई की सामर्थी बाढ़ इसे क्या नहीं कर पाएगी?

पानी की बाढ़ से भी प्रेम नहीं बुझ सकता, और न महानदों से डूब सकता है। यदि कोई अपने घर की सारी सम्पत्ति प्रेम की सन्ती दे दे तौभी वह अत्यन्त तुच्छ ठहरेगी॥ (श्रेष्ठगीत 8:7)

प्रेम बिना क्रियाशीलता के नहीं जी सकता, और प्रत्येक क्रिया इसे बढ़ाती, बलवंत करती, और आगे बढ़ाती है। प्रेम विजयी होगा जब विवाद और अधिकार सामर्थहीन हों। प्रेम न ही लाभ के लिए और न ही प्रतिफल के लिए कार्य करता है; परन्तु परमेश्वर ने ठहराया है ताकि प्रेम से किये गए प्रत्येक कार्य का परिणाम संतुष्टि हो। यह स्वभाव में फैलानेवाला है और क्रियाशीलता में शांत, परन्तु फिर भी उसके उद्देश्य में दृढ़ और मजबूत बुराई को हराने में। यह उसके प्रभाव में पिघलाने वाला और परिवर्तन लाने वाला है, और पापी के जीवन का नियन्त्रण लेगा और उसके हृदय को प्रभावित करेगा जब अन्य साधन असफल प्रमाणित हों।
जब कभी बौद्धिकता की सामर्थ, अधिकार और दबाव का प्रयोग किया जाए, और प्रेम का प्रकटीकरण विध्यमान न हो, तब जिन तक हम पहुचने का प्रयास करते हैं वे बचाव, पीछे धकेलने की पदवी को खोजने की अभिलाषा रखते हैं, और उनके बचाव की प्रतिरोधकता बढ़ जाती है। यीशु शांति का राजकुमार था। वह इस संसार में अधिकार और प्रतिरोधकता को स्वंय की आधीनता में लाने के लिए इस संसार में आया। बुद्धि और बल को वह आज्ञा दे सकता था, परन्तु बुराई पर विजय पाने के लिए जिन तरीकों का प्रयोग किया वे प्रेम की बुद्धि और बल थे। अपने वर्मान से अपनी रूचि को विभाजित करने के लिए पीड़ित न हों जब तक परमेश्वर उसी क्षेत्र में आपको दूसरा हिस्सा देना उचित न समझे। प्रसन्नता को न खोजें, क्योंकी यह खोजने से कभी नहीं आती। अपनी जिम्मेदारी को करते रहें। तुम्हारे सब कार्य विश्वासयोग्यता के साथ होने पाएं, और नम्रता को धारण करो।

(5) जब हमने मसीह के प्रेम की सामर्थ को हममें अनुभव कर लिया और ओर खोजते हैं, वह हमारे प्रेम की क्षमता को कितना बढ़ाएगा?

अब जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है (इफिसियों 3:20)

“दो, तो तुम्हे भी दिया जाएगा” (लूका 6:38); तू बारियों का सोता है, फूटते हुए जल का कुआँ, और लबानोन से बहती हुई धाराएं हैं”॥ (श्रेष्ठगीत 4:15)। जिस हृदय ने पहले मसीह के प्रेम को चखा है, वह निरन्तर और ज्यादा के लिए तरसता है, और जैसे आप बाटते हैं आप और ज्यादा बहुतायत और माप में प्राप्त करेंगें। मन में परमेश्वर का प्रत्येक प्रकाशन और अधिक जानने और प्रेम करने की क्षमता को बढ़ाता है। हृदय की निरंतर आवाज होती है, “तुझमे से और जायदा,” और हमेशा आत्मा का उत्तर होता है,

"और अधिक"। (रोमियो 5:9-10)। "क्योंकी हमारा परमेश्वर हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है"। इफिसियों 3:20। यीशु जिसने स्वंय को मनुष्य के लिए शून्य कर दिया, पवित्र आत्मा बिना माप के दिया गया था। उसी प्रकार प्रत्येक अनुसरण करने वाले को दिया जाएगा जिसका हृदय उसके निवास के लिए समर्पित है। हमारे परमेश्वर ने स्वंय यह आज्ञा हमें दी है, "पवित्रआत्मा से भरो" (इफिसियों 5:18), और यह आज्ञा परिपूर्णता का भी वायदा है। इसमें परमेश्वर की प्रसन्नता थी कि मसीह में "सारी ईश्वरता सदेह वास करे," और उसी में "तुम"परिपूर्ण हो"। कुलुस्सियो 1:19; 2:10

(6) परमेश्वर कौन-सा वायदा भरोसा करता है जब प्रेम की छुड़ानेवाली सामर्थ हमारे हृदय को भर देती है और हमारी मनसाओं पर नियन्त्रण करने लगती हैं?

और हमें उसके साम्हने जो हियाव होता है, वह यह है; कि यदि हम उस की इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो हमारी सुनता है।
और जब हम जानते हैं, कि जो कुछ हम मांगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं, कि जो कुछ हम ने उस से मांगा, वह पाया है। (1 यूहन्ना 5:14-15)

यूहन्ना ने विश्वासियों को उन अवसरों के बारे में बताने का प्रयत्न किया जो उन्हें प्रेम की आत्मा के अभ्यास के द्वारा मिलेगें। यही छुड़ाने वाली सामर्थ, हृदय को भरकर, प्रत्येक मनसा को नियंत्रित करेगी और उसके रखने वालों को संसार के सारे बुरे प्रभावों से उठाएगी। और जैसे यह प्रेम की पूरी अनुमति दी जाती है यह जीवन की सामर्थ की प्रेरणा बन जाता है, परमेश्वर में उनका भरोसा और विश्वास और उनके साथ उसका व्यवहार सम्पूर्ण हो जाएगा। तब वे सम्पूर्ण विश्वास के भरोसे के साथ उसके पास आ सकते हैं, यह जानते हुए कि वे उससे अपने वर्तमान और अंनत जीवन के लिए सब कुछ प्राप्त करेगें। "यहीं हमारा प्रेम सिद्ध बनता है," उसने लिखा, "ताकि हम न्याय के दिन के लिए साहसी हो सकें: क्योंकी जैसा वह है, हम भी इस संसार में ऐसी ही हैं। प्रेम में कोई भी नहीं है; परन्तु सिद्ध भी डर को निकाल देता है"। और यही साहस उसमें है, कि, यदि हम उसकी ईच्छा के अनुसार मांगें, वह हमारी सुनता है: और यदि हम जाने कि वह हमारी सुनता है...हम जानते हैं कि हमारे पास निवेदन हैं जो हम उसके सामने रखना चाहते हैं।

(7) पौलुस के समान, स्वंय के बारे में हमारी क्या गवाही होनी चाहिये ताकि मसीह का प्रेम हममें और हममें से दूसरों में बहने पाए?

मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित हैऔर मैं शरीर में : अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिये अपने आप को दे दिया। (गलातियों 2:20)

हृदय में मसीह के प्रेम की आवश्यकता है। मैं को क्रूस पर चढ़ाना अनिवार्य है। जब स्वंय मसीह के साथ मिल जाता है, सच्चा प्रेम अपने आप बाहर आता है। यह कोई भावना या आवेग नहीं, परन्तु पवित्र ईच्छा से लिया गया निर्णय। यह भावना नहीं, परन्तु सम्पूर्ण हृदय, प्राण और आत्मा के रूपांतरण से बनता है, जो कि स्वंय के लिए मरा हुआ और परमेश्वर के लिए जीवित हो। हमारा उद्धारकर्ता हमें स्वंय को समर्पित करने के लिए कहता है। स्वंय को उसे समर्पित करना उसकी मांग है, उसे परमेश्वर को उसकी ईच्छा के अनुसार चलाने के लिए देने के लिए। जब तक इस समर्पण के बिंदु तक आयें, हम प्रसन्नता, उपयोगिता और सफलता से कहीं भी कार्य नहीं करेगें

सच्ची पवित्रता विश्वासी को मसीह और एक-दूसरे के साथ एक करती है कोमल सहानुभूति के बंधन में। यह एकता निरंतर हृदय में मसीह समान प्रेम की धारा को प्रवाहित करती है, जो एक-दूसरे के लिए प्रेम का प्रवाह करता है।

(8) जब हम स्वंय के प्रति मरने का चुनाव करते हैं, तब कौन हमारे हृदयों में वास करता है ताकि हम दूसरों से प्रेम कर पायें?

मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित हैऔर मैं शरीर में : अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिये अपने आप को दे दिया। (गलातियों 2:20)

प्रेम भक्ति का आधार है। कोई भी व्यवसाय, कोई भी मनुष्य परमेश्वर के प्रति सच्चा प्रेम नहीं रख सकता जब तक वह अपने भाइयों से निस्वार्थ प्रेम करे। परन्तु हम कभी भी इस आत्मा के द्वारा नहीं भर सकते दूसरों से प्रेम करने के प्रयत्न करने के द्वारा। जब स्वंय मसीह में डूब जाता है, प्रेम अपने आप बहने लगता है।

मसीही चरित्र की परिपूर्णता दिखने लगती है जब दूसरों की सहायता करने या आशीष देना निरंतर भीतर से बहने लगता है- जब स्वर्ग की चमक हृदय को भर देती है और चेहरे पर दिखने लगती है।

(9) यदि हम विश्वास के द्वारा आत्मा के अनुसार चलते हैं, बहुतों के बीच कौन-सा फल है जो हम नाश होने वाली आत्माओं के प्रति दिखायेगें?
पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, और कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं। (गलातियों 5:22-23)

परमेश्वर एक हाथ से निमंत्रित करता है, विश्वास, उसकी बाहों में लेता है और दूसरी बाह के द्वारा, प्रेम, नाश होने वाली आत्माओं तक पहुचता है।मसीह मार्ग, सत्य और जीवन है। उसका अनुसरण करें। शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलें। उसकी राह पर चलें। यह परमेश्वर की ईच्छा है, तुम्हारा पवित्रीकरण भी। जो कार्य तुम्हे करना है उसकी ईच्छा के अनुसार चलना ताकि वह अपनी महिमा के लिए तुम्हारे जीवन के लिए संभाल सके। यदि आप अपने लिए परिश्रम करते हो, उससे कोई लाभ नही। दूसरों को आशीषित, करने का अर्थ है, अपने हित का कम ध्यान रखना और सब कुछ उसको दे देना, यह ग्रहणयोग्य होगा और उसके महान अनुग्रह के द्वारा वापस किया जाएगा।

(10) जब प्रेम का आत्मा हमें दिया जाता है, किसके साथ मसीह समान विधियां लोगों तक पहुचने में सफल होंगे?

निदान, सब के सब एक मन और कृपामय और भाईचारे की प्रीति रखने वाले, और करूणामय, और नम्र बनो। (1 पतरस 3:8)
केवल मसीह के माध्यम लोगों तक पहुंचने में सच्ची सफलता प्रदान करेगें। उद्धारकर्ता मनुष्यों के साथ उनकी भलाई के लिए मिला-जुला। उसने उनके प्रति सहानुभूति दिखाई, उनकी जरूरतों को पूरा किया, और उनका विश्वास जीता। तब उन्हें निमंत्रण दिया, "मेरे पीछे हो लो"।

व्यक्तिगत प्रयत्नों के द्वारा लोगों की निकटता में आने की आवश्यकता है। यदि प्रचार के लिए कम समय दिया जाता, और ज्यादा समय व्यक्तिगत सेवकाई में, तब बड़े परिणाम दिखाई देगें। गरीबों को छुड़ाया जाना है, बीमारों की देखभाल करनी है, दुःख से भरे लोगों को शांति दी जानी है और और शोकसंतप्त को शांति,

अज्ञान को शिक्षा, और कम अपरिपक्व को सलाह। हमें शोक करने वालों के साथ शोक और आनंद करने वालों के साथ आनंद। अनुनय की सामर्थ के साथ मिलकर, प्रार्थना की सामर्थ, परमेश्वर का प्रेम और सामर्थ, यह कार्य बिना फल, के नहीं हो सकता या होगा।

(11) हम कौन-सा महान और कीमती वायदा दावा कर सकते हैं ताकि हम दूसरों से शुद्ध प्रेम के साथ प्रेम कर सकते हैं जैसे मसीह ने किया?

जिन के द्वारा उस ने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं दी हैंताकि इन के द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूट कर जो : संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो जाओ। (2 पतरस 1:4)

एक-दूसरे के लिए प्रेम...यदि यही प्रेम उत्पन्न हो, सिमित सिमित के साथ मिल जाएगा, और असीमित के साथ केन्द्रित होगा। मानवता मानवता के साथ मिल जाएगी, और सभी हृदय के साथ असीमित प्रेम से जुड़ जाएगें। एक-दूसरे के लिए शुद्ध प्रेम पवित्र है। इस महान प्रेम में एक-दूसरे के लिए मसीही प्रेम- सबसे उत्तम, निरंतर, अत्यधिक नम्रतापूर्ण, अत्यधिक निस्वार्थ, दिखने से भी ज्यादा-मसीही कोमलता, परोपकारिता, और नम्रता को बचाकर रखता है, और परमेश्वर के आलिंगन में मानवीय भाईचारे को विशाल बनाता है, उस गौरव को समझते हुए जिसके द्वारा परमेश्वर ने मनुष्य के अधिकारों को निवेश किया है। यही गौरव मसीहियों को परमेश्वर की महिमा और आदर के लिए विकसित करना चाहिये।

जैसे मसीह ने प्रेम किया वैसे प्रेम करने का अर्थ है निस्वार्थता को हर समय और जगह प्रकट करना, मीठे शब्दों और आकर्षक देखने के द्वारा। इसके लिए उनको कीमत चुकानी पड़ती है जो उन्हें कुछ देते, परन्तु वे ऐसी सुगंध पीछे छोड़ देते हैं जो मन को घेर लेती है। उनके प्रभाव को कम नहीं आंका जा सकता। न केवल वे प्राप्त करने वाले के लिए आशीष हैं, परन्तु देने वाले के लिए भी; क्योंकी वे उन पर प्रतिक्रिया करते हैं। सच्चा प्रेम स्वर्गीय मूल का कीमती गुण है, जो उसकी सुगंध को उसी अनुपात में बढ़ाता है जिस अनुपात से उसे बांटा जाता है।

मसीह का प्रेम गहरा और सच्चा है, कभी बहना न बंद होने वाली नदी के समान है उनके लिए जो उसे ग्रहण करते हैं। उसके प्रेम में कोई स्वार्थ नहीं। यदि यह स्वर्ग में पैदा हुआ प्रेम हमारे हृदय में सर्वदा बने रहने वाला सिद्धांत है, वह स्वंय को दूसरों पर प्रकट

करेगा, न केवल कुछ विशेष रिश्तों पर जो हमारे लिए विशेष हैं, परन्तु उन सभी के लिए जिनके हम सम्पर्क में आते हैं। यह हमें ध्यान देने वाली क्रियाओं में अगुवाई करेगा, छूट के लिए, दयालुता के कार्य करने के लिए, कोमलता, प्रोत्साहन और सत्य के वचन बोलने के लिए। यह हमें उनके साथ सहानूभूति दिखाने के लिए अगुवाई करेगा जिनके हृदय सहानूभूति के भूखे हैं।

मैं मानता हूँ कि धन की सामर्थ भ्रष्ट बना सकती है; दबाव की सामर्थ चोट पहुचा सकती है, परन्तु प्रेम की सामर्थ के द्वारा ही भलाई में बदल सकती है। मै अपने जीवन में यह सामर्थ चाहता हूँ।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मै समझता हूँ कि प्रेम आवेग नहीं है, परन्तु एक ईश्वरीय सिद्धांत जो केवल वहीं विध्यमान हो सकता है जहां मसीह का शासन हो। अपरिवर्तित मन न ही इसे पैदा कर सकते और न की इसे बना सकते हैं। मैं चाहता हूँ सर्वोच्चता में मुझे पर शासन करे।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं चाहता हूँ कि मसीह का प्रेम मुझ पर शासन करे और मैं क्रूस पर चढ़ाया जाये। मैं शुद्ध ईच्छा के लिये प्रार्थना करता हूँ ताकि मेरी ईच्छा मसीह में डूबने पाए और सच्चा प्रेम अपने आप बहे।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं प्रतिदिन के विश्वास के लिए प्रार्थना करता हूँ ताकि मै परमेश्वर की सामर्थी भुजा को पकड़ सकूं एक हाथ विश्वास के साथ; और दूसरे हाथ के साथ प्रेम के द्वारा नाश होती हुई आत्माओं तक पहुंच सकूं।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

पाठ 16

मसीह का नमूना कि कैसे प्रेम करें

(1) हमें आदर्श के रूप में किसकी ओर ताकना है कि दूसरों से कैसे प्रेम करें और उन्हें मसीह की ओर कैसे आकर्षित करें?

और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठा कर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो। (1 पतरस 2:21)

यीशु, गुरु, इसलिए दरिद्र बना ताकि हम अनंत बहुतायत को प्राप्त कर सकें; वह मरा ताकि हम जीवन, अविनाशी जीवन पा सकें। क्या हम उसके आदर्श का अनुसरण नहीं करना चाहिये, और दूसरों के लिए भी वही करना चाहिये जहां तक संभव हो जो उसने हमारे लिए किया? ऐसा करने के द्वारा, हमारा अपना चरित्र अनुशासित होगा और उसमें सुधार आएगा, हमारा विश्वास और दृढ़ होगा, हमारा उत्साह और निरंतर और जोशपूर्ण होगा, परमेश्वर के लिए हमारा प्रेम और सत्य और आत्माओं के लिए हमारा प्रेम जिनके लिए मसीह मरा बढ़ेगा।यही समय-समय पर साधारण पुरुषों और स्त्रियों के द्वारा भी किया गया है, न की बहुत ज्ञानवान, कुशल या धनी, परन्तु सत्य और विश्वासयोग्य जो अपने कार्य को बहुत ही

साधारण तरीके से करते हैं। परन्तु प्रत्येक कार्य सम्पूर्णता में और निरंतरता में मसीह कर केन्द्रित होना चाहिये बुद्धि और बल के लिए।

(2) हमारी बातचीत और निर्देश के विषय में मसीह ने आदर्श और निर्देश के द्वारा कौन-सा नमूना हमारे लिए पेश किया?

मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, कि एक दूसरे से प्रेम रखो : जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दुसरे से प्रेम रखो। (यूहन्ना 13:34)

मसीह ने अपने प्रथम चेलों को एक-दूसरे से प्रेम का आमन्त्रण दिया था जैसे उसने उनसे प्रेम किया। इसी प्रकार उन्हें संसार को यह गवाही देनी थी कि मसीह भीतर से रचा गया था, महिमा की आशा। "मैं तुम्हे एक नई आज्ञा देता हूँ," उसने कहा था, "कि तुम एक-दूसरे से प्रेम करो; जैसे मैंने तुम्हे प्रेम किया"। यूहन्ना 13:34। जब यीशु ने ये बाते कहीं, चेले इन्हें समझ नही पाए; परन्तु जब उन्होंने यीशु की पीड़ा को देखा, उसके क्रूस पर चढ़ाये जाने और पुनरुत्थान के बाद, और स्वर्गारोहण के बाद, और जब पिन्तेकुस्त के दिन पवित्रआत्मा उन पर आया, तब वे स्पष्ट रूप से परमेश्वर के प्रेम को समझ पाए और उस प्रेम के स्वभाव को जो उन्हे एक-दूसरे से करना था। तब यूहन्ना अपने संगी चेलों से कह सका: "इस प्रकार हम परमेश्वर के प्रेम को जानते हैं, क्योंकी उसने हमारे लिए जान दी: और हमें भी अपने भाइयों के लिए जान देनी है"।

परमेश्वर उसके कार्य के लिए मनुष्य पर निर्भर नहीं है। वह स्वर्गदूतों को उसकी सच्चाई के सन्देशवाहक बना सकता था। उसने अपनी ईच्छा को लिखा होता, जैसे उसने सीने पर्वत पर व्यवस्था की उद्घोषणा की उसकी अपनी आवाज में। परन्तु परोपकारी की आत्मा को हममें भरने के लिए, उसने मनुष्य को अपना कार्य करने के लिए चुना।

दूसरो की भलाई के लिए स्वंय-बलिदान का प्रत्येक कार्य देने वाले के हृदय में उपकार की आत्मा को जागरूक करेगा, उसे संसार के छुड़ाने वाले की निकटता में जोड़ेगा "जो धनी होकर भी, हमारे लिए दरिद्रबना, ताकि हम उसकी गरीबी के द्वारा धनवान बन सकें"। और जैसे हम इस उद्देश्य को अपनी सृष्टि में पूरा करते हैं कि जीवन हमारे लिए आशीषमय बन सकता है। परमेश्वर के द्वारा मनुष्य के लिए सभी दान श्राप साबित होंगे, जब तक वह उनका

उपयोग दूसरों को आशीष देने के लिए न करे, और इस पृथ्वी पर परमेश्वर के उद्देश्यों की बढ़ोतरी के लिए।

(3) मसीह ने क्या कहा जो संसार को उसके साथ हमारे सबंध का महान प्रमाण देगा?

यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो॥ (यूहन्ना 13:35)

महान गुरुओं के चेलें अपने गुरुओं की विशेषताओं की छवि होते हैं। प्रेम यीशु का महान गुण था। यीशु का जीवन प्रेम के व्यवहारिक प्रकटीकरण की क्रिया थी। यीशु के चेलों द्वारा बिलकुल इसी प्रकार के प्रेम का प्रदर्शन उनके साथ उसके सबंध और उनके गुरु के साथ संगती का प्रमाण देगा। व्यवसाय की अपेक्षा प्रेम मसीही की पहचान बताता है।

प्रेम उनके चेलेपन का प्रमाण है। "इसी से संसार जानेगा की तुम मेरे चेले हो," यीशु ने कहा, "यदि तुम एक-दूसरे से प्रेम करो"। जब मनुष्य दबाव या स्वार्थ के साथ नहीं बल्कि प्रेम के साथ जुड़े होते हैं, वे उस प्रभाव की क्रियाशीलता को दिखाते हैं जो सभी प्रभावों से हटकर है। जहां यह एकता मौजूद है, यह उस स्वरूप का प्रमाण है जो मानवता में पुन:स्थापितहो रहा है, कि जीवन का एक नया सिद्धांत प्रत्यारोपित है। इसका अर्थ यह है की ईश्वरीय स्वभाव में बुराई के प्रभावों पर हावी होने की सामर्थ है। और परमेश्वर का अनुग्रह हमारे विरासत में मिले ही पापमय स्वभाव को नियंत्रित करता है।

कलीसिया के प्रभाव को कुछ और नहीं परन्तु प्रेम का अभाव कमजोर बना सकता है। संसार के लोग हमें देखते हैं कि हमारा विश्वास हमारे चरित्र और जीवनों में क्या कर रहा है। वे देखते हैं कि क्या यह सचमुच हमारे हृदयों में पवित्रता का प्रभाव डाल रहा है की नहीं, यदि हम मसीह की समानता में बदलते जाते हैं। वे हमारे जीवन में होने वाले हर एक प्रभाव को खोजते हैं, हमारे कामों की असंगतिहीनता। आइये हम हमारे विश्वास को नीचा आंकने का कोई अवसर न दें।

(4) जब हम हमारे जीवन में असलियत में परमेश्वर के प्रेम का अनुभव करते हैं, तब हम संसार में क्या प्रकट करेंगें?

उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में हैं, बड़ाई करें॥ (मत्ती 5:16)

दूसरों तक वह प्रेम और कोमलता बांटने के द्वारा जो परमेश्वर ने हमें बहुतायत से दी है, हमें अपने प्रकाश को चमकने देना है। हमें ग परमेश्वर के प्रत्येक वरदान को का उत्तम से उत्तम प्रयोग करना है, भलाई को उत्पन्न करने के लिए। हम परमेश्वर को कुछ नहीं दे सकते जो पहले से ही उसका न हो, परन्तु हम पीड़ितों की सहायता कर सकते हैं। हम उन्हें जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं में प्रदान कर सकते हैं, और उसी प्रकार उनसे परमेश्वर के अदभुत प्रेम के विषय में बात कर सकते हैं।

जो परमेश्वर में वास करता है, प्रेम में वास करता है, ज्ञान की खोज के द्वारा, हमारे स्वर्गीय पिता के प्रेम और कोमलता के साथ ज्योति और प्रकाश और आनंद प्रदान करेगा चाहे वे कुछ भी हों। उनके संगियों के लिए उनकी उपस्थिति और उनका प्रभाव फूलों की सुगंध के समान होगा, क्योंकी वे परमेश्वर और स्वर्ग से जुड़े हुए हैं, और स्वर्ग की शुद्धता और उत्तम भलाई उनके द्वारा उन सभी तक पहुंचती है जो उनके प्रभाव के क्षेत्र में हैं। इसमें उनका जगत की ज्योति, और नमक बनना शामिल है। वे सच में जीवन के लिए जीवन की सुगंध हैं, परन्तु मृत्यु के लिए मृत्यु की नहीं। (एमवाईपी 363)

(5) मसीह हममें से प्रत्येक चेले को क्या करने के लिए बुलाता है, परमेश्वर की आत्मा के द्वारा लिखा गया, ताकि संसार को उसकी भलाई और दया दिखाई जा सके?

हमारी पत्री तुम ही हो, जो हमारे हृदयों पर लिखी हुई है, और उसे सब मनुष्य पहिचानते और पढ़ते है। यह प्रगट है, कि तुम मसीह की पत्री हो, जिस को हम ने सेवकों की नाईं लिखा; और जो सियाही से नहीं, परन्तु जीवते परमेश्वर के आत्मा से पत्थर की पटियों पर नहीं, परन्तु हृदय की मांस रूपी पटियों पर लिखी है। (2 कुरन्थियो 3:2-3)

परमेश्वर की संतान मसीह का प्रतिनिधित्व करने के लिया बुलाये गए हैं, परमेश्वर की भलाई और दया को दिखाने वाले। जैसे यीशु ने हमें पिता का सच्चा चरित्र प्रकट किया, वैसे ही हमें संसार को मसीह का प्रेम प्रकट करना है जो उसका कोमल, दया वाला प्रेम नहीं जानता। " जैसे तू ने जगत में मुझे भेजा, वैसे ही मैं ने भी उन्हें जगत में भेजा"। "मैं उन में और तू मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएं, और जगत जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही उन से प्रेम रखा"। यूहन्ना 17:18,23। प्रेरित पौलुस मसीह के चेलों से कहता है, "हमारी पत्री तुम ही हो,

जो हमारे हृदयों पर लिखी हुई है," "और उसे सब मनुष्य पहिचानते और पढ़ते है"। 2 कुरन्थियो 3:2

उसकी सभी संतानों में, यीशु संसार को पत्र भेजता है। यदि आप मसीह का अनुसरण करने वाले हैं, वह आपके परिवार, गावं, गली, जहां आप रहते हैं पत्र भेजता है। यीशु, तुम्हारे भीतर वास करते हुए, अपने मित्रों के हृदयों से बातचीत करना चाहता है। शायद वे बाइबल नहीं पढ़ते, या उस आवाज को नहीं सुनते जो उनसे पन्नों में बोलती है; वे उसके कार्यों के द्वारा परमेश्वर के प्रेम को नहीं देखते। परन्तु यदि आप यीशु का प्रतिनिधित्व करते हैं, हो सकता है तुम्हारे द्वारा वे उसकी भलाई को समझ पाएं और उससे प्रेम और उसकी सेवा करने लगें।

(6) उस विश्वास की क्या दशा है जो मसीह के सामन दूसरों के प्रति प्रेम के कार्यों के द्वारा प्रकट नहीं होता

वैसे ही विश्वास भी, यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है। (याकूब 2:17)

यह समझना सबसे घातक भ्रांति है कि एक मनुष्य अपने भाइयों से मसीह के समान प्रेम किये बिना, अंनत जीवन में विश्वास कर सकता है। जो परमेश्वर और अपने पड़ोसी से प्रेम करता है उसमें ज्योति और प्रेम नहीं। परमेश्वर उसमें है और उसके चारो ओर है। मसीही उन सभी से जो उनके चारों ओर है कीमती लोग समझकर उनसे प्रेम करते हैं जिनके लिए मसीह मरा। प्रेमहीन मसीही होने जैसा कुछ है ही नहीं; क्योंकी "परमेश्वर प्रेम है," और "इसी से हम जानते हैं कि हम उसे जानते हैं, यदि हम उसकी आज्ञाओं को मानें। वह जो कहता है, मै उसे जानता हूँ, और उसकी आज्ञायें नहीं मानता, वह झूठा है, और उसमें सत्य नहीं"।

"यह मेरी आज्ञा है, कि तुम आपस में एक-दूसरे से प्रेम करो, जैसे मैंने तुमसे प्रेम किया"। यही फल परमेश्वर को वापस दिया जाना चाहिये।

(7) कौन-से दो तरीको से परमेश्वर उन पर आनन्दित होगा जो मसीह की आदर्श बनाकर प्रेम को बने रहने वाले सिद्धांत के रूप में अपने मनों में रखते हैं?

तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे बीच में है, वह उद्धार करने में पराक्रमी है; वह तेरे कारण आनन्द से मगन होगा, वह अपने

प्रेम के मारे चुपका रहेगा; फिर ऊंचे स्वर से गाता हुआ तेरे कारण मगन होगा॥ (सपन्याह 3:17)

परमेश्वर किसी को भी स्वर्ग नहीं लेकर जाएगा परन्तु उन्हें जो पहले मसीह में परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा संत बनाये गए हैं, वे जिनमें वह मसीह के नमूने को देख सकता है। जब मन में मसीह का प्रेम बने रहने वाला सिद्धांत बन जाता है, तब हम इस बात को पहचान पाएगें की हम मसीह के साथ परमेश्वर में छिपे हुए हैं।

केवल वही जो, प्रार्थना और प्रेम और बाट जोहने के द्वारा, मसीह के कार्य को करते हैं, परमेश्वर उन्ही पर आनंद से गा सकता है। जितनी जल्दी परमेश्वर उसके लोगों में उसके प्रिय पुत्र का चरित्र देखता है, उतना ही वह उनमें सतुष्ट और प्रसन्न होता है। परमेश्वर स्वंय और उसके स्वर्गदूत भी गीत गाकर उनके लिए आनंद मनाते हैं।

(8) ***इस पद के अंत में कौन-सा प्रश्न पूछा गया कि यह समझने के लिए घातक वर्णन है कि एक मनुष्य अंनत जीवन के लिए विश्वास पा सकता है, बिना अपने भाइयों के लिए मसीह समान प्रेम किये बिना?***

पर जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देख कर उस पर तरस न खाना चाहे, तो उस में परमेश्वर का प्रेम क्योंकर बना रह सकता है? (1 यूहन्ना 3:17)

सच्ची पवित्रता विश्वासियों को मसीह और एक-दूसरे के साथ कोमल सहानुभूति में बांधती है। यह एकता हृदयों में निरंतर मसीह के समान प्रेम को बहने में मदद करती है, जो दोबारा एक-दूसरे के प्रति प्रेम में बहती है।

वे गुण जो यह पाने के लिए सभी में होने चाहिये जो मसीह के चरित्र की परिपूर्णता में थे- उसका प्रेम, उसका धीरज, उसकी निस्वार्थता, और उसकी भलाई। ये गुण दयालु हृदय से दयालु कार्य करने के द्वारा आते हैं।

(9) मसीह अपने प्रेम करने वालों को क्या उदाहरण, आदर्श और आज्ञा देता है आत्मिक्त रूप से खोये हुओं को ढूंढने के लिए?

यीशु ने उन के पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रआत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।
और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओऔर देखो :, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं। (मत्ती 28:18-20)
यीशु ने बड़ी दया के साथ संसार की पापमय अवस्था को देखा। उसने मनुष्यता को स्वंय के ऊपर ले लिया ताकि वह मानवता को स्पर्श करे और ऊंचा उठा सके। वह खोये हुओं को ढूंढने के लिए आया। वह मानव पीड़ा और दुःख की तह तक पंहुचा, मनुष्य को उसी अवस्था में लेने के लिए जैसे उसे पाया, एक मनुष्य जो भ्रष्टाचार, चाल से अपमानित, पाप में गिरा हुआ, और शैतान के मार्गों के साथ एक, और उसको अपने सिंहासन के पास बैठाने के लिए ऊँचा उठाना। परन्तु उसके विषय में ऐसा लिखा है कि "वह चूकेगा नहीं या निरुत्साहित न होगा," और वह स्वंय-इन्कारऔर स्वंय बलिदान तक पहुचा, हमारे लिए यह आदर्श रखने के लिए कि हम भी उसके पदचिह्नों पर चलें।

हमें मसीह के समान कार्य करना है, अपनी अभिलाषाओं को दूर करके और शैतान के प्रलोभनों से हटकर, आरामदायक न बनकर, स्वार्थ को घृणा करने के द्वारा, ताकि हम खोये हुओं को ढूंढने पाए, आत्माओं को अन्धकार से ज्योति की ओर लेकर आयें, परमेश्वर के प्रेम के प्रकाश में। हमें सारी जातियों को सुसमाचार सुनाने की महान आज्ञा दी गई है। हमें यह खोई हुई आत्माओं को यह आनंद का समाचार सुनाना है कि मसीह पापों को क्षमा कर सकता है, स्वभाव को बदल सकता है, पापी को उसकी सही मनोदशा में ला सकता है, और उसे सिखा सकता और तैयार कर सकता है परमेश्वर के साथ मिलकर कार्य करने के लिए।

(10) जब हम मसीह में बने रहते हैं, तब वह पवित्रआत्मा के द्वारा, हमें कैसी सामर्थ प्रदान करेगा ताकि हम दूसरों के लिए प्रेम में परिश्रम करेगें?

सो कोई यह कहता है, कि मैं उस में बना रहता हूं, उसे चाहिए कि आप भी वैसा ही चले जैसा वह चलता था। (1 यूहन्ना 2:6

मसीहियों का आचार व्यवहार उनके परमेश्वर के समान होना चाहिए। उसने मानदंडों को बनाया, और हमारे लिए छोड़ दिया कि हम उनके अनुसार चलेंगे की नहीं। हमारा परमेश्वर उद्धारकर्ता

अपना शासन, महिमा और वैभव को छोड़कर, हमें ढूंढने के लिए आया, ताकि वह हमें बर्बादी से बचाकर अपने समान बना सके। उसने स्वंय को नम्र बनाया और मनुष्य का स्वभाव ले लिया ताकि हम उससे सीख सकें और, उसकी परोपकारिता और स्वंय-इन्कार के जीवन की नकल कर सकें, कदम-कदम करके स्वर्ग की ओर बढ़ सकें। आप उसी नक़ल की बराबरी नहीं कर सकते; परन्तु आप उसकी परछाई बन सकते हैं और, अपनी योग्यता के द्वारा, वैसे ही कर सकते हैं। "तू अपने परमेश्वर यहोवा से, अपने सम्पूर्ण मन, सम्पूर्ण प्राण, और सम्पूर्ण बल से प्रेम कर; और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम कर"। ऐसा प्रेम तुम्हारे हृदयों में बसना चाहिये, ताकि तुम इस दुनिया के कीमती खजाने और सम्मान को देने के लिए तैयार होगें यदि उसके द्वारा एक भी आत्मा को परमेश्वर की सेवा के लिए देने के लिए प्रभावित कर सको।

जैसे मैं पवित्रशास्त्र में पढ़ता हूँ मैं आश्चर्यचकित हूँ कि मसीह मेरा स्वामी, मेरा रचयिता दरिद्र बना ताकि मैं अनंत समपन्नता को पा सकूं; वह मरा ताकि मै जीवन पा सकूं; कि वह मुझे सौभाग्य और आदर्श का अनुशासन, विश्वास देता है उसके राज्य में कीमती आत्माओं को बचाने के लिए।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं उस महान गुरु के प्रेम का आदर्श अनुसरण करने का चुनाव करता हूँ, और उसके बच्चों को यह प्रदर्शित करना चाहता हूँ कि व्यवहार में क्रमिक विश्वास कैसा दिखता है। मै इस संसार के लिए उसका प्रेम से लिखा पत्र और संसार को दिया गया पत्र बनना चाहता हूँ।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

जैसे मै प्रेम की सामर्थ को पहचानता हूँ और उसके आदर्श को देखता हूँ, यह मेरी दिली ईच्छा है दूसरो से उसके समान प्रेम करना। और मै जानता हूँ यह इसलिए नहीं कि परमेश्वर अपने कार्य के विस्तार के लिए मुझ पर निर्भर है परन्तु इसलिए की यह मेरा सौभाग्य है, परन्तु परोपकारिता की आत्मा मुझमें उत्पन्न करने के लिए।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं प्रतिदिन मसीह में बने रहने का चुनाव करता हूँ कि मैं उसके पवित्र आत्मा से भर जाऊ और इस खोये हुए और नाश होते हुए संसार के लिए उसके हाथ और पैर बन सकूं।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

पाठ 17

प्रेम का अभ्यास

(1) मसीह का कौन-सा वरदान परमेश्वर हममें देखना चाहता है उसके चेलों में और उसकी दृष्टि में कीमती खजाना है?

वरन तुम्हारा छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व, नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्ज़ित रहे, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है। (1 पतरस 3:4)

सबसे सुन्दर वस्त्र जो हमें हमारे मन में धारण करने का आमन्त्रण देता है। किसी भी बाहरी आभूषण की तुलना "नम्र और शांत आत्मा" के मूल्य या प्रेम के साथ नहीं की जा सकती जिसका उसकी दृष्टि में "अधिक मूल्य है"। 1 पतरस 3:4

मसीह का दान, शांत और नम्र आत्मा का आभूषण, अधिकार के साथ उसके द्वारा घोषित किया गया है जो बड़ा दाम होने की गलती नहीं कर सकता। हममें से प्रत्येक को परमेश्वर की खोज करने के द्वारा उसके मूल्य को हमारे द्वारा ढूंढना है। यह सच है लोग हमारा आकलन कर सकते हैं, यदि हम इस आभूषण को पहनें, हम मसीह के साथ अपने चेलेपन के चिहन को डालते हैं। हमारी महान परमेश्वर के द्वारा प्रशंसा की जाती है; क्योंकी जो आभूषण हम पहनते हैं उसकी दृष्टि में उसका बड़ा मूल्य है। इस कीमती हीरे की खोज की जानी चाहिये

(2) जब दूसरों को प्रेम की बात आती है परमेश्वर नहीं चाहता हम होठों से अपने सेवा दें, वह कैसे चाहता है हम प्रेम करें?

हे बालकों, हम वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करें। (1 यूहन्ना 3:18)

"आओ हम शब्दों में ही प्रेम न करें," प्रेरित लिखता है, "परन्तु सत्य और कर्मों के द्वारा"। मसीही चरित्र की परिपूर्णता तब दिखती है जब दूसरों को सहायता करने और आशीष देने का आवेग भीतर से निकले। इसी प्रेम का वातावरण विश्वासी के मन को घेर लेता है उसे जीवन के लिये जीवन बनाता है और परमेश्वर उसके कार्य को आशीषित बनाता है।

परमेश्वर के लिए सर्वोत्तम प्रेम और एक-दूसरे के लिए निस्वार्थ प्रेम-यह उत्तम वरदान है जो हमारी स्वर्गीय पिता हमें दे सकता है। यह प्रेम आवेग नहीं है, परन्तु एक ईश्वरीय सिद्धांत, एक स्थायी सामर्थ। अपवित्र हृदय इसे उत्पन्न नहीं कर सकते। केवल जिन हृदयों में मसीह वास करता है यह पाया जाता है। "हम उस से प्रेम करते हैं क्योंकी उसने पहले हम से प्रेम किया"। वे हृदय जो ईश्वरीय अनुग्रह के द्वारा नवींन बनाये गए हैं, प्रेम क्रिया को नियंत्रित करने वाला सिद्धांत है। यह चरित्र को बदलता है, अभिलाषाओं को नियंत्रित करता है और प्रेम को विशाल बनाता है। मन में संजोया गया यह प्रेम, जीवन को मधुर बना देता है और प्रत्येक जगह पवित्र करने वाले प्रभाव को छोड़ता है।

(3) विवेकपूर्ण आठ व्यवहारिक तरीको का वर्णन करें जिनकी सूची इस पद में है कि हम इस संसार में मसीह के प्रेम की सेवा को आगे ले जा सकते हैं?

जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूं, वह क्या यह नहीं, कि, अन्याय से बनाए हुए दासों, और अन्धेर सहने वालों का जुआ तोड़कर उन को छुड़ा लेना, और, सब जुओं को टूकड़े टूकड़े कर देना? क्या वह यह नहीं है कि अपनी रोटी भूखों को बांट देना, अनाथ और मारे मारे फिरते हुओं को अपने घर ले आना, किसी को नंगा देखकर वस्त्र पहिनाना, और अपने जातिभाइयों से अपने को न छिपाना?(यशायाह 58:6-7)

परमेश्वर चाहता है कि हम सभी निस्वार्थ करने वाले कार्यकर्ता हों। सत्य के प्रत्येक भाग का हमारे प्रतिदिन जीवन में व्यवहारिक लगूकरण है। धन्य है वे जो परमेश्वर के वचन को सुनते और मानते हैं। सुनना पर्याप्त नहीं है; हमें क्रिया करनी है, हमें करना है। यह आज्ञाओं के मानने में ही बड़ा प्रतिफल है। जो अपनी परोपकारिता का व्यवहारिक प्रकटीकरण देते हैं गरीबों, पीड़ितों के प्रति अपने दया और सहानुभूति के कार्यों के द्वारा, न केवल पीड़ितों को छुड़ाते, परन्तु उनकी प्रसन्नता को पूरा करते हैं और देह और प्राण के स्वास्थ्य को सुरक्षा देने के रास्ते में हैं। यशायाह ने इस प्रकार स्पष्टता से विवरण दिया को कार्य परमेश्वर ग्रहण करेगा और अपने लोगों को आशीष देगा वह क्रिया करने के द्वारा।

(4) यदि हम प्रेम और मसीह की आत्मा से भर जाएं, कौन-से प्रेम की विशेषताएं हमारे दूसरों के साथ सबंध में दिखाई देगी?

तो मेरा यह आनन्द पूरा करो कि एक मन रहो और एक ही प्रेम, एक ही चित्त, और एक ही मनसा रखो। (फिलिप्प्यों 2:2)

वे सभी जो मसीह के पीछे चलने का दावा करते हैं वे स्वंय को कम और दूसरों के हित में ज्यादा सोचे। मिलकर रहो, मिलकर रहो! एकता में बल और विजय है; फूट और बटवारे में कमजोरी और पराजय है। यह शब्द मुझे स्वर्ग से बोले गए हैं...सभी मसीह की प्रार्थना का उत्तर खोजें: "ताकि वे सब एक हों; जैसे पिता मुझ में है, और मै उसमें"। वाह! क्या एकता है! "इसी के द्वारा लोग जानेगें तुम मेरे चेले हो, यदि तुम एक-दूसरे से प्रेम करो"।

(5) जब हम मसीह के प्रेम में बने रहते हैं और उसका प्रेम हमारे द्वारा बहता है, हम कैसे दूसरों के साथ व्यवहार करेगें?

प्रेम निष्कपट हो; बुराई से घृणा करो; भलाई मे लगे रहो। भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे पर दया रखो; परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो। (रोमियो 12:9-10)

उद्धारकर्ता का उदाहरण परीक्षा से होकर और पाप से गुजरने वालों के लिये हमारी सेवा का मानदंड होना चाहिये। जो कोमलता और सहनशीलता उसने हमारे प्रति प्रकट की है, हमें दूसरों के प्रति दिखानी है। "जैसे मैंने तुमसे प्रेम किया," वह कहता है "तुम भी एक-दूसरे से प्रेम करो"। यूहन्ना 13:34। यदि मसीह हममें वास करता है, हम उसका निस्वार्थ प्रेम उनके प्रति दिखायेगें जिन्हें हम प्रेम करते हैं। जैसे हम पुरुषों और स्त्रियों को सहायता और सहानुभूति की जरूरत में देखते हैं, हम यह नहीं पूछेगें, "क्या वे योग्य हैं? परन्तु "कैसे मै उन्हें लाभ पहुचा सकता हूँ?"

प्रत्येक शारीरिक आशीष हमें इसलिए मिली है क्योंकी उसने हमारे स्थान पर दाम चुकाया। यदि मनुष्य को छुड़ाने के लिए यह इतना महंगा पड़ा, ताकि वह नाश न हो, परन्तु अनंत जीवन पाए, हमे कैसे आनंदित होना चाहिये कि हम मसीह के साथ उनको बचाने के लिए सह-कर्मी बने जिनके लिए उसने अपना कीमती जीवन दिया! प्रभु यीशु मसीह उनसे प्रेम करता है जिनके लिए उसने महान बलिदान दिया। उसने सभी विश्वास करने वालों के लिए जीवन और अविनाश का प्रकाश लाने के लिए अपना कीमती जीवन दिया। "और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जाने"। {यूहन्ना 17:3}। जो यीशु मसीह को ग्रहण करते हैं वे उसके साथ सहकर्मी हैं, और अपने जीवनकाल को गलत नहीं बनायेगें। वे मसीह के द्वारा बोले गए शब्दों को सुनेगें। परमेश्वर उनकी अगुवाई करेगा और वे परमेश्वर की मांगों को पूरा करने में बहुत बुद्धिमान बनेगें, और उस प्रेम और अनुग्रह को प्रकट करेगें जो मसीह के जीवन में प्रकट हुआ उनके साथ जिनके वह संपर्क में आया।

(6) जब हम मसीह के साथ वैसे एक होते हैं जैसे पिता मसीह के साथ, तब यह चेलापन कैसे संसार पर प्रकट होगा?

यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो॥ (यूहन्ना 13:35)

मसीह और उसके लोगों के बीच की एकता जीवित, सत्य और अचूक, ऐसी एकता को प्रतिबिम्बित करनी चाहिये जैसे पिता और

पुत्र के बीच मौजूद होती है। यह एकता पवित्रआत्मा में बने रहना का फल होती है। सभी सच्चे परमेश्वर के संतान संसार को मसीह के साथ और अपने भाइयों के साथ इस एकता को प्रकट करेगें। जिनके हृदय में मसीह वास करता है वे भाईचारे के प्रेम के फल में बने रहेगें। वे इस बात को पहचानेगें कि मसीह की देह के सदस्य होने के नाते उन्हें निरंतर प्रेम और सहभागिता को उत्पन्न करने और संजोने की शपथ दी गई है, आत्मा, शब्दों और क्रिया में।

परमेश्वर की संतान होना, राजकीय परिवार के सदस्य होने का अर्थ है उससे कहीं बढ़कर है जितना की लोग समझते हैं। जो परमेश्वर के द्वारा उसके बच्चे कहे गए हैं वे एक-दूसरे के प्रति मसीह समान प्रेम दिखाते हैं। वे केवल एक ही उद्देश्य के लिए जीते और कार्य करते हैं-संसार को मसीह का सही रूप से प्रतिनिधित्व करना। उनके प्रेम और एकता के द्वारा वे संसार को दिखायेगें कि उनमें ईश्वरीय विशेषताएं हैं। प्रेम और स्वंय-इन्कारके द्वारा, वे उनके चारों ओर रहने वाले लोगों को बताएगें कि वे उद्धारकर्ता के चेले हैं। "इसी के द्वारा लोग जानेगें कि तुम मेरे चेले हो, यदि तुम एक-दूसरे के प्रेम करो"।

(7) किसके द्वारा इसकी तुलना की जा सकती है जब हम, मसीह के समान प्रेम के द्वारा, दयालुता के कार्य दिखाते हैं और दूसरों को प्रोत्साहन के शब्द बोलते हैं?

जैसे चान्दी की टोकरियों में सोनहले सेब हों वैसे ही ठीक समय पर कहा हुआ वचन होता है। (नीतिवचन 25:11)

जैसे मसीह ने प्रेम किया वैसे प्रेम करने का अर्थ है निस्वार्थता को हर समय और जगह प्रकट करना, मीठे शब्दों और आकर्षक देखने के द्वारा। इसके लिए उनको कीमत चुकानी पड़ती है जो उन्हें कुछ देते, परन्तु वे ऐसी सुगंध पीछे छोड़ देते हैं जो मन को घेर लेती है। उनके प्रभाव को कम नहीं आंका जा सकता। न केवल वे प्राप्त करने वाले के लिए आशीष हैं, परन्तु देने वाले के लिए भी; क्योंकी वे उन पर प्रतिक्रिया करते हैं। सच्चा प्रेम स्वर्गीय मूल का कीमती गुण है, जो उसकी सुगंध को उसी अनुपात में बढ़ाता है जिस अनुपात से उसे बांटा जाता है।

मसीह का प्रेम गहरा और सच्चा है, कभी बहना न बंद होने वाली नदी के समान है उनके लिए जो उसे ग्रहण करते हैं। उसके प्रेम में कोई स्वार्थ नहीं। यदि यह स्वर्ग में पैदा हुआ प्रेम हमारे हृदय में सर्वदा बने रहने वाला सिद्धांत है, वह स्वंय को दूसरों पर प्रकट करेगा, न केवल कुछ विशेष रिश्तों पर जो हमारे लिए विशेष हैं,

परन्तु उन सभी के लिए जिनके हम सम्पर्क में आते हैं। यह हमें ध्यान देने वाली क्रियाओं में अगुवाई करेगा, छूट के लिए, दयालुता के कार्य करने के लिए, कोमलता, प्रोत्साहन और सत्य के वचन बोलने के लिए। यह हमें उनके साथ सहानूभूति दिखाने के लिए अगुवाई करेगा जिनके हृदय सहानूभूति के भूखे हैं।

(8) विवेकपूर्ण प्रेम की सोलह विशेषताओं की सूची दें और जो इसलिए परमेश्वर की जो इन पदों में पाई जाती है?

प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं। वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता।कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है। प्रेम कभी टलता नहीं; भविष्यद्वाणियां हों, तो समाप्त हो जाएंगी, भाषाएं हो तो जाती रहेंगी; ज्ञान हो, तो मिट जाएगा।(1 कुरन्थियो 13:4-8)

यदि मनुष्य अपनी बाजुओं से व्यायाम न करे, वे कमजोर हो जाएंगी और उसकी मासपेशियों को ताकत में कमी आ जाएगी। जब तक एक मसीही अपनी आत्मिक ताकतों का अभ्यास न करे, उसमें चरित्र को मजबूत बनाने की ताकत नहीं आती, न ही नैतिक ताकत। प्रेम बहुत ही कीमती पौधा है और उसे बढ़ने पर विकसित करना जरूरी है। प्रेम के कीमती पौधे के साथ कोमलता से व्यवहार होना जरूरी है (अभ्यास), और यह मजबूत और फलदायक बनेगा, सम्पूर्ण चरित्र को अभिव्यक्त करेगा। मसीह समान स्वभाव कठोर और स्वार्थी न होगा और उनके मनों को कष्ट न देगा जो शैतान के द्वारा परीक्षा से होकर गुजरते हैं। यह परीक्षा से होकर गुजरने वालों के मनो तक जाएगा और सोने के समान उन्हें निखरेगा और सारे खोट को दूर कर देगा। यही अभ्यास परमेश्वर ने सभी के लिए रखा है। मसीह की इस पाठशाला में सभी सीख सकते हैं, गुरु और शिष्य दोनों, धीरजवन्त, भले और उदार बनने के लिए। आपको सम्पूर्ण विश्वास के साथ उत्सुक प्रार्थनाओं के द्वारा परमेश्वर को खोजना होगा, और परमेश्वर का बनानेवाला हाथ आपके चरित्र को अपने स्वरूप को बदल देगा।

हम हर समय परमेश्वर के महान अनुग्रह की जरूरत है, तब हमारा महान, व्यवहारिक अनुभव होगा, क्योंकी परमेश्वर प्रेम है। वह जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है। जिन्हें प्रेम की बहुत ज्यादा आवश्यकता है उन्हें प्रेम करें। अभागे, जिनके

असहमत स्वभाव हैं उन्हें हमारे प्रेम, नाजुकता, और दया की जरूरत है। जो हमारे धीरज को देखते हैं उन्हें प्रेम की सबसे अधिक जरूरत है।

(9) जब परमेश्वर का ईश्वरीय प्रेम हमारे दिलों में वास करता है, तब कौन-सी मसीह समान विशेषता वह हम से नहीं रख छोड़ेगा उनसे जिन्हें उसकी जरूरत है?

पर जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देख कर उस पर तरस न खाना चाहे, तो उस में परमेश्वर का प्रेम क्योंकर बना रह सकता है? (1 यूहन्ना 3:17)

मसीह का जीवन परमेश्वर के प्रेम के ईश्वरीय सन्देश से प्रभारित था, और वह यही प्रेम दूसरो को बहुतायत में बाटना चाहता था। दया उसके चेहरे से निकलती थी, और उसका चरित्र अनुग्रह, मनुष्यता, प्रेम और सत्य से भरा था। उसकी कलीसियाई सेना के प्रत्येक सदस्य को भी यही दिखाना चाहिये, यदि वह कलीसिया की विजय में भाग लेगा। मसीह का प्रेम बहुत विशाल है, महिमा से परिपूर्ण, कि उसकी तुलना में बड़े से बड़े और प्रख्यात मनुष्य भी तुच्छ हैं। जब हम उसकी विचारधारा अपनाते हैं, हम चिल्लाते हैं, वाह परमेश्वर के प्रेम की बहुतायत की गहराई जो परमेश्वर ने मनुष्यों पर अपने इकलौते पुत्र के दान के द्वारा दी।

ईश्वरीय प्रेम उसकी स्पर्श करने वाली अपील हृदय से करता है जब वह हमें वो कोमल दयालुता दिखाने के लिए कहता है जो मसीह ने हमें दिखाई। जिस मनुष्य में अपने भाई के लिए निस्वार्थ प्रेम है उसमें परमेश्वर के लिए सच्चा प्रेम है। सच्चा मसीही प्राण को जानबूझकर खतरे में नहीं डालेगा और न ही असचेत या बिना देखेभाल किये। वह पापी से स्वंय को अलग नहीं करेगा, अप्रसन्नता में उदासी में डूबने के लिए छोड़कर या शैतान की रण-युद्ध में गिरने के द्वारा।

(10) पवित्र आत्मा के द्वारा हमें कौन-सी आज्ञायें माननी हैं जो हमारे मन को पवित्र बनाता है और हमें हृदय से एक-दूसरे से प्रेम करने में सहायता करता है?

सो जब कि तुम ने भाईचारे की निष्कपट प्रीति के निमित्त सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है, तो तन मन लगा कर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो। (1 पतरस 1:22)

हृदय के अंदर प्रवेश करके, सत्य का खमीर अभिलाषाओं को संचालित करेगा, विचारों को शुद्ध करेगा, और स्वभाव को मधुर बनाएगा। यह मन के वर्गों को जिलाता है और प्राण की ऊर्जा को। यह मसहूस करने और प्रेम करने की क्षमता तो बढ़ाता है।

परमेश्वर का वचन मानवीय परिवार के प्रत्येक सदस्य के ऊपर पवित्र करने वाले प्रभाव को छोड़ता है। सत्य का खमीर फूट की आत्मा को नहीं पैदा करता, लक्ष्य के लिए प्रेम, प्रथम होने की ईच्छा। सत्य, स्वर्गीय प्रेम स्वार्थी और बदलते रहने वाला नहीं है। यह मानवीय बड़ाई पर निर्भर नहीं है। जिस हृदय ने परमेश्वर के अनुग्रह को पाया उसके हृदय से परमेश्वर का प्रेम उनके लिए बहने लगता है जिनके लिए मसीह मरा। मैं का अर्थ पहचान के लिए संघर्ष करना नहीं है। वह उन्हें इसलिए प्रेम नहीं करता क्योंकी वे उससे प्रेम करते हैं या बड़ाई करते हैं , क्योंकी वे उसकी योग्यताओं को कुछ समझते हैं, परन्तु क्योंकी वे मसीह की खरीदी हुई सम्पत्ति है। यदि उसकी मनसाओं, शब्दों या क्रियाओं को गलत समझा जाए, वह बदला नहीं लेता, परन्तु उसके रास्ते के ततत्व का भी पीछा करता है। वह दयालु और विचारशील है, वह उसकी स्वंय की विचारधारा में नम्र है, परन्तु फिर भी आशापूर्ण, सवर्दा परमेश्वर की दया और उसके प्रेम में भरोसा रखने वाला।

मुखाकृति बदल जाती है। हृदय में वास करने वाला मसीह उनके चेहरों पर चमकता है जो उससे प्रेम करते हैं और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं। सत्य वहां लिखा होता है। वहां पर निरंतर नम्रता का प्रकटीकरण होता है मानवीय प्रेम से अधिक।

(11) जब हम अपने विचारों को स्वंय से हटाकर और परमेश्वर की दूसरों से व्यवहारिक प्रेम की आज्ञा मानते हैं, कौन-सी आशीषें हमें मिलती हैं?

क्या वह यह नहीं है कि अपनी रोटी भूखों को बांट देना, अनाथ और मारे मारे फिरते हुओं को अपने घर ले आना, किसी को नंगा देखकर वस्त्र पहिनाना, और अपने जातिभाइयों से अपने को न छिपाना? तब तेरा प्रकाश पौ फटने की नाईं चमकेगा, और तू शीघ्र चंगा हो जाएगा; तेरा धर्म तेरे आगे आगे चलेगा, यहोवा का तेज तेरे पीछे रक्षा करते चलेगा। (यशायाह 58:7-8)

जो इस बात को नहीं समझते कि मन को अनुशासित करना धार्मिक कर्तव्य है आनंदमय विषयों पर ध्यान लगाना दोनों में से एक चरम पर होगा; वे निरंतर मनोरंजन के द्वारा उत्तेजित होगें,

तुच्छ, उपहास या हसने की वार्तालाप के द्वारा, या वे मानसिक संघर्षों और परीक्षाओं के निराश होगें, जो वे सोचते हैं परन्तु बहुत ही कम लोगों ने या उसे समझा या उसे महसूस कर सकते है। परिश्रम, उनकी ताकतों का सबसे स्वस्थ अभ्यास उनके विचारों से उन्हें दूर कर देगा। हाथ और मन दोनों उचित परिश्रम में लगे होने चाहिये; और वे जिनके पास काम है वे भी लाभान्वित होगें...मन स्वंय से दूर होना चहिये; उसकी सामर्थ योजित तरीके से उपयोग होंनी चाहिये दूसरों को खुश और बेहतर बनाने के लिए। "हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है, कि अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उन की सुधि लें, और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें॥ (याकूब 1:27)

उचित परिश्रम, पदवी का सही उपयोग, उनको स्वंय के विषय में सोचने से वंचित रखेगा। हाथ और मन उचित परिश्रम में लगे होने चाहिये, दूसरों के बोझ को हल्का करने के लिए; और जो कार्यरत हैं उन्हें भी सहायता मिलेगी...मन स्वंय से वंचित होना चाहिये; उसकी ताकता का प्रयोग दूसरों को बेहतर और खुश रखने के लिए होना चाहिये। ""हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है, कि अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उन की सुधि लें, और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें"॥ (याकूब 1:27)

जैसे मै मसीह के जीवन के विषय में परमेश्वर के वचन में पढ़ता हूँ, मै "सच्चे और शांत" मन में सुन्दरता और मूल्य देखता हूँ। यह मेरी प्रार्थना है कि यह विशेषताएं परमेश्वर की दृष्टि में कीमती हैं और जीवन में प्रकट होगीं।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मैं परमेश्वर के लिए उत्तम प्रेम का वरदान और दूसरों के लिए निस्वार्थ प्रेम चाहता हूँ जो केवल परमेश्वर दे सकता है। यह मेरे चरित्र को बदलने पाए, मेरे आवेग को नियंत्रित करे, मेरी अभिलाषाओं को नियंत्रित करे, और मेरे स्नेह को उसकी महिमा के लिए भला बनाये।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

यह मेरी प्रार्थना है कि संसार देखने पाए की मैं मसीह का चेला हूँ और परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह के द्वारा मै उसके पीछे चलने का चुनाव करता हूँ और मेरे जीवन से दिखाने का अनुमति देता हूँ।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मै परमेश्वर से मांगता हूँ कि मै विश्वास का खमीर मेरे हृदय में ग्रहण कर सकूं ताकि मेरी अभिलाषाओं को संचालित कर सकूं, मेरे विचारों को शुद्ध कर सकूं और मेरे स्वभाव में मधुरता लाऊं ताकि इस संसार में उसकी सेवा को आगे ले जाने के लिए मै उसके हाथ और पैर बन सकूं।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

पाठ 18

अपने शत्रुओं से प्रेम करें

(1) हम मसीही होने के नाते, कैसे तीन शब्दों में सारांश निकाल सकते हैं, कि हमें अपने शत्रुओं के साथ व्यवहार करना है?

परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सताने वालों के लिये प्रार्थना करो। (मत्ती 5:44)

जिन्हें प्रेम की बहुत आवश्यकता हैं उन्हें दें। जिनके पास नहीं है, अप्रिय स्वभाव वालों को हमारे प्रेम, दया और कोमलता की जरूरत है। जो हमारे धीरज को परखने की कोशिश करते हैं, हम इस संसार से केवल एक ही बार होकर गुजरते हैं; यदि कोई भी भलाई हम कर सकते हैं , हमें पूरी उत्सुकता, अथक होकर, और उसी आत्मा के साथ करना है जिसके साथ मसीह ने कार्य को किया। वह चूकेगा नहीं और न ही निरुत्साहित होगा। ऊबड़-खाबड़, हट्टी, और उदास स्वभाव वाले वे लोग हैं जिन्हें हमारी सहायता की सबसे ज्यादा आवश्यकता है। कैसे उनकी सहायता की जा सकती है? केवल उस व्यवहार के प्रकटीकरण के द्वारा जो मसीह ने पाप में गिरे मनुष्यों के प्रति दर्शाया। आप कहने को कह सकते हैं, उन्हें उसी प्रकार व्यवहार करो जिसके वे लायक हैं। कैसा होता यदि मसीह ने हमारे साथ इस प्रकार का व्यवहार किया होता? वह, जो अयोग्य था, उसके साथ वैसा व्यवहार किया गया जिसके हम लायक थे।
फिर भी मसीह ने हमारे साथ अनुग्रह और प्रेम के साथ व्यवहार किया ऐसे नहीं जिसके हम लायक नहीं थे, परन्तु जैसे उसने चाहा। कुछ चरित्रों के साथ ऐसे व्यवहार करें, जैसे आप चाहते हैं उनके साथ किया जाए, और वे आपसे दूर हो जायेगें आशा के अंतिम धागे से, आप अपने प्रभाव को खराब कर देगें और उनके प्राण को नाश कर देगें। क्या उसका कोई लाभ होगा? नहीं,सौ बार भी नहीं। इस लोगों को जहां तक संभव हो प्रेम-भरा, सहानुभूति, दयावान हृदय, मसीह समान प्रेम से बहते हुए बातों से बाँध दें जिनकी उन्हें आवश्यकता है, और आप एक मनुष्य को नाश होने से बचा सकेगें और आप अनगिनित पापों को ढाप देगें। यदि अभी तक नहीं किया तो इस प्रेम-प्रिक्रिया की कोशिश करें?

क्या यहां पर देखे गए सिद्धांतों को व्यर्थ नहीं समझा जाता? और इन सिद्धांतो का पालन करने के द्वारा जिन बुराइयों से टला जा सकता हैं वे छोटी नहीं: क्योंकी कई बार सताने वालों के हृदय ईश्वरीय बातों के प्रति अतिसंवेदनशील होते हैं। परमेश्वर की सम्पूर्ण ईच्छा को पूरा करना उत्तम है जैसे वह बताता है। परिणाम उसके हाथ में हैं।

(2) मसीह के द्वारा हमारे शत्रुओं से प्रेम करने के बाद, उसने कौन-से तीन तरीकों का वर्णन किया?

परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सताने वालों के लिये प्रार्थना करो। (मत्ती 5:44)

यह मांग रखने से पहले, उद्धारकर्ता ने अपने चेलों से कहा: "अपने शत्रुओं से प्रेम करो, जो तुम्हे श्राप दें उन्हें आशीष दो"। हमें अपने शत्रुओं से ठीक उसी प्रकार का प्रेम करना है जो मसीह ने अपने शत्रुओं से उनकी जान बचाने के लिए अपना जीवन देने के द्वारा किया। बहुत से कह सकते हैं, "ये तो कठिन आज्ञा है; क्योंकी मैं अपने शत्रुओं से जितना कर सकता हूँ केवल उतना ही करूँगा"। परन्तु आपकी अपनी ईच्छाओं से इस उस सिद्धांत का पालन नहीं किया जा सकता जो हमारे उद्धारकर्ता ने हमें दिया। "भलाई करो," वह कहता है, "उनके साथ जो तुम्हे घृणा करें, और उनके लिए प्रार्थना करो जो तुम्हे तुच्छ जानकर तुम्हार इस्तेमाल करें, और तुहे सताएं; ताकि तुम उस पिता की संतान कहलाओ जो स्वर्ग में है: क्योंकी वह धर्मी और अधर्मी दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मी और अधर्मी दोनों पर मह बरसाता है"। यह पद मसीही सिद्धता के एक चरण का एक उदाहरण है। जब हम परमेश्वर के शत्रु थे, मसीह हमारे लिए मरा। हमें उसके आदर्श का अनुसरण करना है।

हम प्रतिदिन मसीह के महान प्रेम को दिखाएं जैसे उसने अपने शत्रुओं से प्रेम करने के द्वारा दिखाया। यदि हम परमेश्वर के अनुग्रह को दिखाएगें, घृणा से भरी भावनायें सच्चे प्रेम में बदल जायेगीं। बहुत से ह्रदयों को मन परिवर्तन होते दिखेगा उसकी अपेक्षा जो अभी हम देखते हैं। {एमएम 253-254}

(3) जब हम बुराई के बदले भलाई देते हैं और अपने शत्रुओं से भला व्यवहार करते हैं, तो यह उनके विवेक पर क्या प्रभाव डालेगा?

परन्तु यदि तेरा बैरी भूखा हो तो उसे खाना खिला; यदि प्यासा हो, तो उसे पानी पिला; क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा। (रोमियो 12:20)

हम न्याय के दिन तक दयालु के प्रभाव के बारे में नहीं जानते, असंगत के साथ सोचा-समझा गया कार्य, अयोग्य, और अविवेकी। यदि उनके द्वारा उकसाए जाने के द्वारा, और उनके द्वारा अन्याय, उनके साथ ऐसे व्यवहार करें जैसे आप एक निर्दोष व्यक्ति के साथ करेगें, आप विशेष दयालुता के काम दिखाने के लिए दर्द भी सहते हैं; और वे हैरान हो जाते हैं और शर्मिन्दा महसूस करते हैं, और उनके कार्य और उनकी दरिद्रता को बड़ी स्पष्टता से देखते हैं इसकी अपेक्षा की जब आप ने उनके बुरे कामों के लिए उन्हें डाटा हो।

यदि आपने अपने गलत कार्यों को उनके सामने रखा होता, उन्होंने स्वंय को हठीलेपन और अवज्ञा में बंधनयुक्त बनाया होता। परन्तु कोमलता और भलाई के का व्यवहार पाने के लिए वे अपने कामों के बारे में आपकी तुलना में ज्यादा गंभीरता से सोचते हैं। तब... आप सहूलियत भूमि में कब्जा कर लेते हैं; और जब आप उनके मनों के प्रति दया दिखाते हैं, वे सोचते हैं कि आप पाखंडी नहीं हैं, परन्तु आपके प्रत्येक शब्द का वही अर्थ है जो बोलते हैं।

(4) यीशु ने कैसे अपने शत्रुओं के साथ व्यवहार किया जिन्होंने उसके साथ बुरा व्यवहार किया?

वह गाली सुन कर गाली नहीं देता था, और दुख उठा कर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौपता था। (1 पतरस 2:23)

मसीह का सम्पूर्ण पृथ्वी का जीवन इसी सिद्धांत का प्रकटीकरण था। अपने शत्रुओं को जीवन की रोटी लाने के लिए हमारे उद्धारकर्ता ने अपना स्वर्गीय घर छोड़ दिया। यद्यपि पालने से लेकर कब्र तक उस पर चुगली और सताव का ढेर लगाया गया, उन्होंने उससे केवल क्षमा करने वाले प्रेम का प्रकटीकरण ही देखा। यशायाह भविष्यवक्ता के द्वारा वह कहता है, : "मैं ने मारने वालों को अपनी पीठ और गलमोछ नोचने वालों की ओर अपने गाल किए; अपमानित होने और थूकने से मैं ने मुंह न छिपाया"। यशायाह 50:6

(5) परमेश्वर की संतानों का कौन-सा कार्य स्वर्गीय राजचिहन है कि हम परमेश्वर का परिवार हैं?

वरन अपने शत्रुओं से प्रेम रखो, और भलाई करोऔर फिर : पाने की आस न रखकर उधार दो; और तुम्हारे लिये बड़ा फल होगा; और तुम परमप्रधान के सन्तान ठहरोगे, क्योंकि वह उन पर जो धन्यवाद नहीं करते और बुरों पर भी कृपालु है। (लूका 6:35)

परमेश्वर की संतान वे हैं जो उसके स्वभाव में भागीदार हैं। यह संसारिक क्षेणी नहीं है, न ही जन्म, न राष्ट्रीयता, न ही धार्मिक सौभाग्य, जो इस बात कर प्रमाण देते हैं कि हम परमेश्वर के परिवार के सदस्य हैं; यह प्रेम है, वह प्रेम जो मानवता को चुम्बन देता है। वे पापी जिनके हृदय परमेश्वर के निकट नहीं वे भी परमेश्वर की दयालुता के प्रति प्रतिउत्तर देगें; चाहे वे घृणा के बदले घृणा करें। अकृज्ञय के प्रति दयालु होना, और बुरे के साथ, भलाई करना कुछ

और न आशा रखना, यह स्वर्ग का राजचिह्न है, निश्चित चिहन जिसके द्वारा सर्वोत्तम परमेश्वर की संतान अपनी उत्तम अवस्था को प्रकट करते हैं।

(6) जहाँ इर्ष्या, स्वार्थ और घमंड मौजूद हो वहां क्या विध्यमान होता है और मसीह के साथ प्रेम की आत्मा में एक होने के लिए हमारे एक होने की क्षमता में बाधा उत्पन्न करता है?

इसलिये कि जहां डाह और विरोध होता है, वहां बखेड़ा और हर प्रकार का दुष्कर्म भी होता है। (याकूब 3:16)

स्वार्थ और घमंड उस शुद्ध प्रेम में बाधा उत्पन्न करते हैं जो हमें मसीह के आत्मा से एक करते हैं। यदि यह प्रेम सत्य में उत्पन्न हो, सिमित सिमित के साथ मिल जाएगा, और सभी सिमित में केन्द्रित हो जायेगें। मानवता मानवता में मिल जाएगी, और सभी असीमित प्रेम के हृदय से बंध जायेगें। एक-दूसरे के लिए शुद्ध प्रेम पवित्र है। इसी महान कार्य में मसीही एक-दूसरे से प्रेम करते हैं- और उत्तम, निरंतर, ज्यादा नम्र, निस्वार्थ, उसकी अपेक्षा जैसा देखा गया है- यह मसीही कोमलता, मसीही परोपकारिता, और नम्रता को बचा कर रखता है, और मानवीय भाईचारे को परमेश्वर के हाथों में लपेटकर रखता है, उस गौरव के साथ जिसका परमेश्वर ने मनुष्य के अधिकारों में निवेश किया है। यह वैभव मसीहियों को परमेश्वर के सम्मान और महिमा के लिए हमेशा उत्पन्न करना चाहिये।

(7) मसीह ने कैसे साधारण और व्यवहारिक शब्दों में दूसरों से प्रेम करने का सारांश दिया?

इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उन के साथ वैसा ही करो; क्योंकि व्यवस्था और भविष्यद्वक्तओं की शिक्षा यही है॥ (मत्ती 7:12)

“इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उन के साथ वैसा ही करो”। इस कार्यप्रणाली के अच्छे परिणाम निकलेगें। “जिस नाप से तुम दूसरों के लिए नापोगे, उसी नाप से तुम्हारे लिए नापा जाएगा”। यहां दृढ़ मनसाए हैं जो शुद्ध मन से हमे एक-दूसरे से प्रेम करने के लिए विवश करना चाहिये, उत्सुकता के साथ। मसीह हमारा नमूना है। वह भलाई के कार्य करता गया। उसने दूसरों को आशीष देने के लिए जीवन जिया। प्रेम

प्रेम ने उसके सारे कार्यों को सुशोभित और विशाल बनाया। हमें स्वंय के साथ वह नहीं करने के आज्ञा दी गई है जो हम दूसरों से चाहते हैं वे हमारे लिए करें; हमें दूसरों के साथ ऐसा करना है जो हम उन्हें हमारी परिस्थितियों में करने की उपेक्षा करते हैं। जिस माप से हम मापते हैं उसी माप से हमारे लिए मापा जाता है।

शुद्ध प्रेम उसकी क्रियाशीलता में साधारण है, और क्रिया के दूसरे सिद्धांतों से विशिष्ट है। प्रभाव के लिए प्रेम और बड़ाई की अभिलाषा एक उचित-क्रमित जीवन को उत्पन्न कर सकता है और अधिकतर दोषरहित वार्तालाप। स्वंय-आदर किसी भी प्रकार की बुराई के दिखावे से दूर रहने में हमारी अगुवाई कर सकता है। एक स्वार्थी मन उदार कार्यों को दिखा सकता है, सत्य को प्रस्तुत कर सकता है और नम्रता प्रकट कर सकता है और बाहरी रूप से स्नेह, परन्तु फिर भी मनसा अशुद्ध और धोखे से भरी हो सकती है; जो काम ऐसे दिल से निकलते हैं वे जीवन के स्वाद से निराश्रित हो सकते हैं और सच्ची पवित्रता के फल, सिद्ध प्रेम के सिद्धांतों पर निराश्रित। प्रेम को संजोया और उत्पन्न किया जाना चाहिये क्योंकी इसकी प्रभाव ईश्वरीय है।

(8) परमेश्वर के अनुग्रह के पाने वाले और भंडारी, हमें कौन-सी महान आज्ञा दी गई है न केवल अपने शत्रुओं के प्रति परन्तु परमेश्वर के सभी संतानों के प्रति?

जिस को जो वरदान मिला है, वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भण्डारियों की नाईं एक दूसरे की सेवा में लगाए। (1 पतरस 4:10)

जैसे छुड़ाने की योजना का कार्य शुरु और अंत होता है, उसी प्रकार उसे आगे ले जाया जाना चाहिये। वही बलिदान की आत्मा जिसने हमारा उद्धार खरीदा उन सभी के हृदयों में वास करेगी जो स्वर्गीय वरदानों के भागीदार बनते हैं। प्रेरित पतरस कहता है: "जैसे प्रत्येक मनुष्य ने वरदान पाया, वैसे ही दूसरों को बढायें, जैसे परमेश्वर के अनुग्रह के भले भंडारी"। यीशु ने अपने चेलों को भेजते समय यह कहा: सेंतमेत मिला है, सेंतमेत दो"।उसमें जो सम्पूर्ण तरीके से मसीह के साथ है उसमे कुछ भी स्वार्थी नहीं हो सकता। वह जो जीवित जल में से पिता है जो "उस कुए में से जिससे अंनत जीवन निकलता है"। उसमें मसीह का आत्मा ऐसे होगा जैसे मरुस्थल में वर्षा होना, जो सभी के जी में जी ले आता है, और जो नाश होने वाले हैं, उन्हें जीवन के सोते में से पीने के लिए उत्सुक बनाता है।

मसीह के क्रूस का सिद्धांत सभी विश्वास करने वालों को स्वंय की को इन्कार करने की आधीनता में लाता है, दूसरों को प्रकाशमय बनाने, और उनके रास्ते में प्रकाश को बढ़ाने वाले। यदि वे स्वर्ग से जुड़े हैं वे स्वर्गदूतों के साथ मिलकर कार्य में जुट जाएगें।

(9) परमेश्वर के प्रेम की अर्थात उसके बच्चों की कौन-सी पांच विशेषताएं हैं?

निदान, सब के सब एक मन और कृपामय और भाईचारे की प्रीति रखने वाले, और करूणामय, और नम्र बनो। (1 पतरस 3:8)

परमेश्वर का वचन उसके प्रत्येक संतानों के साथ जुड़ जाता है: निदान, सब के सब एक मन और कृपामय और भाईचारे की प्रीति रखने वाले, और करूणामय, और नम्र बनो। (1 पतरस 3:8)। जब तक भक्ति धीरज के साथ न जुड़े तब तक मनुष्य भाईचारे के प्रेम को नहीं प्रकट करेगा। इस संसार में उसकी सेवा, मसीह मनुष्य को परमेश्वर के आत्मा का अनुग्रह दिखाया, जो मनुष्य को रूप देता है बाहरी और भीतरी दोनों रूप से , अपने घमंड को त्यागने के द्वारा स्वंय के हित के विषय में न सोचकर अपने भाई को परमेश्वर की दृष्टि में कीमती समझकर जिसके लिए मसीह ने अपना असीमित दाम चुकाया। जब मनुष्य का परमेश्वर की सम्पति के रूप में मूल्य देखा जाता है तब हम उसके प्रति दयालु और सुशील बनेगें और न कि दूसरों को नीचा जतानेवाले।

यीशु मसीह का धर्म स्वर्गीय नम्रता का ढांचा है और निरंतर कोमलता की भावना को व्यवहारिक रूप से दिखाने में सहायक है। वह जो भक्ति धारण करता है वह अनुग्रह को भी जोड़ लेगा, एक और कदम आगे बढ़ेगा। जितना ऊँचा वह चढ़ता है, उतना ही अधिक परमेश्वर का अनुग्रह उसके जीवन, उसकी भावनाओं और उसके सिद्धांतों में प्रकट होता है। वह निरंतर परमेश्वर की शर्तों की अनुसार कार्य करने में बढ़ता है, और स्वर्ग में मीरास पाने का तरीका केवल मसीह-समान चरित्र है। दया की योजना का पूरा कार्य कठोर को नम्र करना, और जो कुछ ऊबड़-खाबड़ है उसे शुद्ध बनाना। आंतरिक परिवर्तन बाहरी परिवर्तन के द्वारा दिखता है। परमेश्वर के आत्मा के अनुग्रह का कार्य चरित्र के परिवर्तन में रहस्यमय तरीके से कार्य करता है। मसीह का धर्म खट्टा, तुच्छ और कठोर क्रिया को प्रकट नहीं करेगा। विनम्रता बाइबल का गुण है। और इसी गुण का प्रकटीकरण मसीह के जीवन में भी देखने को मिलता है। इस संसार में कभी भी ऐसी विनम्रता नहीं देखी गई जिसका प्रकटीकरण यीशु ने दिया और हम उसके मूल्य को कम नहीं आंक सकते।

(10) हमें किसको अपने से ज्यादा समझना चाहिये और हमें किसके हित की खोज में रहना चाहिये?

विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करो पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो।
हर एक अपनी ही हित की नहीं, वरन दूसरों की हित की भी चिन्ता करे। (फिलिप्पियों 2:3-4)

यदि स्वर्ग का प्रताप मनुष्य के लिए प्रेम को दिखाने के लिए इतना कुछ कर सका, तो मनुष्यों एक-दूसरे को अन्धकार और पीड़ा के गड्ढे से निकालने के लिए कितना तैयार रहना चाहिये! मसीह ने कहा, "एक दूसरे से प्रेम करो, जैसे मैंने तुमसे प्रेम किया;" "इससे बड़ा कोई प्रेम नहीं कि, कोई मनुष्य अपने दोस्तों के लिए अपनी जान दे दे"। जब हम मसीह के साथ सबंध में एक हो जाते हैं, हमारा प्रेम और सहानुभूति बढ़ेगा और इस अभ्यास को मजबूत बनाएगा।

मसीह के चेलों का प्रेम और रूचि उतना विस्तृत होना चाहिये जिनका यह संसार। जो केवल "मै और मेरा" के लिए जीते हैं, वे स्वर्ग से चूक जायेगें। परमेश्वर एक परिवार के रूप में हमें प्रेम उत्पन्न करने, और स्वंय के प्रति और और दूसरों के दुःख और पीड़ा के प्रति सवेंदनशील बनने लिए बुलाता है। जो निस्वार्थ आत्मा जो आपने अपने जीवन में पाया उसका प्रतिनिधित्व उन याजकों और लेवियों के द्वारा किया गया जिन्होंने दुर्भाग्यवश उसे नकार दिया। उन्होंने देखा कि उसे सहायता की जरूरत थी, परन्तु जान-बुझकर वैसा नहीं किया।

(11) परमेश्वर ने हम सब एक माप में हम सभी में क्या उंडेला दूसरों को आशीषित करने के लिए?

उस ने एक को पांच तोड़, दूसरे को दो, और तीसरे को एक; अर्थात हर एक को उस की सामर्थ के अनुसार दिया, और तब पर देश चला गया। (मत्ती 25:15)
बहुत सी नाश होती हुई आत्माओं को सच्चाई के मार्ग में लाना है। उड़ाऊ पुत्र अपने पिता के घर से बहुत दूर, भूख के कारण मर रहा है। वह हमारी दया का पात्र होना चाहिये। आप पूछते हैं: "परमेश्वर कैसे उनकी परवाह करता है जो अपने पापों में मर रहे हैं?" मै तुम्हे कलवरी की ओर लेकर जाता हूँ। परमेश्वर ने "जगत को अपना इकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनंत जीवन पाए"। यूहन्ना 3:16।मसीह के अतुल्य

प्रेम के बारे में विचार करें। जब हम पापी ही थे, मसीह हमें अंनत मृत्यु से बचाने के लिए मरा।

मसीह के महान प्रेम के बदले में, तुम्हे धन्यवाद की भेंट चढ़ानी है। स्वंय की भेट चढ़ानी है। तुम्हारा समय, वरदान, तुम्हारे तरीके—सभी खोये हुओं के लिए प्रेम में बहने चाहिये। यीशु ने आपके लिए उसके प्रेम को ग्रहण करना संभव किया और उसके साथ योगदान के द्वारा उसके सुगन्धित प्रभाव को भी। वह चाहता है अपना सब कुछ उसकी निस्वार्थ सेवा में लगा दें, कि आत्माओं के लिए उसके उद्धार की योजना सामर्थ के द्वारा पूरी हो। वह चाहता है की आप बिना भटके अपनी पूरी ऊर्जा उसके कार्य के लिए दें।

(12) जिन्होंने मसीह के प्रेम के कारण, दूसरों को आशीष देने के लिए अपने वरदानों का इस्तेमाल किया, वे मसीह से कौन-से अच्छे शब्दों को सुन पायेगें?

उसके स्वामी ने उस से कहा, धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा, मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा अपने स्वामी के आनन्द में सम्भागी हो। (मत्ती 25:33)

परमेश्वर हमे दिए हुए वरदानों को हमने कैसे प्रयोग किया उसका मूल्यांकन करेगा। उसने अपने स्वंय के लहू का दाम चुकाया और उसकी स्वंय का स्वंय-इन्कार और बलिदान और पीडाएं, प्रत्येक प्राण को सुरक्षित रखने के लिए परमेश्वर के साथ सहकर्मी। यदि सभी परमेश्वर के दिए गए वरदानों के प्रति लेखेपन की जिम्मेदारी को बुद्धिमानी से सोचे, परमेश्वर के प्रति यीशु मसीह के द्वारा कितनी आय आएगी! सबसे निम्न श्रेणी का समझे जाने वाला वरदान, नम्र सेवकाई मनों तक पहुचेगा और ह्रदयों को प्रभावित करेगा कि जिनके पास बड़े वरदान हैं स्पर्श न किये जाए।

अब हमारा कार्य करने के अच्छा समय है। व्यक्तिगत मुलाकात का अधिक मूल्य है। यीशु मसीह के प्रति प्रेम और मानवीय प्राण के प्रति प्रेम प्रत्येक परिवार में पहुचाया जाना चाहिये, हर जगह मिलना चाहिये ताकि उस तक कभी भी आपके लिए पहुचना संभव हो...याद रखें कि पवित्र आत्मा कार्य करने वाला है। परमेश्वर के लिए कार्य करने वाला मानवीय वाहक अकेला नही है।

धीरज से परिश्रम, कोमलता, दया, और प्रार्थना और प्रेम से परिश्रम कर। यीशु मसीह ने इस संसार को पाप के श्राप से बचाने के लिए, महान कार्य किये हमारी आँखों से देखने से ज्यादा। पवित्र आत्मा

उन माध्यमों की प्रतीक्षा करता है जिनके द्वारा वह कार्य कर सके। शैतान हमेशा विजयी न होगा। पवित्र आत्मा वैसे ही कलीसिया पर उडेला जाएगा जैसे ही पात्र प्राप्त करने के लिए तैयार हों।

मै इस बात को समझता हूँ जिन्हें महान कार्यों और दया के साथ व्यवहार किया जाने चाहिये ये वे हैं जो उसको पाने के सबसे कम योग्य हैं। मैं मसीह से मांगता हूँ मुझे अपनी दया और दिली प्रेम से भरे ताकि मै उसे उनके लोगों के सामने प्रकट करूं और जिनके मै सम्पर्क में आता हूँ।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मै प्रार्थना करता हूँ परमेश्वर का आत्मा मुझ में वास करे ताकि जब मै उसके कारण सताया जाऊं मै घृणा के बदले प्रेम और बुराई के बदले भलाई लौटा सकूं। मै उसी क्षमा का आत्मा मांगता हूँ जो मसीह ने क्रूस पर प्रदर्शित किया।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मै देखता हूँ कैसे छुटकारे का कार्य वरदान के साथ शुरु और अंत होता है और मेरे पास उस उद्धार के कार्य को आगे ले जाने का अवसर है। मैं मांगता हूँ परमेश्वर का आत्मा इस अवसर का विश्वासयोग्य भंडारी बनने के लिए सहायता करे दूसरों को आशीषित करने के लिए।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

यह मेरे हृदय की ईच्छा है पिता के ओठोसे उन धन्य शब्दों को सुनने की , **“धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा अपने स्वामी के आनन्द में सम्भागी हो”।और मै आनन्दित होकर उसके चरणों पर अपना मुकुट रखूंगा उसे वापस स्तुति देने के लिए!**

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

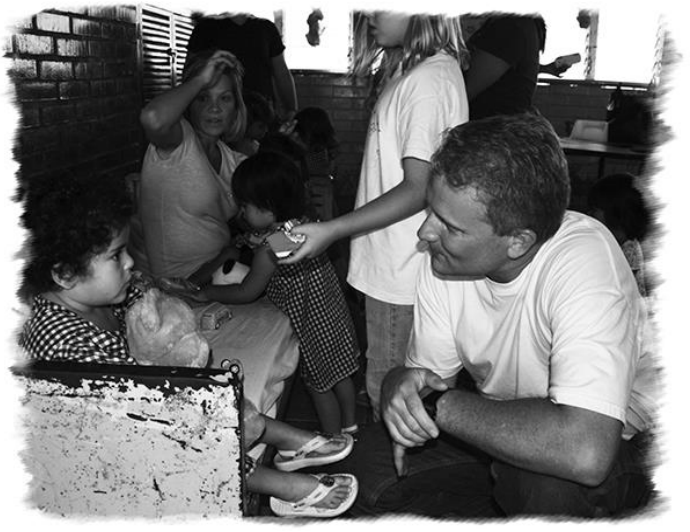

पाठ 19

प्रेम के प्रभाव

(1) "ज्योति में बने रहने" का क्या तात्पर्य है, और उसका क्या परिणाम है यदि हम इस ज्योति को अपने जीवन में लागू करें?

जो कोई अपने भाई से प्रेम रखता है, वह ज्योति में रहता है, और ठोकर नहीं खा सकता। (1 यूहन्ना 2:10)

वह ज्योति में है। परमेश्वर निरंतर ज्योति से घिरा हुआ है कि प्रकाश उसमें से चमकता है। सबसे उत्तम कार्य जो एक मसीही व्यक्ति कर सकता है वह है प्रकाश की किरणें जो परमेश्वर से निकलती हैं उसमें चलना। जैसे यात्री अंधेरे और अंजान रास्ते पर ज्योति के मार्गदर्शन में चलता है, उसी प्रकार एक परमेश्वर की संतान इस जीवन की यात्रा में परमेश्वर के ज्योति के पीछे चलेगा। (2 कुरन्थियो 4:6; इफिसियों 5:8)।

यदि हम ज्योति में चलें तो हम परमेश्वर के साथ चलते हैं, जिससे प्रकाश चमकता है, हम सहभागिता में चलते हैं न केवल उसके साथ वरन उन सभी के साथ जो उसका अनुसरण करते हैं। एक ही परमेश्वर की सेवा करना, उसी सत्य में विश्वास रखना, जीवन के मार्ग में उन्ही शिक्षाओं को मानना, हम एकता में चलने से चूक नहीं सकते। हमारे और हमारे भाइयों के मध्य थोड़ी सी भी गड़बड़ हमारे चालचलन का मूल्यांकन करने के लिए विवश करना चाहिये, इस बात को निश्चित करने के लिए कि हम ज्योतिर्मय जीवन से भटक तो नहीं रहे।

परमेश्वर प्रेम है (अध्याय 4:8), परमेश्वर ज्योति है (अध्याय 1:5), और जो परिस्थितियों के बावजूद भी अपने भाई से प्रेम करने में बना रहता है जो घृणा उत्पन्न कर सकता है, परमेश्वर के साथ जीवन जीता है, और इस प्रकार ज्योति में बना रहता है।

वह जो घृणा करता है। ऐसा मनुष्य प्रेम करने वाले व्यक्ति के बिलकुल विपरीत है (पद 10)। बने रहने, या परमेश्वर की ज्योति में, बने रहने की अपेक्षा वह आत्मिक अन्धकार में बना रहता है।

(2) यदि हम दूसरों से मन से प्रेम करें उसके बावजूद भी कि वे कैसे हम से व्यवहार करते हैं, यह उनके साथ हमारे सबंध में किस बात को पूर्ण करेगा?

और सब में श्रेष्ठ बात यह है कि एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो; क्योंकि प्रेम अनेक पापों को ढांप देता है। (1 पतरस 4:8)

वह प्रेम को लम्बे समय तक दयालु और बना रहता है वह न क्षमा किये जाने वाले पाप में अविवेक को बढ़ावा नहीं देता, न ही वह दूसरों की गलतियों को उजागर करता है। पवित्रशास्त्र स्पष्टता से हमें बताता है कि गलत व्यक्ति के साथ धीरज और समझदारी के साथ व्यवहार किया जाना चाहिये। यदि सही कार्यप्रणाली अपनाई जाये, उस प्रकार हट्ठी मन को भी परमेश्वर के लिए जीता जा सकता है। मसीह का प्रेम पापों के ढेर को भी ढांप देता है। उसका अनुग्रह कभी भी किसी के पाप को उजागर करने में अगुवाई नहीं करता जब तक यह सकारात्मक रूप से आवश्यक न हो।

(3) जब हम अपने सम्पूर्ण हृदय, मन और प्राण से सच में परमेश्वर से प्रेम करते *गोला लगायें* हैं, तब हम अपने पड़ोसियों से कैसे प्रेम करने पायेंगें?

और दूसरी यह है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखनाइस से बड़ी और कोई आज्ञा नहीं। : (मरकुस 12:31)

यह समझना सबसे घातक भ्रांति है कि एक मनुष्य अपने भाइयों से मसीह के समान प्रेम किये बिना, अंनत जीवन में विश्वास कर सकता है। जो परमेश्वर और अपने पड़ोसी से प्रेम करता है उसमें ज्योति और प्रेम नहीं। परमेश्वर उसमें है और उसके चारो ओर है। मसीही उन सभी से जो उनके चारों ओर है कीमती लोग समझकर उनसे प्रेम करते हैं जिनके लिए मसीह मरा। प्रेमहीन मसीही होने जैसा कुछ है ही नहीं; क्योंकी "परमेश्वर प्रेम है," और "इसी से हम

जानते हैं कि हम उसे जानते हैं, यदि हम उसकी आज्ञाओं को मानें। वह जो कहता है, मै उसे जानता हूँ, और उसकी आज्ञायें नहीं मानता, वह झूठा है, और उसमें सत्य नहीं"...यह मेरी आज्ञा है कि, तुम एक-दूसरे से प्रेम करो, जैसे मैंने तुमसे प्रेम किया"। यही फल परमेश्वर को वापस दिया जान चाहिये।

(4) परमेश्वर के व्यवस्था के प्रेम और स्वतन्त्रता के सौन्दर्य को देखने के बाद, एक मसीही को क्या करना है जो उसके चरित्र में आशीष और बल लेकर आएगा?

पर जो व्यक्ति स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है, वह अपने काम में इसलिये आशीष पाएगा कि सुनकर नहीं, पर वैसा ही काम करता है। (याकूब 1:25)

यदि मनुष्य अपनी बाजुओं से व्यायाम न करे, वे कमजोर हो जाएंगी और उसकी मासपेशियों को ताकत में कमी आ जाएगी। जब तक एक मसीही अपनी आत्मिक ताकतों का अभ्यास न करे, उसमें चरित्र को मजबूत बनाने की ताकत नहीं आती, न ही नैतिक ताकत। प्रेम बहुत ही कीमती पौधा है और उसे बढ़ने पर विकसित करना जरूरी है। प्रेम के कीमती पौधे के साथ कोमलता से व्यवहार होना जरूरी है (अभ्यास), और यह मजबूत और फलदायक बनेगा, सम्पूर्ण चरित्र को अभिव्यक्त करेगा। मसीह समान स्वभाव कठोर और स्वार्थी न होगा और उनके मनों को कष्ट न देगा जो शैतान के द्वारा परीक्षा से होकर गुजरते हैं। यह परीक्षा से होकर गुजरने वालों के मनो तक जाएगा और सोने के समान उन्हें निखरेगा और सारे खोट को दूर कर देगा।

यही अभ्यास परमेश्वर ने सभी के लिए रखा है। मसीह की इस पाठशाला में सभी सीख सकते हैं, गुरु और शिष्य दोनों, धीरजवन्त, भले और उदार बनने के लिए। आपको सम्पूर्ण विश्वास के साथ उत्सुक प्रार्थनाओं के द्वारा परमेश्वर को खोजना होगा, और परमेश्वर का बनानेवाला हाथ आपके चरित्र को अपने स्वरूप को बदल देगा।

इस बात का ध्यान रखें कि हम उन आत्माओं के विषय में बात कर रहे हैं जिन्हें यीशु ने असीमित दाम चुका कर खरीदा। अरे पाप करने वाले कहो, परमेश्वर तुम से प्रेम करता है, वह तुम्हारे पापों के लिए मरा। उनके लिए रोओं, उनके साथ प्रार्थना करो। उनके साथ आंसू बहाओ परन्तु उन पर क्रोधित न हों। वे मसीह की खरीदी हुई सम्पति हैं। प्रत्येक व्यक्ति उस चरित्र की खोज में रहे जो अपने कार्यों के द्वारा प्रेम प्रकट करे। "पर जो कोई इन छोटों में से जो मुझ

पर विश्वास करते हैं एक को ठोकर खिलाए, उसके लिये भला होता, कि बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता, और वह गहिरे समुद्र में डुबाया जाता"। दिन प्रतिदिन न जीना बेहतर होता इसकी अपेक्षा की परमेश्वर के उस प्रेम का प्रकटीकरण के द्वारा जीना जो उसने, अपने चरित्र के द्वारा दिखाया और जो उसके बच्चों के साथ जुड़ा हुआ है। यीशु ने कहा, "एक दूसरे से प्रेम करों, जैसे मैंने तुमसे प्रेम किया"। हम एक कठोर, भावनाओं को न महसूस करने वाले, भलाई न करने वाले संसार में रहते हैं। शैतान और उसका दल हर उस योजना को बना रहा है उन आत्माओं को प्रलोभन देने के लिए जो जिनके लिए मसीह ने अपना कीमती जीवन दिया। प्रत्येक व्यक्ति जो सच में परमेश्वर में प्रेम करता है,वह उन लोगों से भी प्रेम करेगा जिनके लिए मसीह मरा।

(5) जब हम मसीह समान प्रेम के साथ, दूसरों को दयालुता दिखाते हैं, तो उसका क्या परिणाम निकलता है?

दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगालोग पूरा नाप दबा : दबाकर और हिला हिलाकर और उभरताहुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा॥ (लूका 6:38)

हमें पुरस्कार के बारे में नहीं सोचना, परन्तु सेवा के विषय में; फिर भी जो दयालुता इस आत्मा में दिखाई जाती है उसका प्रतिफल कभी नहीं चूकता। "तुम्हारा पिता जो तुम्हे गुप्त में देखता है वह तुम्हे प्रकट में प्रतिफल देगा"। जबकि यह बात सच है कि परमेश्वर स्वंय ही हमारा प्रतिफल है, जो प्रत्येक को गले लगाता है, मनुष्य उसको ग्रहण करता और आनन्दित होता है तभी जब उसका चरित्र उसके साथ मिल जाता है। केवल एक समान ही समान की प्रशंसा कर सकता है। जब हम अपने आप को मानवता की सेवा करने के लिए देते हैं वह स्वंय को हमे देता है।

कोई भी अपने हृदय और जीवन में परमेश्वर की बहने वाली नदी को दूसरों में बहने के लिए नहीं रोक सकता, बिना उस महान प्रतिफल को प्राप्त किये। पहाड़ी मैदान और समतल मार्ग जो पहाड़ों में नदियों को समुद्र तक बहने का रास्ता बनाते हैं कभी भी नुकसान नहीं भुगतते। जो भी वे देते हैं उसका उन्हें सौ गुना वापिस मिल जाता है। क्योंकी जो नदी गाती हुई जाती है वह अपने पीछे फलदायक वरदान को छोड़कर जाती है। उसके किनारे की घास ताज़ी घास होती है, पेड़ ज्यादा हरियाले होते हैं, और फूल अधिक हरे-भरे।

जब धरती गर्मी की धूप में भूरी और बेजान हो जाती है, तब एक हरियाली रेखा नदी के बहने को दिखाती है; और वे समतल मैदान जो पहाड़ों के लिए सुमद्रों के खजाने के लिए अपनी गोद खोलते हैं वे ताजगी और सुन्दरता से भर जाते हैं, ये इस बात की गवाही हैं कि कैसे परमेश्वर अपना अनुग्रह उन सभी तक बांटता है जो अपने आप को इस संसार में बहने के साधन बनने के लिए परमेश्वर को समर्पित करते हैं।

(6) छुड़ाने वाले के वरदान पाने वाले के रूप में, हमारा दूसरों के लिए क्या करना सौभाग्य और बुलाहट हैं?

जिस को जो वरदान मिला है, वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भण्डारियों की नाईं एक दूसरे की सेवा में लगाए। (1 पतरस 4:10)

जैसे छुड़ाने की योजना का कार्य शुरुवात और अंत होता है, उसी प्रकार उसे आगे ले जाया जाना चाहिये। वही बलिदान की आत्मा जिसने हमारा उद्धार खरीदा उन सभी के हृदयों में वास करेगा जो स्वर्गीय वरदानों के भागीदार बनते हैं। प्रेरित पतरस कहता है: "जैसे प्रत्येक मनुष्य ने वरदान पाया, वैसे ही दूसरों को बढायें, जैसे परमेश्वर के अनुग्रह के भले भंडारी"। यीशु ने अपने चेलों को भेजते समय यह कहा: सेंतमेत मिला है, सेंतमेत दो"। मसीह के क्रूस का सिद्धांत सभी विश्वास करने वालों को स्वंय की को इन्कार करने की आधीनता में लाता है, दूसरों को प्रकाशमय बनाने, और उनके रास्ते में प्रकाश को बढ़ाने वाले। यदि वे स्वर्ग से जुड़े हैं वे स्वर्गदूतों के साथ मिलकर कार्य में जुट जाएगें।

उसमें जो सम्पूर्ण तरीके से मसीह के साथ है उसमे कुछ भी स्वार्थी नहीं हो सकता। वह जो जीवित जल में से पिता है जो "उस सोते में से जिससे अंनत जीवन निकलता है"। उसमें मसीह का आत्मा ऐसे होगा जैसे मरुस्थल में वर्षा होना, जो सभी के जी में जी ले आता है, और जो नाश होने वाले हैं, उन्हें जीवन के सोते में से पीने के लिए उत्सुक बनाता है"। मसीह में भी यही परमेश्वर का आत्मा वास करता है, जिसने प्रेरित पौलुस को परिश्रम करने के लिए विवश किया। मैं यूनानियों और अन्यभाषियों का और बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों का कर्जदार हूं।" सो मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो, सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हूं"। "मुझ पर जो सब पवित्र लोगों में से छोटे से भी छोटा हूं, यह अनुग्रह हुआ, कि मैं अन्यजातियों को मसीह के अगम्य धन का सुसमाचार सुनाऊं"।

हमारे परमेश्वर ने कलीसिया को इसलिए रखा है ताकि हम उस परिपूर्णता और बहुतायत को प्रतिबिम्बित करें जो हम उसमें प्राप्त करते हैं। हम निरंतर उसकी बहुतायत को पाते हैं, और हम उसी को बांटने के द्वारा संसार के प्रति परमेश्वर की प्रेम और उपकारों का प्रतिनिधित्व करते हैं। जब पूरा स्वर्गदूतों को छुटकारे का कार्य करने के लिए भेजने में व्यस्त है, तब जीवते परमेश्वर की कलीसिया को भी मसीह के साथ सहकर्मी बनना चाहिये। हम उसके रहस्यमयी देह के सदस्य हैं। वह सिर है और देह के सभी अंगों को नियंत्रित करता है। मसीह स्वंय, अपनी असीमित दया में, मानवीय हृदयों में कार्य कर रहा है, उस आत्मिक परिवर्तन इतने आश्चर्यचकित तरीके से दिखाने में कि स्वर्गदूत भी आनंद के साथ देखते हैं। वही निस्वार्थ प्रेम जो स्वामी ने दिखाया वे उसके चेलों के जीवन और चरित्र में भी दिखता है। मसीह चाहता है कि मनुष्य इस संसार में उसके ईश्वरीय स्वभाव में भागीदार बने, उस प्रकार परमेश्वर की स्तुति के प्रति उसकी महिमा को ही न प्रकट करे, परन्तु इस संसार के अन्धकार को परमेश्वर के प्रकाश से ज्योतिर्मय करे। उसी प्रकार मसीह के शब्द पूर होगें, "तुम संसार की ज्योति हो"।

(7) जब, हृदय से, हमने छोटे से छोटे के प्रति भी प्रेम का व्यवहार किया, स्वर्ग की दृष्टि में तब हमने किसकी सेवा की?

तब राजा उन्हें उत्तर देगा; मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुम ने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया। (मत्ती 25:40)

प्रत्येक कार्य, न्याय, दया और परोपकारिता का प्रत्येक कार्य, स्वर्ग में गीत की ध्वनि सुनाता है। पिता अपने सिंहासन से उनकी संख्या और काम करने वालों को देखता है अपने कीमती खजानों के साथ। "और वे मेरे होगें, सेनाओ का यहोवा ये कहता है, मैं उन से ऐसी कोमलता करूंगा"। जरुरतमंद के प्रति किया गया प्रत्येक भलाई का के ऐसा है जैसे मसीह के लिए किया गया। जो कोई गरीब की सहायता करता है, या पीड़ित और कुचले हुओं के प्रति सहानुभूति दिखाता है, और अनाथ के साथ मित्रता करता है, वह स्वंय को और अधिक परमेश्वर की निकटता में लेकर आता है।

(8) दूसरों क प्रति हमारे अन्यायपूर्ण कामों की अपेक्षा, हम कौन से प्रेम के कामों द्वारा परखे जायेगें अंतिम न्याय के समय?

क्योंकि मैं भूखा था, और तुम ने मुझे खाने को दिया; मैं प्यासा था, और तुम ने मुझे पानी पिलाया, मैं पर देशी था, तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया। (मत्ती 25:35)

प्रार्थना, उपदेश, और बातचीत व्यर्थ फल है, जो अकसर बंधे होते हैं, परन्तु जो फल भले कार्यों के द्वारा प्रकट होते हैं, जरुरतमंदों, अनाथ, विधवा की देखभाल करने में वे सच्चे फल हैं, और प्राकृतिक रूप से एक अच्छे पेड़ में उगते हैं...जब ह्रदय निराशा और दुःख के बोझ से दबे ह्रदयों, के लिए प्रेम से भरता है, जब हाथ जरुरतमन्दो को सहायता के लिए आगे बढ़ते हैं, जब नंगों को कपड़े पहनाये जाते हैं, जब अजनबी को हमारे दिल में स्वागत करते हैं, स्वर्गदूत निकट आते हैं, और स्वर्ग में प्रतिउत्तर देने वाली तार जुड़ जाती है। प्रत्येक कार्य, प्रत्येक न्याय और दया और परोपकारिता का कार्य, स्वर्ग में मधुर संगीत की ध्वनि सुनाता है।

हमारा स्वर्गीय पिता हमे मार्ग में आशीषें प्रच्छन्न करता है, जो कुछ लोग भय के कारण नहीं छुएगें और उनके आनन्द को नहीं उठा पायेगें। स्वर्गदूत देखते हैं यदि हम अवसरों का हमारी क्षमता में भले काम करने के लिए इस्तेमाल करते हैं की नहीं-वे इस बात की प्रतीक्षा करते हैं कि हम दूसरों के साथ भलाई करेगें की नहीं, ताकि वह बदले में हमे आशीष दे सके। परमेश्वर ने स्वंय ही हमें भिन्न रखा है- कुछ को गरीब, कुछ को अमीर, कुछ को पीड़ित- ताकि सभी को चरित्र का विकास करने का अवसर मिले। गरीबों को इस प्रकार एक उद्देश्य के साथ अनुमति दी जाती है, ताकि हम परखे जाएँ, और जो हमारे ह्रदयों में है उसे विकसित कर सकें।

(9) महान न्याय के समय, कौन-सी माप करने वाली लाठी होगी जो इस बात को प्रकट करेगी क्या सच में हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं और स्वर्ग के लिए योग्य हैं?
मेरी आज्ञा यह है, कि जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। (यूहन्ना 15:12)

मनुष्य के प्रति प्रेम परमेश्वर के प्रेम का पृथ्वीय प्रकटीकरण है। इस प्रेम को प्रत्यारोपित करना बताता है, हम एक ही परिवार के बच्चे हैं, ताकि महिमा का राजा हमारे साथ एक हो। और जब उसके विदाई के शब्द सम्पूर्ण होते हैं,"एक-दूसरे से प्रेम करो, जैसे मैंने तुमसे प्रेम किया" (यूहन्ना 15:12); जब हम संसार से ऐसे प्रेम करते हैं जैसे संसार ने हमें किया, तब उसका कार्य हमारे लिया पूरा हो जाता है। हम स्वर्ग के लिए योग्य बन जाते हैं; क्योंकी हमारे दिलों में स्वर्ग है।

परमेश्वर भला है। वह दयावान और कोमल है। वह अपने सभी बच्चों को जानता है। वह हमारे सारे कार्यों को जानता है। वह जानता है किसको कितना श्रेय दिया जाए। क्या आप अपने श्रेय की सूची और दंड की सूची के बारे में भूलेगें नहीं, और परमेश्वर को उसका काम करने देगें? तुम्हे महिमा का मुकुट पहनाया जाएगा यदि तुम उसके दिए गए कार्य को करोगे।

(10) न्याय के दिन, वे कौन से महान शब्दों को सुन पाएगें जिन्होंने इस संसार में संसार के लोगों से ऐसा प्रेम किया जैसा मसीह ने उनसे किया?

तब राजा अपनी दाहिनी ओर वालों से कहेगा, हे मेरे पिता के धन्य लोगों, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है। (मत्ती 25:34)

जिन्होंने विश्वासयोग्यता से बिना बड़ाई या लाभ के लिए उत्साह के साथ उन कार्यों को किया, वे न्याय के दिन इन शब्दों को सुनेगें, "मेरे पिता के धन्य लोगों मेरे आओ, उस राज्य में प्रवेश करो जो इस सृष्टि की रचना से पहले तुम्हारे लिए तैयार किया गया है"। मसीह उनके कुशल भाषणों के लिए उनकी सराहना नहीं करेगा, न ही उस बौद्धिक सामर्थ जो उन्होंने दिखाई, या वो उदारता से दिया गया दान। ये उन छोटे कामों के लिए जिनको तुच्छ समझा जाता है उन्हें पुरस्कार दिया जाएगा। "तब वह कहेगा मै भूखा था, तुमने मुझे खाने को दिया," वह कहता हूं, कि तुम ने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया"।

जब परमेश्वर के सामने सारी बातों का मूल्यांकन किया जाएगा, तब सवाल यह नहीं होगा, तुमने क्या विश्वास किया, परन्तु तुमने क्या किया? क्या उन्होंने वचन को कर के दिखाया? क्या वे स्वंय के लिए जिये? या क्या उन्होंने दयालुता, प्रेम, परोपकारिता और दूसरों की भलाई की हित के लिए अभ्यास किया गया अपने हित की चिंता किये जाने की अपेक्षा, और स्वंय के इन्कार करने के द्वारा वे दूसरों को आशीष दें? यदि लेखा बोलता है यही उनका जीवन था, कि उनके चरित्र दयालुता, स्वंय का इन्कार, और परोपकारिता को दिखाते हैं, वे धन्य आशा और मसीह से मार्गदर्शन को प्राप्त करेगें, "धन्य है, "मेरे पिता के द्वारा धन्य, इस राज्य में आ जो जगत की सृष्टि से तेरे लिए तैयार किया गया"।

यह मेरी मन की ईच्छा है मै उस प्रकाश की किरणों में चलूं जो परमेश्वर से निकलती है और जो एक यात्री के साथ साथ अन्धकार से भरे और अनजाने रास्ते में उसके साथ चलती है।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मै जनता हूँ कि यह प्रेम ज्योति है और मै चाहता हूँ परमेश्वर का प्रेम मुझ में से प्रकाश का माध्यम बनकर बहे ताकि मै परमेश्वर के राज्य के लिए मसीह का सहकर्मी बनने पाऊं।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मै इस बात को समझ चुका हूँ प्रेम केवल एक भावना ही नहीं है बल्कि क्रिया है। मेरी ईच्छा है प्रेम की आत्मिक सामर्थ को अभ्यास करने की ताकि यह मेरे जीवन में ताकत बने और एक नदी के समान दूसरों में बहने पाए।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

मै समझता हूँ कि दूसरों के साथ प्रेम का अभ्यास न केवल एक बहने वाला सोता है वरन यह देने वाले की ओर वापस बहता है और आत्मिक बढ़ोतरी लाता है। मै इसे पाने की अभिलाषा करता हूँ।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत

यह मेरे दिल की ईच्छा है मै पिता से उन धन्य शब्दों को सुनुं "धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास मैं तुझे अपने स्वामी के आनन्द में सम्भागी बनाऊंगा"।

गोला लगायें: हाँ अनिर्णीत